पतझाड़

पतझाड़

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

PATJHAR

Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-87675-12-4
दाम: 251/- (भा.रु.)

छठम संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2014)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

प्रस्तुत कथा पुष्पमाल ओइ कथा प्रेमीकेँ समरपित जे कथ्य-कथन कथाक मर्मकेँ पकेड़ कथापान करैं छैथ...।

अघटमे खसल ओइ फूल सदृश कथाकेँ कथे-प्रेमी ने कोमल पंखुर पकेड़ जलगंगामे स्नान करा, पवित्र पग पहिरा देव सिर चढ़ै सदृश बनबै छैथ...।

ओइ मर्मभेदी शिकारीकेँ तहेदिल समरपित...।

कथा-सत्तैर

पाइक मोल/09
चोरूक्का झगड़ा/20
अपसोच/23
पतझाड़/26
झीसीक मजा/37
मति-गति/40
अपन सन मुँह/49
माघक घूर/74
खर्च/81
अखरा-दोखरा/83
पेटगनाह/85
बड़की माता/88
धरती-अकास/94
बकठाँइ/96
चैन-बेचैन/100
अलपुरिया बरी/104

पाइक मोल

हथिया नै बरसने बाड़ी-झाड़ीक काज अगते शुरू भऽ गेल। काल्हि कोजगरा छी। ओना, समय रौदियाह जकाँ भऽ गेल अछि। मुदा समैयोक तँ अपन गुण-धर्म होइ छइ।

चटाएल ओस रहितो जमीनमे ठण्ढ तँ पसरिये गेल अछि। भोरुका सुरूजक जे सोहनगरता एबा चाही से तँ आबिये गेल अछि। बाध-बोनमे भलेँ रौदी बुझि पड़ैए, मरहन्ने-मरहन्ना देखि पड़ैए मुदा बोन-झाड़क रूप तँ ओते नहियेँ बिगड़ल अछि। तहूमे जाड़क उसरन थोड़े छी जे पालाक पल्ला पड़ि ठिठुरल रहत, वरसातक ने उनाड़ी छी! सरलो भुन्ना तँ रहुक दुना! लत्तियो-फत्ती आकि झाड़ो-झूड़ जे अगते अर्थात् वरसातसँ पहिनहि पुरना वस्त्र बदैल नव वस्त्रक संग नव कलशक नव मुड़ीमे नव फूलक संग नव फलोक जोरन तँ जोरनाइये गेल अछि।

नव सुरूजक संग रविकान्त नव दिनक नव काज दिस नजैर उठौलैन तँ देखि पड़लैन जे दारीमक बाड़ी जाएब जरूरी अछि। केते रंगक कीड़ी-मकौड़ी, उपद्रव शुरू कऽ देने हएत। बिना केम्हरो तकने ओ दारीमक बाड़ी विदा भेला। बाड़ीक मुहाँनीबला गाछपर नजैर पड़िते दीपकक चिट्ठी मोन पड़लैन। मोन पड़लैन दुर्गापूजाक छुट्टीमे आएल सिनेहकान्त। कलशथापने दिन चिट्ठी देने छल। जइमे लिखल छेलै जे 'बीसम दिन परीक्षाक फारम भराएत, कौलेजक पैछलो बाँकी जे अछि सेहो लागत।' नाओं लिखौला पछाइत एको-पाइ देनौं ने छेलिऐ।

दारीमक बाड़ीसँ चोटे घुमि रविकान्त दरबज्जाक चारक ओलतीक बत्तीमे खोंसल चिट्ठी निकालि दोहरा कऽ पढ़लैन। परीक्षाक फारम भराएत तइले पाइक ओरियान करब छेलैन। ईहो लिखल छेलैन जे दीपक अपने गाम आबि मात्रिकक कोजगरो पूरि लेत आ तेसर दिन आपसो भऽ जाएत। ओना, केते पाइक ओरियान करब अछि से स्पष्ट नहियेँ अछि मुदा बेटाक पढ़ाइक अन्तिम घड़ीमे किछु बजलो तँ नहियेँ जा सकैए। तहूमे कौलेजक आखिरी परीक्षा छिऐ। अन्तिम परीक्षा मनमे अबिते रविकान्तकेँ खुशी उपकलैन-

बेटाक स्नातक भेने परिवारक ऐगला सीढ़ीक एकटा पजेबा जोड़ाएत। एक पजेबा जोड़ेने एक सीढ़ीक रूप बनि जाइए। तेतबे किए, ई की नै भेल जे साधारण पढ़ल-लिखल बाप, बेटाकेँ स्नातक बना दुनियाँक बीच ठाढ़ सेहो करत। स्नातक तँ स्नातक होइए। जेकरा राज-काज चलबैक बुधि भऽ जाइ छइ। खाएर जे हौउ, जेहेन मन पकैड़ मेहनत करत तेहेन बनत। अपन जे कर्मक संकल्प दुनियाँक संग छल से तँ अबस्से पूर्ति हएत। जिनगीमे सभकेँ अपन-अपन दायित्व होइ छै, तेकरा जे जेहेन संकल्पक संग पूर्ति करैए से तेहेन बनि ठाढ़ होइए।

कोजगरा दिनक सुरूज उठि कऽ एक बाँस ऊपर भेला, करीब आठ बजैत। दीपक रेलबे स्टेशनसँ गामपर पहुँचल। जहिना दीपकक मनमे तेल-बातीक जोगाड़क विचार मर्ड़ाइत तहिना रविकान्तोक मनमे ओही तेल-बातीक चिड़ै चकभौर लैत रहैन। दीपककेँ देखिते रविकान्त बजला-

“बाउ, तोरे बात मनमे घुरि-फीरि रहल अछि बहुत दिन जीबह।”

ओना, पिताक असीरवादसँ दीपकक मनमे मिसियो भरि हलचल नै उठल, कारणो स्पष्टे अछि। शब्दवाण अकास मार्गसँ छोड़ल जा सकैए मुदा कर्मवाण तँ धरतीए पकैड़ चलत। पएर छुबि प्रणाम करब तँ बिना स्पर्श भेने नहियेँ भऽ सकत। ओना, दुनू हाथ जोड़ि शब्दवाणो चलैत

अछि मुदा ओ अपना सीमामे। पिता-पुत्रक बीचक जे सीमा होइ छै ओ बिना स्पर्श भेने जँ हएत तँ हाथक आँगुरक अधिकारक हनन हएत। आँगुरोक अपन कर्मभूमि छै जे रणभूमिसँ रंगभूमि धरि पहुँचबैत अछि।

लग अबिते दीपक पिता-रविकान्तकेँ गोड़ लागि, बाजल-

“बाबू, काल्हि चलि जाएब। पाँचे दिन फारम भरैक बाँकी अछि संगे..?”

पीठपर हाथ दैत रविकान्त बजला-

“एना किए अदहे मुहेँ बजलह। जे खगता तोरा हेतह, ओकर पूर्ति जहाँ धरि सम्भव हएत से करनाइ अपन संकल्पक अंग बुझै छी। मुदा हम तँ पीठेपर ने रहबह, असल काज तँ तोरे हाथ रहतह। तइले जे सम्भव हएत तइमे पाछू नै हएब, तेतबे आश ने हमर करबह। अच्छा ई कहऽ जे केना-केना कार्यक्रम बना आएल छह?”

दीपक-

“मामाकेँ तँ अपन परिवारमे काज नहियेँ छी, वएह हकार देलैन, तँए हुनका रातिमे पूरि काल्हि भोरे गाम चलि आएब, भरि दिन गाममे रहब, परसुका गाड़ी पकैड़ लेब। तीने मास परीक्षाक अछि, अखन एमहर-ओमहरमे समय गामाएब नीक नै हएत?”

दीपकक बात सुनि रविकान्त बजला-

“भने एक दिन पहिने आबि गेलह। किछु पाइ तँ अपना हाथमे अछि मुदा तोरा केते चाही, से तँ खोलि कऽ कहबह, तखने ने आरो ओरियान करब।”

पिताक प्रश्न सुनि दीपक ठमैक गेल। ठमकैक कारण भेल जे फारम भरैक हिसाब तँ बुझल अछि मुदा किछु नव पोथी कीनैक ने ठेकान अछि आ ने सबहक दामे बुझल अछि। अखन धरि तँ एके सेट किताबसँ काज चलेलौं, मुदा परीक्षा तँ परीक्षा होइ छइ। तइले सीमित दायरासँ बाहर हुअ

पड़ै छइ। मुदा लगले मनमे संतोख उठि गेलै, बाजल-

“तीन मास परीक्षामे शेष अछि कोर्सक जे एक लेखकक पोथी अछि ओ तँ ऐछे तइसँ बेसी पढ़ले केते जा सकैए, तैयो किछु कीनब।”

नव पोथीक नाओं सुनि रविकान्तक मनमे उठलैन, केहेन हएत जे भोजक बेर कुमहर रोपल जाएत। मुदा धड़फड़मे किछु बाजबो उचित नै हएत। जे काज जे करैए वएह ने ओकर भूतसँ भविस धरि गौर करत। दोसर तँ अनाड़ीए भेल। अनाड़ियो तँ एके रंगक नहियेँ होइत। कियो बुझल-गमल अनाड़ी तँ कियो बिनु बुझल-गमल हेबे करैत। ओना, अपनो साक्षर छी मुदा स्नातक धरि तँ नै जनै छी। तँए बुझल-गमल नै बिनु बुझल-गमल भेलौं। ओह! अनेरे मनकेँ औनाबै छी। दीपक कियो आन छी, किए ने सभ बात पुछिऐ कऽ बुझि ली। बजला-

“बौआ, हम तँ अपनो केलौं आ अनको देखैत एलिऐ जे पढ़ाइ शुरू होइते समयमे सब किताप-काँपी कीनि लइ छेलौं आ भरि साल पढ़ि कऽ परीक्षा दइ छेलौं, तूँ किए..?”

पिताक पश्न सुनि दीपककेँ दुख नै भेल एक विचार मनमे उठल। विचार ई जे कोर्समे किछु पोथी शासन पद्धतिक अनुसार चलैत आ किछु अलग। विषय एक रहितो भिन्न-भिन्न लेखकक विचारधारामे किछु दूरी रहने विषयक पोथीमे सेहो किछु दूरी बनि जाइ छै, तैसंग शिक्षकोक बीच किछु-ने-किछु रूपमे पढ़ेबा समय अपन विचार प्रस्फुटित होइते रहै छै, मुदा पढ़निहार तँ कोरा कागत रहैए जइसँ मन-मस्तिष्कमे किछु-ने-किछु भिन्नता आबिऐ जाइत अछि, तहूमे विचारक भिन्नता काँपी जाँच करबा समय सेहो मुड़ियारी दइते रहैए जइसँ किछु प्रभाव पड़िते छै, तँए आनो-आन लेखकक पोथी परीक्षा लेल जरूरी भऽ जाइए।

विद्यार्थी तँ निष्पक्ष ढंग यएह ने कऽ सकैए जे फुटा-फुटा विचारक व्याख्या करत। तइले आनो-आन पोथी पढ़ब ऐछे तखन ने परीक्षाक

तैयारी भेल। किए ने पितोजीकेँ अपन विचार सुना दिऐन। बाजल-

“बाबूजी, किछु आनो-आन लेखकक पोथी परीक्षामे देखब जरूरी बुझि पड़ैए, पोथी तँ अनेको लेखकक अनेको छै मुदा जे चलैनमे अछि तेकरा देखि लेब तँ जरूरीए अछि किने, तँए किछु नव पोथी कीनब अछि।”

दीपकक बात रविकान्त बुझि गेला। मुदा कम पाइबलाकेँ अधिक पाइक खर्चबला काज गरूगर भइये जाइ छै, जे रविकान्तोकेँ भेलैन। मुदा विचारोक तँ अपन समुद्र छै जइमे रंग-रंगक हिलकोर उठिते रहै छइ। मनमे दोसर विचार उठि गेलैन। उठि गेलैन ई जे तखन ओकरे इमान बुझतै जे भाँग पढ़ै छी आकि बथुआ। अपन काज एतबे भेल जे जे खर्च कहत से देबइ। कियो व्यायाम आकि मनोरंजनक विन्यासकेँ जीविके बुझि लेत तेकर हम की करबै। समगम होइत रविकान्त बजला-

“बौआ, फुटा-फुटा कऽ सभ काजक खर्च बुझा दएह, तइ हिसाबसँ पाइक ओरियान कऽ देबह। ई नै जे झाँपल-तोपल तहूँ बाजह आ हमहूँ दिअ। तइसँ काजमे बेवधान हेतह। घटी-बढ़ी भऽ जेतह। आगूसँ जे काज करबह ओ बढ़ि जेतह आ पैछला छुटि जेतह। जइसँ काजमे खाँच औतह। काजेक खाँच जिनगीकेँ खँचाह बनबैए।”

पिताक प्रश्न सुनि दीपक असमनजसमे पड़ि गेल जे नापल-जोखल काज अछि ओकरा तँ स्पष्ट बाजि सकै छी मुदा बिनु नपलो-जोखल काज तँ अछिए। तखन? तखन की, दू श्रेणीक काज बना बाजल-

“कौलेजमे तीन हजार लगत, महिनाक खर्चा बुझले अछि तखन नव पोथी लेल अन्दाजेसँ काज चला लेब।”

दीपकक बात रविकान्तकेँ जँचलैन। बजला- “छह-सात हजारसँ काज चलि जेबा चाही?”

उत्साहित होइत दीपक बाजल- “जँ कनी-मनी घटबे करत तँ

मोबाइलसँ कहि देब अहूँ ए.टी.एम.मे पठा देब।”

सोझ-साझ रस्ता देखि रविकान्तक मनमे काजक अँटकार तँ भऽ गेलैन मुदा हाथमे केते अछि आ केते ओरियान करए पड़त से अँटकार लगबैक विचार उठलैन।

मने-मन रविकान्त खर्चक अँटकार लगैबते रहैथ आकि पत्नी-चन्द्रावती आबि झटैक बजली-

“रस्ता-पेराक थाकल-ठहियाएल बच्चा आएल अछि पहिने किछु मुँहमे कहाँसँ दैत तँ अपन रमा-कठोला सुनबए लगलिऐ। बातो केतौ पड़ाएल जाइ छेलै जे पहिने सएह पसारि देलिऐ।”

चन्द्रावतीक विचारक मोड़ कनी आगूए रहैन तैबीच दीपक निहुरि कऽ पएर छुबि गोड़ लगलकैन। पैछला बातकेँ ब्रेक लेल साइकिल जकाँ एकाएक रोकि, असीरवादक प्रमुखता बुझैत बजली-

“अखन हाथी सन दुनू परानी जीविते छी।”

माइक बात जहिना दीपककेँ उत्साह भरलक तहिना रविकान्तक उत्साहकेँ दबलक। दबलक ई जे जइ काजसँ दीपक आशा बान्हि आएल अछि ओकरा आगू केना जीवित राखल जाए ओ बिना बुझने केना हएत? बुझल रहत तखन ने अखनेसँ लागि ओकरा पुरबैक परियास करब आकि गुमे-गुम रहि, जेबाकाल बाजत जे एते पाइक काज अछि। कोनो कि अपना हाथमे कागतक रुपैआ छपैक मशीन अछि जे बटम दाबि देबै आ हरहरा कऽ खसत। अपना हाथक तँ ओहन मशीन अछि जे काज रूपमे जन्म लऽ समैयक संग चलैत समयानुसार दइत। मुदा ई तँ भेल बुझनिहार लेल, कम बुझनिहार आकि नै बुझनिहार लेल तँ दोसर उपए अछि। बेटा सोझहामे जँ ओ बजली तँ उचिते बजली, अपन अधिकारक प्रयोग केली।

अपन अधिकार ई जे जन्मेसँ बच्चाक खेबा-पीबाक माने पेट-भरैक भार हुनके ऊपर छेलैन, जइसँ भूख अबै-जाइक बाट बुझै छथिन। ठीके

कहलैन जे मुजफ्फरपुरसँ अबैमे चारि-पाँच घन्टाक समय लगले हेतै, तहूमे चुल्हिक ओरियानक आदति लगले छैन। आदति ई जे भानसक बेर उनहल जाइए घरमे नून नै अछि आ अहाँ अपना तालमे बेताल छी। खाएर जे हौउ, मुदा ई बात दाबियो कऽ राखब परिवार लेल नीक नहियेँ भेल। बजला-

"दीपक केतए आएल, किए आएल से जँ अबिते नै पुछि लेतिऐ, तखन समयपर ओकर ओरियान केना होएत?"

पतिक बात सुनि चन्द्रावती ठमकली। मोन पड़लैन पाबैनक उपास। दीपककेँ खाइमे कनी अबेर भेल हेतै, मुदा अपनो तँ पाबैनक व्रत भरि-भरि दिन सहि कऽ करिते छी। कहाँ पराण छुटि जाइए। तहूमे की दीपकक रस्ता-बाटक दोकान-दौरी आकि इनार-कल बन्न भऽ गेल छेलइ। रस्ता-बाटमे तँ लोककेँ अपने आशापर ने चलए पड़ै छइ। कियो जे केतौ जाइए तैठाम जँ संगबे रहल तँ तेकर आशा भेल जँ सेहो नै रहल तँ अपने आशा करि कऽ ने चलए पड़ै छइ। एना मुँह झारि बेटा आगू बाजब नीक नै भेल।

चन्द्रावतीक मनक ग्लानि रविकान्त बुझि गेला। बुझि एना गेला जे मुँहक ठोर सिकुड़ए लगलैन। मुदा बेटा सोझहामे किछु अनर्गल बाजबो उचित नै बुझि, बात बदलैत बजला-

"पाँच हजार रुपैआ जे रखैले देने रहौं, से तँ हेबे करत किने? बच्चाकेँ हजार-पान साए आगर करि कऽ नै देबै तँ आनठाम केकर मुँह ताकत?"

रुपैआक हिसाब सुनि चन्द्रावती सकपकेली। अखन धरि जे खर्च पतिकेँ कहै छेलखिन, रविकान्त घरक खर्च बुझि टोक-चाल नै करै छेलखिन मुदा आइ! बेटाक पढ़ैक ओरियान करब अछि, जहिना पाइ-पाइक खर्च हएत तहिना ने पाइ-पाइक ओरियानो करब अछि। बजली-

“एक हजार तँ खर्च भऽ गेल?”

पत्नीक खर्च सुनि रविकान्त ठमैक गेला। मनमे उठलैन जे जहिये मातृनवमी-पितृपक्ष (आसीनक पहिल परव) चढ़ल तही दिन बजारसँ महिनो दिनक सभ खर्चक ओरियान कइए देने छेलिऐन, तखन खर्च केतए कऽ लेलैन। पचास रुपैआ फुटा कऽ दसमी मेला देखैले देनौं रहिऐन। तखन? बजला-

“कथीमे खर्च भऽ गेल?”

उत्साहित होइत चन्द्रावती बजली-

“दुर्गा-पूजाक नवमीए दिनक मेलामे एक हजार उठि गेल।”

पत्नीक बात सुनि रविकान्त बजला-

“अखन छठि पाबैनकेँ बीसो दिनसँ ऊपरे अछि तखन एते अगुरवार ई सब किए कीनि लेलौं? अच्छा ई कहू जे की सभ कीनलौं?”

चन्द्रावती-

“चारिटा कोनियाँ, सूप, डगरी, छिट्टा, कूर, हाथी इत्यादि ने कीनि लेलौं।”

मने-मन रविकान्त हिसाब जोड़ि अँटकाइर लेलैन, मुदा अनेको प्रश्न एक संग उठि गेलैन। सोझहामे बेटा-दीपककेँ देखि बाजब उचित बुझलैन। बजला-

“एक तँ कोनियाँक काज सूपेसँ होइ छै तहूमे एकटाकेँ मानलो जा सकैए, ऐ जुगमे माटिक हाथीक कोन काज छै आ आब केतए घैलक काज चलैए जे अनेरे पाइकेँ पानिमे फेक देलिऐ?”

पानिमे फेकब सुनि चन्द्रावती उमैक बजली-

“पुरुख-पात्र अहिना पाबैनक वस्तुकेँ दुसै छै!”

पत्नीक बात सुनि बेसी तामस करब उचित नै बुझि रविकान्त मने-

मन विचारए लगला जे काजो तेहेन अछि जे छोड़ब बेबकूफी हएत मुदा जँ अहिना मौका पाबि होइत रहल तखन जिनगीक गाड़ी केना ससरत?

लगले दोसर प्रश्न मनकेँ घेर कऽ पकैड़ लेलकैन। घेर कऽ ई पकड़लकैन जे एक परिवार एक पुरुख-नारीक बीच ठाढ़ अछि तैबीच दू रंगक विचार किए चलि रहल अछि। मुदा जे धारा चलि रहल अछि ओहो तँ बरखा पानिक धारा नहि, स्थायी धारक धारा जकाँ अछि! मन ठमैक गेलैन। तीनू गोरे दीपक, चन्द्रावती आ रविकान्त तीनू तीन दिस तकैत, मुदा मुँहक बोल सबहक हराएल। रविकान्तक मन औनाइत जे, जे काज सालतनी छी अदौसँ होइत आएल अछि ओ काज जिनगीक गाड़ीकेँ रोकि देत, ई केहेन भेल?

जिनगी चलबैक काज जिनगीए रोकि देत तखन आगू मुहेँ गाड़ी ससरत केना? लगले आगूमे ठाढ़ दीपकपर नजैर पहुँचते मनमे उठलैन, काल्हिए भरि समय अछि तैबीच दोसर काजमे समय गमाएब उचित नहि। जिनगीक बहुत पैघ काजक परीक्षा छी। काल्हि दिन बेटाक मुहेँ सुनब केते ग्लानिक बात हएत जे कहत पढ़ैक खर्च पिताजी नै जुमा सकला तँए आगू बढ़ैमे बाधा भेल। ओना, जेकर पिता समयसँ पहिने मरि जाइ छथिन, ओ केना पढ़ि पौत। मुदा सेहो तँ नहियेँ अछि। जिबठ बान्हि पढ़निहार तँ पढ़िये लैत अछि। खाएर जे हौउ, जैठाम एहेन परिस्थिति बनैए तैठामक प्रश्न ई भेल। ऐठाम तँ से नै अछि। अपन मनक अभिलाषा अछि जे बेटाकेँ स्नातक बना दुनियाँक बीच ठाढ़ करी। सघन बोनमे हराएल जकाँ माइक मुँह देखि दीपक बाजल-

“बाबूजी, आइ जेते खर्चक पाबैन भऽ गेल अछि, ओहेन खर्चक पाबैन पूर्वज केना बनौलैन जे परिवार-लोक तंग होइत रहैए।”

दीपकक प्रश्नक गंभीरता रविकान्तक मनकेँ ओहिना घकेल देलकैन जहिना कियो घारक महारपर सँ बहैत बीच धारमे धकेल दइ छइ। मुदा

अपन गुरुतर भार देखि रविकान्त बजला-

"बौआ, तोहर प्रश्न ओहेन छह जेहेन मनुक्ख आ मनुक्खक छापल कागतक चित्र हुअ। अदौसँ रहल जे आजुक श्रमक फल आजुक जिनगीकेँ केते फलित केलक। तँए किछु बँचा कऽ काल्हि लेल राखब अनुचित भेल, एहेनठाम पाबैन-तिहार केना हएत? मुदा... ।"

विस्मित होइत पिताकेँ देखि दीपक बाजल-

"मुदा की?"

एक दिस काज आ दोसर दिस आराम कुर्सी, तैबीच जहिना कियो ठकुआ जाइत तहिना रविकान्त ठकुआ गेला। बेटाक जिज्ञासा भरल प्रश्न स्वाति नक्षत्रक अमृत बून जकाँ भऽ गेलैन, जइसँ एक दिस मोती बनैत तँ दोसर दिस बिष सेहो बनैत अछि। ओना, केकरो प्रश्नक उत्तर पाबि जे संतोख होइ छै ओ वएह उत्तर लदलासँ कम होइ छै, तँए एक दिस दीपककेँ बुझा देब रविकान्त जरूरी बुझैथ तँ दोसर दिस जिनगीक एक सीढ़ी टपैक काज देखैथ। दुनूमे सँ कोनो छोड़बैबला नहि। कारण, जँ समयपर पाइक ओरियान नै हएत, फारम नै भराएत तँ परीक्षा केना देत? तहूमे अपना हाथमे पाइ कम अछि कोनो ब्यौंत करए पड़त। अनका हाथक काजक ठेकाने केते। मुदा दीपको तँ परीक्षामे बैसैबला विद्यार्थी छी, अखन जेते ओकरा बरावरीकेँ भरल जेतै, तेते ने परीक्षामे असान हेतइ। ताल-मेल बैसबैत रविकान्त बजला-

"बौआ, किसानी जिनगीमे किसानसँ लऽ कऽ काज केनिहार धरि अगहनमे धान घर अनैए। चाहे खेतक उपजा होइ आकि बोइन आकि आरो-आरो उपए, जेना-जेना अगहनक पछाइत समय आगू बढ़ैए तेना-तेना खर्च होइत जाइ छै, माने घटबी होइ छइ। एक दिस, भदबारिमे जे भदइ-धान आकि मरूआ होइ छै ओकरा पाबैन-तिहारमे अशुद्ध मानल जाइए। दोसर दिस आसीनक पनरह दिन खएन-पीअनि होइए आ ऐगला

पनरह दिन दुर्गापूजासँ कोजगरा धरि होइए। तहिना कोजगरा प्रात जे कातिक चढ़ैए, ओकरा धर्ममास मानि अनेको तीर्थ-व्रत आ पाबैन-तिहार होइए। एहेन स्थितिमे की कएल जाए..? मुदा अखन बेसी कहैक समय नै अछि। केकरो हाथे बच्छा बेच पहिने तोहर काज आगू बढ़ा देबह पछाइत कहियो निचेनसँ आगूक बात कहबह।”

पतिक बात सुनिते चन्द्रावतीकेँ जेना कोजगराक पुनोचान आ दीपककेँ दिवालीक ज्योति जगि गेलैन।



शब्द संख्या: 2412, तिथि: 22 दिसम्बर 2013

चोरूक्का झगड़ा

आने दिन जकाँ भिनसुरका चाह पीऐले शिवशंकर, किसुनदेव, सिंहेश्वर, राधाकान्त आ मनोहर एक्केबेर चाहक दोकानपर पहुँचला। पाँचोक जेहने मिलान चाह दोकानक तेहने मिलान बात-विचारक आ तेहने जिनगीक काजोक। ओना, पाँचो पाँच टोलक, पाँच जातिक मुदा चाहक दोकानक एक्के निअम बनौने जे अपने-अपने चाहक खरचे अपनो पीब आ समाजोकेँ पिआएब। भोज हेतइ। हिसाबो सोझराएले, पाँचो गोरे छह-छह दिनक भोजक खर्चाक हिस्सा तीस गिलास चाहक दाम एक्केठाम जमा करैत रहैथ। जइसँ तीसो गिलासक दाममे अपनो तीसो दिन पीबैत आ चारू संगियोंकेँ पीअबैत। ऐ बीचमे एकटा शंका नै करब जे के कहिया पीऔलैन। बोही-खताबला दोकानदार पाहि लगा कऽ नाम बजैत जे आइ फल्लाँक भोज छिऐन।

ओना, चाहक दोकान बजारक नै गामक चौक परहक। बजारक दोकानमे सिरिफ कारोबारक गप-सप्प चलैत मुदा गामक चौक अन्तर्राष्ट्रीय होइत। जैठाम ससैयो रंगक गप चलैत। केतो चीलमक चौखड़ी तँ केतौ ताड़ी-दारूक, केतो खेती-पथारीक तँ केतो शास्त्र-पुराणक। केतो पार्लियामेन्ट तँ केतो युनिवरसिटीक।

तीन दिनसँ गुलेतिया दुनू परानी सौंसे गाम केता बेर भौड़ी दऽ देलक। भौड़ीक दइक कारण रहै जे शुरूहेक जेठुआ लगनमे गुलेतिया कबुतरीकेँ मेलासँ पटिया कऽ बिआह कऽ लेलक। कुमारि कन्या कबुतरी नै बुझि सकली जे दोती बर गुलेती अछि। मुदा जखन कबुतरी सासुर

आएल तँ सासुक जगह सौतीनक गारजनीमे फँसि गेल। जहिना पड़बा नव-पुरान खोप नै चीन्हि चहरेमे लोभा जाइए तहिना। सौतीनक गारजनी कबुतरीकेँ पसिन ऐ दुआरे नै होइ जे जखन एके घरबलाक दुनू घरवाली छिऐ तखन ओकर हुकुम किए मानबै। जहिना ओकर घर छिऐ तहिना ने हमरो छी आ जँ अपन नीक दुआरे हमरासँ काज करा लिअए तखन अपना की रहत।

गुलेतिया अपने पस्त रहए। होइ जे कहुना साँपो मरि जाए आ लाठियो ने टुटए। झगड़ो फरिछा जाए आ दुनू घरवालीसँ मिलानो रहि जाए। मने-मन सोचए जे बाप-माइक बिआह केलहा पहिलुका घरवाली छी, जँ कोनो तरहक दुख हेतै आ वेचारी कलपत तँ पड़ि जाएत। हो-न-हो हाथे-पएर लुल्ह भऽ जाए तखन की दोसरकेँ धोइ-धोइ चाटब। तँए बिआही घरवालीक डर होइ मुदा दोसरसँ ऐ दुआरे डराइत रहए जे, घटकैतीकाल घरवाली लग बाजि गेल रहए जे बिआह-तिआह नै भेल अछि। रस्ते-रस्ते कबुतरियो भाँज लगा नेने रहए जे अँगनामे एकटा स्त्रीगण छइ। मुदा ई भाँज नै पाबि सकल जे सासु हएत आकि सौतीन।

गामक लोक दुनूक बातो सुनि लिअए आ अनठाइयो दिअए। अनठबैक कारण रहै जे सभ बुझैत जे सँए-बहुक झगड़ा किए होइ छइ। ओना, गुलेतियो आ कबुतरियोमे सँ कियो पाछू हटैले तैयारो नहि। मरदे जकाँ गुलेतियो लोक लग बाजे आ महिले जकाँ कबुतरियो।

तीन दिन गामक भौड़ी केलाक पछाइत चाहक दोकानपर गुलेतिया पहुँचल। गुलेतियाकेँ देखिते चाहबला बाजल-

"अखन गाममे केकरो चलती छै तँ ओ गुलेती भायकेँ अछि।"

ब्रेंचपर बैसल शिवशंकर टोनलक-

"की चलती गुलेती भायकेँ छैन हौ?"

मुँह-बनबैत दोकानदार बाजल- "अरे बा, चलती! तेहेन गुलेती

भाय छैथ जे महाभारतक तीरो छोड़ै छैथ आ मेना-पौड़की मारैबला गुल्लीओ।”

चाहक दोकानपर बैसल सभ दोकानदारक बात अकानैत मुदा अर्थे ने किनको भेटैन। कियो किछु तँ कियो किछु बुझैत।

तही बीच कबुतरी पहुँचल। गुलेतियाक बिना रोच रखने बाजल-

“ऐ मरदाबाकेँ पुछियौ जे अपनाकेँ कुमार कहि किए बिआहि अनलक।”

सभ चुप। चुपो केना नै रहता। जखने मुद्दे-मुदालह सोझहामे सवाल-जवाब करत तँ पनचैतियो अपने कऽ लेत तइले पंचक कोन काज छइ। पत्नीक प्रश्नक उत्तर दैत गुलेतिया बाजल-

“ई झूठ केना भेल। जैठाम तीस-तीस, चालीस-चालीसटा लोक बिआह करैए तैठाम तँ हम दुइयेटा केलौं, तइले एकरा लगै किए छइ। कोनो कि हमहींटा अपनाकेँ कुमार कहलिऐ आकि सभ कहने हेतै?”



शब्द संख्या: 538, तिथि: 24 दिसम्बर 2013

अपसोच

जिनगीक अन्तिम सीढ़ीपर पहुँचला पछाइत जखन पाछू उनैट तकै छी तँ रंग-बिरंगक काजक संग अपनाकेँ देखै छी। नीको आ खूब नीको आ अधलो आ खूब अधलो। तखन कहब जे हँसितो ओतबे हएब जेते कनैत हएब। मुदा अपन पनचैती जँ अपने नै करब तँ दुनियाँमे केकरा एते फुरसत छै जे एहेन घोर-मट्ठा पानिकेँ बेरौत। पनचैती केलौं, मन माफित पंचैती केलौं, पैछला सभ सम-गम भऽ बराबरीपर मानि लेलौं।

तँए मिसियो भरि सोग-पीड़ा पैछला नै अछि। मुदा कनीए खोंच रहि गेल तैपर विचार करै छी। कहब जे जखन सभ कइये लेलौं तखन खोंच कनी किए रहि गेल। जहिना किछु फलक खोंइचा फले संग जीवन-मरण बितबैए, मुदा किछु फल तँ ओहनो ऐछे जेकरा छीलि कऽ आकि सोहि कऽ कात करि देल जाइ छइ। हमर से नै अछि, जहिना देहमे नमहर घा रहने कियो ओकर इलाज करत आकि कड़ची-तड़चीक खोंचक दबाइ करत। या तँ बड़के घाक दबाइसँ छुटि जाएत आ नै तँ अपने किछु दिन पहुनाइ कऽ चलि जाएत।

खोंच ई अछि जे नीको केलहा अधला भऽ गेल। खाली जँ अपनेटा नीक बुझितौं आ दुनियाँक लोक अधला बुझितए तैयो अपन गलती मानि लेतौं, सेहो नै भेल। अपनोसँ बेसी दोसर-तेसर नीक बुझितए। सचमुच जिनगीमे सैयोसँ ऊपर लड़का-लड़िकिक वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित केलौं। नीक बुझि केलौं, अखनो बुझै छी मुदा तखन भोरे-भोर दुलारपुरवाली किए गरियौलैन? ई तँ गुण अछि जे लोक सोझहोमे अधला

करैत रहैए, देखैत रहै छी, मुदा जँ धिया-पुता जानि नै बजै छी तँ ऊहो सभ बुढ़हाएल शरीर देखि बिनु देखनिहारे बुझैए। ओना, तइसँ अपनो फेदे-फेदा अछि। अनेरे मौगियाही गपो आ काजोसँ हटल रहै छी।

दुलारपुरवालीक गरियबैक कारण की?

दुलारपुरवालीक पिता संगे नोकरी करै छला। वेचारा सात्विक लोक। भलमनसाहतक चलैत दू-चारि दिनक दरमाहा बी.डी.ओ.सँ कटबा लइ छला। हुनका सन पच्चीस-तीस गोरे जे पाँच दिनक दरमाहा कटबाइयो कऽ अपना भलमनसाहतकेँ नै छोड़लैन। कहियो बी.डी.ओ. साहैब लग अपन सफाइ नै देलखिन। एक मदक खर्च बी.डी.ओ. साहैबकेँ चलै छेलैन।

बगए-वाणि, बोली-चाली दुलारपुरवला-महेन्द्रबाबूक एहेन जे कियो अपन उपस्थिति हुनका डायरीमे नोट करबए चाहैत। उपकैर कऽ कहलयैन-

“भाय साहैब, अहाँ बेटीक बिआह ओहिना माने बिनु लेने-देनक करा देब।”

अपन उपकार स्वीकारैत महेन्द्रबाबू कहला-

“जखन मनुक्ख बनि धरतीपर जन्म लेलौं तखन जँ किछु सेवा नै केलौं तँ जिनगीए की!”

एक तँ अहुना समाजमे कथा-कुटुमैती जोड़ैमे नीक लगैए आ कन्यादानसँ जुड़ल मुख्य प्रक्रिया जँ करै छी तँ की कन्यादानक सुफलक भागी हम नै भेलौं। जरूर भेलौं। मुदा फेर गारि किए? सेहो तँ अपने विचारए पड़त। भेल ई जे गामेक एकटा छौड़ाकेँ बाप-माए मरि गेलइ। मैट्रीक पास कऽ नेने रहए। अखुनका हवा तँ उठल नै छेलै जे पहिने नोकरी पाछू बिआह। बिआहोक पछाइत केते गोरे पढ़बो केलैन आ नोकरियो केलैन। ओइ छौड़ाकेँ बिआह करा कहलिऐ-

“सभ दिल्ली नौकरी करए जाइए, तहूँ चलि जो। कमेबही तखन ने परिवार बनतौ।”

बात मानि गेल चलि गेल दिल्ली। बंगलोर, चेन्नैइ तँ छी नै जे अनट्रेंड भनसिया हएत। एकटा कोठीमे भनसियाक काज धेलक। साले भरिमे फुलि कऽ मोकना हाथी जकाँ भऽ गेल। घरोवाली-ले रेडियो, कैमरा, रंग-रंगक गहना, साड़ी नेने आएल। आबि कऽ कहबो केलक।

ले-बलैया अपन घरवाली घर एलै आ अपने सीरा-आगूक भनसिया दिल्लीमे बनि गेल। गामे आएब छोड़ि देलक। जहिना केकरो भगबै दुआरे लोक खेनाइ-पीनाइ बन्न कऽ दइ छै तहिना दुलारपुरवालीकेँ सेहो ओ छौड़ा खरचो-पानि बन्न कऽ देलक! से की कोनो अपना विचारे केलक आकि दोसर मौगीक विचारसँ।

वेचारी दुलारपुरवालीक पिता जीवित नै छैन जे आबि उपराग देता। मुदा हमहूँ तँ दोखी भेबे केलिऐ जे एकटा नीक परिवारक कन्याकेँ गुँह-खत्तामे बोड़ि देलिऐ।



शब्द संख्या: 548, तिथि: 26 दिसम्बर 2013

पतझाड़

पलंगपर पड़ल राघोबाबाक आँखि मुनाइते ताड़क छोटका पंखा हाथसँ निच्चाँ खसलैन। पंखा खसिते पसेनाक टघारसँ कोढ़ियाएल नीन अकचका कऽ टुटि गेलैन। बन्ने आँखिये दहिना हाथसँ सिरमाक बगलमे पंखा हँथोड़ए लगला मुदा निच्चाँ खसल पंखा नै अभरलैन। आँखि खोलि सिरमापर सिर सेरिया पजराक मसलनक बीच देह सेरियबैत मुड़ी उठा निच्चाँ देखैक कोशिश केलैन। चीनीपट्टा सन पेट, फीलपाँव पएर, सड़ल साँप जकाँ दुनू बाँहिक गड़ लगैबते बजला-

“की समय छल, की भऽ गेल आ की हएत तेकर कोनो ठेकान नहि।”

मड़ियाएल पतिक बात सुनि, बगलक चौकीपर पड़ल सुमित्रा बिअनि हौंकैत बजली-

“सभ कर्मक फल छी। जेहने पीसब तेहने ने उठाएब।”

कहि हाँइ-हाँइ बिअनि हौंकए लगली। चारि-पाँच हाथ हटल चौकी तँए राघोबाबाकेँ हवा नै लगैन। मुदा पत्नीक बोल जेना ओल सन कबकबा कऽ लगि गेल होइन, तहिना मनमे भेलैन। हारल नटुआ जहिना अपन कलाकेँ हारैत देखि जिनगीक हार कबूल करए लगैत अछि तहिना झड़ैत जिनगी देखि राघोबाबा सेहो हारि मानैक क्रममे क्रमिक गतिये क्रमे-क्रम झड़ि रहल छला। जीवित दुनियाँक प्रेमी पति-पत्नी छी। ओना, विगत दस बर्खसँ सुमित्रा पतिकेँ झूठक्कर मानि रहल छेली, मुदा पति-पत्नीक बीचक

सम्बन्ध सूत्र जँ ओहन हुअए जे पतिक हाथमे पत्नीक छोर पकड़ा देल जाए आ पत्नीकेँ बिना छोरक जिनगी बना देल जाए तँ की ओ पत्नी पतिक बराबरी कऽ सकत? नीच कर्म केनिहार पुरुखकेँ ऊपर रखि सकत? मुदा..?

एहेन स्थितिमे सुमित्रा, तँए मुँह झाड़ि तँ नै बाजि पबै छेली तैयो उचित बुझि लग्गी लगा तँ कहबे करै छेलखिन। पत्नीक बात सुनि पलंगक निच्चाँ खसल पंखा उठा राघोबाबा हाँइ-हाँइ मुँहपर पंखा हौंकए लगला। पसीनासँ भीजल देह हवाक सिहकी पैबते मन सिहैक कलशलैन। जिज्ञासा करैत बजला-

"से की? से की?"

पतिक जिज्ञासु प्रश्न सुनिते सुमित्राक मनमे उठलैन, की जिनगी छल आ आइ की भऽ गेल। जहिना पुरान देह अपन भेलैन तहिना ने हमरो भेल। तखन तँ हल्लुक-फल्लुक देह अछि, आसकैत नै लगैए, मुदा जे जीता जिनगी अपनो फुहराम भऽ उठि-बैस नै सकैए तँ के केकरा देखत। बेटा-पुतोहु सहजे सात सागर दूर चलि गेल, ओकर कोन आश, तखन? मुदा उपाइये की?

नीक आकि अधला पति तँ यएह छैथ, हिनके आशा ने करए पड़त। ओना, तीत-मीठ बात सभ दिनसँ होइत आएल, होइत रहत। लगले मन पाछू घुसैक गेलैन। दस बर्ख पहिने की रोब छेलैन, की बुझै छेलिऐन आ आइ की छैन आ की बुझि रहल छिऐन।

ऐ दस बर्खक बीच, जहिना गाछक पात एका-एकी झड़ए लगैत अछि तहिना राघोबाबा हारैत निच्चाँ उतैर रहल छला। सुमित्रा जीतैत ऊपर चढ़ि रहल छेली। दुनियाँक बीच नै पति-पत्नीक बीच। बजली-

"किछु ने, बुढ़िया फूसि।"

पत्नीक झँसाएल बात सुनि राघोबाबाक मन झड़झड़ा कऽ उड़ि

गेलैन। उड़ि कऽ स्मृतिक ओइ दुनियाँमे पहुँच गेलैन जेतए गुलावक फूल सन ललिचगर आ कोइलीक वसन्ती मदमस्त भरल बोल सन बोली सुमित्रामे पबै छला, तेतए आइ कौआक बोल आ काँटक गाछ गुलाव देखि रहल छैथ। देखि रहल छैथ बिनु पतवारिक जिनगीक नाह, जे पतवारि छोड़ि धारमे भँसि रहल अछि। जिनगीक जालमे अपनाकेँ ओझराइत जालक एक-एक सूत देखए लगला। केना छोट कोठली बनल चारूकात गीरहसँ गीरहाएल अछि।

खींचाइत जाल जकाँ राघोबाबाक मन खींचा कऽ दस बर्ख पाछू खींचा गेलैन। चाइनिक पसीना आँगुरसँ काछि निच्चाँ फेकते रहैथ आकि मन ऊपर तकलकैन। यएह घर छी जइमे पाल पंखा चलैत रहै छल, छतमे इजोतक झालैड़क बीच दुनू बेकती सौनक हरिअर साड़ीक बीच लटपटाइत टहलै छेलौं, टहलै छेलौं ओइ विरूदावली वनमे जैठाम मन्द-मन्द हवा अपन मस्तीमे नचैत, पुरस्कार देल नर्तकी जकाँ देहमे लटपटा गुदगुदबै छल, केतए गेल! लोक कहैत धन देने धन बढ़बे करै छै, मुदा से कहाँ भेल, उनैट केना गेल! जिनगीक घटल घटना आन नै बुझलक तँ नै बुझलक, कोन जरूरी छै अनका बूझब, अपनासँ उगारे नै तँ अनका की देखैत, मुदा अपन तँ अपन छल, से के बूझत, मुदा अपनो कहाँ बुझलौं..?

मन एकमात्र बेटापर पड़लैन। ओकर कोन आशा, मुदा ओकरो गलती कहाँ देखै छिऐ, बढ़ैत समय, बढ़ैत परिवार आ बढ़ैत पीढ़ीक तँ उचिते हक बनै छै किने जे पैछलासँ बेसी सुख-भोगक जिनगी जीबए। जैठाम अपने नोकर-चाकर, जन-बोनिहारक संग रीनियाँ सँ घेरल रहै छेलौं तैठाम जँ ओ (बेटा) अपन सम्पैत उठा विदेश जा कारखाना बैसा नोकर-चाकरक बीचक जिनगी बना लेलक तँ उचिते केलक किने। आगू घुसकैत मनमे महाजनी एलैन। बोरा लऽ लऽ लोकक ढबाहि लगल रहै छल, बखारीसँ धान निकालि नोकर तौल कहै छल आ अपने ब्रह्मा जकाँ लिखै छेलौं। चाहे तीन सेरकेँ तीन पसेरी लिखौं आकि तीन पसेरीकेँ तीन

मन। मुदा ईहो तँ भऽ सकै छल जे तीन मनकेँ तीन पसेरी आ तीन पसेरीकेँ तीन सेर लिख सकै छेलौं से कहाँ लिखाइ छल। केना लिखाइत? अपन ब्रह्मा अपने छेलौं किने, जँ शराबी, जुआरी अनका बहु-बेटीकेँ नै गरिया अपनाकेँ गरियौत तँ ओकर बदचलैन केते दिन चलतै। यएह गाम छी, तीन मनक उपजा साढ़े चारि मन दइ छल। तैपर खेतक उपजाक संग बुधियारीक माने लेन-देनक बेइमानीबला आमदनी सेहो छल। केतबो नोकर-चाकर जन-बोनिहारकेँ दइ छेलिऐ तैयो कहाँ घटै छल, सभ किछु चमकै छल...।

..अपना परिवारमे कहिया माछ-मासु तहूमे मिथिलांचलक ललमुहाँ रोहू आ खस्सीक कलेजी आकि दूधे-दही-छालहीक अभाव रहल। भोलो बाबाकेँ माने भाँगमे दूध-परसाएल गौरिया केरा, मुनक्का-किशमिश, मिसरी तँ चढ़ैबते रहलयैन, तखन किए आइ सभ बेपाट भऽ गेला। की सुरूजे भगवान गाछमे टुसिया हरिअर-हरिअर डारि-पात, फड़-फुलक संग देबो करै छथिन आ समय आनि सभटा केँ झाड़ियो दइ छथिन। कंठमे सुखौनक आभास भेलैन। पानिक तृष्णा भेलैन। तेहेन जनमारा रौद अछि जे घैलो-बाल्टीनक पानि इन्होरा गेल हएत, जरल लेल ठण्ढ-शीतल चाही, जँ जरलपर जरल पड़त तँ आरो जड़ा कऽ जड़िया जाएत। मुदा..? अपने केना लगक बाल्टीन छोड़ि कलपर आनए जाएब। से नै तँ पत्नीकेँ कहिऐन जे पियास लागल अछि। मुदा लगले मनमे एलैन जे जँ कहीं, जेना चाह पीबैकाल गिलास नेने आबए कहै छैथ तहिना कहि दैथ जे बाल्टीनमे अछि, लऽ कऽ पीब लिअ, तखन? पलंगपर बैसल राघोबाबा ने पानि पीबए उठि रहला अछि आ ने पत्नीकेँ कहि रहल छैथ मुदा नजैर पत्नीएक चौकीपर नाचि रहल छैन। दुनियाँक बोनसँ हाथ पकैड़ सिरजनक दुनियाँ बसबैक वचन देने छिऐन, रोग-वियाधिक बीच सहयोगीक संग पुरैक वादा केने छिऐन जेकर बदला ऊहो अपन दिन-रातिक जिनगी समरपित केने छैथ, तैठाम जहिना अपन तहिना ने हुनको

भूख-पियासक संग मन-मनोरथ सेहो छैन। से केते धरि पुरा रहलयैन अछि?

फेर मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे पुरुख हुअए आकि नारी, दुनू शक्ति सम्पन्न होइते अछि तँए ओंगठबो नीक नहि। ओंगठलो नै जा सकैए मुदा रोग-वियाधि, भूख-पियास तँ शक्तिकेँ हिला-हिला दोसराक सहयोगक अपेछा कराइये दइ छइ। तहीले ने संगीक प्रयोजन होइ छइ। अरवन तँ कियो आन नै अछि, अपने दुनू बेकती छी, दुनियाँक संग लोककेँ छल-प्रपंच करए पड़ै छै, दुनियेँ छल-प्रपंचीक छी। अपना लेल तँ वएह ने नीक जे जेहेन बेवहार करत, सम्बन्ध बनौत तेकरा संग तेहने बेवहार करी। जँ से नै करब तँ दुनियाँक केतौ आदि-अन्त छै जे जड़ि पकैड़ ठाढ़ हएब।

एहनो लोक तँ छैथे जे सत्यकेँ संकल्प-तीर बना नदीमे तैर रहला अछि आ शब्द–वाण छोड़ैत रहला अछि, मुदा तँए कि झूठ छी जे एहनो लोक तँ ऐछे जे बजैकाल वेलगाम घोड़ा जकाँ सत्य-फूसिकेँ एके बुझि दूधपनियाँ पीबैए। ओह! अनेरे मनकेँ बौअबै छी, अपन बात अपना लूरिये-बुधिये नै बुझि पेने लोक पौल जाइए। तहिना तँ अपनो भेल! मन ठमकलैन। दस बर्ख पूर्व यएह पत्नी छेली जिनका अपराजित कली सन आँखिक नजैर मिलिते प्रेमसँ उपोउप भऽ जाइ छल आ यएह आइ कारकौआ सन बुझि पड़ि रहल छैथ, आखिर एना किए भेल? लोक बजैए ओल्ड बेटल ओल्ड वाइन आ ओल्ड वाइफ उत्तम होइए अर्थात् पुरान पान तहिना पुरान शराब अपन सहयोगीक संग घुलैत-मिलैत एक रस भऽ जाइत तहिना विचारवान पत्नी सृजनसँ पतिपालक भार उठा चलैत, से कहाँ भेल? की ई झूठ जे प्रेमी पाबि प्रेम प्रेमास्पदक सीमा पकैड़ कदमक गाछमे राधा-कृष्ण जकाँ यमुना किनहरिक गाछक डारिमे झूला झूलि बरहमासा गबैत। मुदा एहेन प्रेम भऽ कहाँ पएल जे होइत! अपन दस बर्ख पहिलुका जिनगी केहेन रहल जे होइत। की परिवार छल, केते सेवा

करै छेलिऐन। घरक भार भनसिया, पैनभरनी संग जिनगीक कोनो काज बाँकी नै छल जइमे सहयोगी नै छेलिऐन। मुदा आइ? आइ तँ ओहिना ने ठूठ गाछ जकाँ भऽ गेल छैथ जइमे एकोटा पात नहि। सभटा झड़ि गेल। पातक-संगबे छूटने मुड़ीक टुस्साक संग ठौहरियो सुखि खसि पड़लैन। जे सजल सजाएल गाछ नै सुखल-टटाएल ठूठ गाछ भऽ गेल छैन। इजोतमे भलेँ लोक भूत-प्रेत नै देखह मुदा अन्हरिया राति हुअए आकि झलफलाएल इजोरिया, ठूठ गाछ भूत जकाँ तँ देखे पड़ैत। मन घुमलैन, जँ ओ -पत्नी- ठूठ गाछ जकाँ भऽ गेली तँ अपने की रहल। रहल खाली एक क्विन्टल सताइस किलोक देह। देहपर नजैर पड़िते मनमे खुशी उपकलैन।

साठि-सत्तैर किलोबला देह जखन क्विनटलिया बोरा पीठ आकि माथपर उठा लइए, तैठाम ओइसँ दोबर उठबैक तागत तँ अपनो देहमे अछिए। हूबा जगिते राघोबाबा उठि कऽ झाँपल बाल्टीन उघारि लोटामे पानि ढारि गिलाससँ पीबए लगला। एक गिलास पीबिते कौआ जकाँ मन कड़कड़ेलैन। जहिना भरि दिन चरौड़ कएल कौआ साँझमे एकठाम भेला पछाइत निअम बनबैत जे, देखि काल्हिसँ कियो ने अधला वृत्ति करिहेँ आ ने अधला बौस खइहेँ। जेहेन खेमे तेहेन बुधि हेतौ। नीक बात रहने एकमुहरी सभ मानि लइत। मुदा अधरतियाक अधपेटिया विचारो ने अधविचरिया होइत। सौंझुका निअम बदैल संशोधित निअम बनबैत जे अदहा नीक करिहेँ आ अदहा अधलो खइहेँ। मुदा वएह कौआ भोरमे ओहू निअमकेँ बदैल निअम बनबैत जे खाइ-जोकर जे भेटौ से खहिहेँ आ जे मन मानो से करिहेँ। तहिना एक गिलास पानि पीला पछाइत राघोबाबाकेँ सेहो विवेक आगू बढ़ि मनकेँ कहलकैन। सुनिते निर्णय केलैन जे जखन गरम चाहो लोक सुआदि-सुआदि पीबिते अछि तखन तँ हमहीं एकरत्ती ठाढ़ मारल पानि पीलौं तँ कोन अधला भेल। निआसल मनकेँ पानि चाही आकि शीतल-ठंढा जल। मनमे विचार अबिते दोसर देवदूत

अपन तरकशसँ तीर निकालि छोड़लक, बैसाख जेठमे जँ ठरल पानिमे सुआद होइ छै तँ पूस मासमे गरमे ने नीक होइ छइ। किए कियो इन्होर पीबैए। तर्कक मजगूती देखि राघोबाबाक मन मानि गेलैन जे ई सभ सभटा मन भड़छब छी जँ से नै छी तँ एक चीज सभकेँ एके रंग नीक किए ने लगै छइ। तर्कक बोनमे राघोबाबाक नजैर पत्नीपर गेलैन। पोचाड़ा दैत बजला-

"बड़ पियास लगल छेलए।"

पतिक पियास सुनि सुमित्रा बजली-

"तँ बजलौं किए ने?"

एकबटुआ देखि राघोबाबा बजला-

"कहुना भेलौं तँ अहूँ बूढ़े भेलौं किने। किए अनेरे अहाँकेँ हरान करितौं। अपन काज अपने करी, सएह ने केलौं।"

अपन काज अपने करी सुनि सुमित्राक विचारमे धक्का लगलैन। धक्का ई लगलैन जे जँ अपन काज अपने करी तँ कियो केकरो भार बनत किए? मुदा उमेर पाबि शरीरोक तँ रूप बदैलते छै, तैठाम दोसराक जरूरत तँ हेबे करत। मुदा..? मुदा ई जे नोकर-चाकरपर जीनिहारक जँ अपनो बेटा-पुतोहु दूर चलि जाए तँ तखन बुढ़ाड़ीमे की हएत। नजैर बेटापर गेलैन। आइ जँ अपन बेटा-पुतोहु लगमे रहैत तँ की अहिना जिनगीक रूप रहैत। ऐ अवस्थामे चुल्हिफुक्की केहेन भेल! जेते सम्पैत बेच गामसँ चलि गेल तेते सम्पैतसँ की गाममे पेट नै भरितै। तखन? तखन तँ यएह ने जे छी तहीमे जीबैक अछि। बजली-

"पैछला सभ किछु बिसैर जाउ, नीक भेल आकि अधला, जे भेल से भेल। आब केना जीब, तइ दिस ताकू।"

पचास बर्ख पूर्व राघोबाबाक बिआह सुमित्रा संग भेलैन। राघोबाबाक पिता देवानन्द गामक जेठरैयत। बीस बीघा जमीन। किसानी

जिनगीक जे स्तर होइ छै तइ स्तरक जिनगी। बाहरसँ कम सम्पर्को आ समाजमे पैंच-पालट तँ करैथ मुदा महाजनी नै रहैन। पाहीपट्टीक गाम। जइ जमीन्दारक गाम तिनका संग देवानन्दक कुटुमैती केलैन।

ओना, किछु गोरेक ईहो कहब अछि जे समतुल्य सम्बन्ध अधिक नीक होइ छै मुदा विधातोक किरदानी तँ किरदानीए छिऐन। ने दूटा मनुक्खकेँ एकरंग मुँह-कान बनबै छथिन आ ने कलमक दूटा नोक एकरंग करै छथिन। जेते लोक तेते मुँह आ जेते लिखिनिहार तेते रंगक लिखाबट। खाएर जे हौउ, जहिना देवानन्दकेँ राघवक सम्बन्ध जोड़ब नीक लगलैन तहिना ठाकुरो प्रसादकेँ सोहनगर बुझि पड़लैन। जमीन्दार घराइनमे बाधा ई उपस्थित भेल रहैन जे दियादीक सम्बन्ध रहैन। दोसर विकल्पो नै बुझि पड़लैन। कारण कुटुमैती तँ जातियेमे हएत, तखन तँ गोरगर-कन्हगर देखि कऽ करी, से जँचलैन। देवानन्दो दुनू परानीक मन खुशीसँ भरि गेलैन। के ने ऊपर उठए चाहैए, दुनू परानी देवानन्द विचारि लेलैन जे जँ एको पाइ दहेज नहियोँ भेटत तैयो कुटुमैती कइए लेब। भने बेटाकेँ नै बेचने रहब, मुँहदानो दइले तँ रहत। जखन ठाकुर प्रसादक सिपाही देवानन्द बेटाक बिआहक गप-सप्प उठौलैन तखन देवानन्दो पत्नीक विचारक आशा छोड़ि 'हँ' बजला। ओना, विचार भेले रहैन। सिपाही तँ सिपाही छल, ठाकुर प्रसाद लग बाजल जे कुटुमैती करै-जोकर अछि। कुटुमैती करै-जोकर सुनि ठाकुर प्रसादक पत्नी- सुनीता, पुछलखिन-

"से केना बुझलहक?"

जहिना इन्टरभ्यूक समय विद्यार्थी निर्भीक भऽ कोनो प्रश्नक उत्तर करैत तहिना सिपाही बाजल-

"पुरुखाह लोक देवानन्द छैथ।"

पुरुखाह सुनि सुनीताक मनमे खुट-खुटी उठलैन। खुट-खुटी ई जे जखन परिवारमे पुरुख आ महिलाक काजक बीच सीमांकन अछि तखन

एहेन बात सिपाही किए कहलक। पुछलखिन- "से की?"

अपन बढ़ैत मान देखि सिपाही तिलिया-फुलिया लगबैत बाजल-

"एक तँ जाइते देरी बिना किछु पुछने दरबज्जापर बैसा अपने आँगन जा लोटामे पानि अनलैन। पएर धोनौं ने रही आकि चाह-जलखै पहुँच गेल।"

सुनीताक नजैर बेटी बिआहपर रहैन तँए सिपाहीक बातसँ कानमे झड़ पड़ए लगलैन। बजली- "ई सभ छोड़ह, काजक गप करह?"

काजक गप सुनि सिपाही पट बदैल दोसर दिस मुँह बनौलक। बाजल-

"जखने कुटुमैतीक गप-सप्प उठेलौं आकि धाँइ दऽ बजला जे निसचित जूड़बन्धन हेबे करत। जाति-पाँजि कोनो छीपल अछि। एक्कैस पुरखाक इतिहास अछि। कहियो कियो इज्जत गमा कऽ पाँजि नै बनौलैन। परिवारक काज छी किनकोसँ किछु विचारैक प्रश्ने नै अछि।"

सिपाहीकेँ भँसैत देखि पुन: सुनीता दोहरौलैन-

"सुमित्राकेँ कोनो दुख-तकलीफ तँ ने हएत। लड़का केहेन अछि?"

"मलिकाइन, सएह ने कहै छेलौं, सम्बन्धक प्रश्न अछि, सविस्तर बात बूझब जरूरी अछि किने।"

ठाकुर प्रसाद आ देवानन्दक बीच कुटुमैती भऽ गेल। कुटुमैती भेला पछाइत दान-दहेजक ठेकान नै रहलैन। मुदा दूटा प्रमुख रहैन। पहिल गामक सरकारी जमीन आ दोसर, महाजनीबला बोही सुमझा देलकैन। जहिना लछमीक आगमण भेने छप्पर फाँड़ि धन-बरखा होइत तहिना देवानन्दोकेँ भेलैन। बढ़ैत कारोबार देख, जन-बोनिहारक अतिरिक्त तीनटा नोकरो रखलैन। दोसर दिस सुमित्रा लेल तीनटा नोकरनी सेहो नैहरेसँ आएल छेलैन। दुनू परानी देवानन्दो मरि गेला आ ठाकुरो प्रसाद दुनू बेकती। रहि गेला राघव आ सुमित्रा। ओना, तीनटा बेटियो-जमाए

आ बेटो-पुतोहु छथिन। जिनगीक चारिम पड़ावपर पहुँचते राघोबाबाकेँ चारू दिससँ धक्का लगलैन। धक्का लगिते अपन देह देखलैन।

जेना जुग बदलै छै तहिना राघोबाबाकेँ साठि बर्खक अवस्थामे भेलैन। तीन-चारि सालक रौदी महाजनी खा गेलैन। करताइत दुआरे खेती टुटि गेलैन, तैपर महाजनी आ जमीनक विवाद सेहो समाजमे पसैर गेल। राघोबाबा डेगे-डेग पाछू मुहेँ ससरए लगला। ससरैत-ससरैत आइ पचहत्तैर बर्खक अवस्थामे पहुँच गेल छैथ।

जहिना गाछक फुनगीक डारिपर चिड़ै-चुनमुनी बैस अपन जिनगियोक गप करैए आ नचैत-गबैत-हँसैत-हटैत-सटैत सभ मस्त रहैए, तहिना तँ मनुक्खोकेँ हेबा चाही, से कहाँ होइए?

मन ठमकलैन। किछुकालक पछाइत ठकुआएल मन कुड़कुड़ेलैन। कुड़कुड़ेला- “जहियासँ दुनू गोरे एकठाम भेलौं, तहियासँ अहाँ कोन नजरिये देखलौं?”

पतिक आक्षेप सुनि सुमित्रा डहकली- “निरलज जकाँ बजैमे लाजो ने होइए?”

पत्नीक इशारा राघोबाबा नै बुझि सकला। धड़फड़ा कऽ बजला-

“हमर लाज अहाँक लाज नहि, तखन एना किए बजै छी।”

जहिना बोन-झाड़मे माए-बाप अपन बच्चाकेँ केतौ ठाढ़ कऽ अपने गाछक अढ़मे नुका रहैए आ औनाइत बच्चाकेँ देखि कखनो थोपड़ी बजा तँ कखनो बौआ-बौआ कहि बोल-भरोस दइए, तहिना सुमित्रा बजली-

“गुड़क मारि धोकड़ेसँ लोक बुझैए, हाथी जकाँ जे अखनो लगै छी, से केकरा केने?”

दबैत मन राघोबाबाक आरो दबा गेलैन। दबाइत मनमे एलैन हाथी जकाँ तँ ठीके खुआ-पीआ कऽ बना देलैन मुदा ई किए ने बुझलैन जे एहनो दिन देखए पड़त। प्रकृतिकेँ अजीव खेल छै, जँ गरमी मासमे ठंढा

पानिक मान बढ़ि जाइ छै तँ जाड़मे इनहोरक। तहिना पतझड़ मास होइतो सभ गाछमे एकेबेर थोड़े पतझड़ो होइ छै, कोनो पालाक पल्ला पड़ि झड़ि जाइए तँ कोनो रौदक तीक्ष्ण गरमीसँ, तँ कोनो बरसातक रोग-वियाधिसँ। रोग वियाधि अबिते मन अपना दिस बढ़लैन। अपन जिनगी.., गाछे-बिरीछ जकाँ मनुक्खोक पतझड़ होइ छै, जे भेल? नहि, रोग-वियाधिक फल छी। गाछो-बिरीछमे तँ मौसमक अतिरिक्त रोगो-वियाधिसँ पतझाड़ होइते अछि। भरिसक सएह भेल। बजला- "रोग-वियाधि काबू केने अछि, नै तँ अपन पेट जखन कुतो-बिलाइ, चिड़ैओ-चुनमुनी पालि लइए तखन हम तँ मनुक्ख छी। मुइला पछाइत देखए एबै।"

सामंजस करैत सुमित्रा बजली- "की नवे-नौताड़ि पति-पत्नी भेली आ बुढ़-बूढ़ानुस नै हेती। जे पतिकेँ मानए सएह सोहागिन।"

पत्नीक प्रेम भरल बात सुनि राघोबाबा घरसँ बाहर सुरूज दिस देखलैन। बेर टगि गेल छल। साँझो लगिचा गेल छल। पुनः बाहरसँ घर आबि बजला- "बेर टगि गेल, चलू रतुका ओरियान करए।"

पतिक बात सुनि सुमित्रा बजली किछु ने, सिहैक कऽ मन कलैश मुड़-मुड़िया गेलैन। जेना जीवनक नव शक्ति सिरजित भऽ गेल होइन। सिरजिते ने जीत-शक्ति छी, असिरजितेक हरल ने हारल-मारल भेल।



शब्द संख्या: 2587, तिथि: 31 दिसम्बर 2013

झीसीक मजा

जेठ मास। मलमासक चलैत जूनक अन्तिम समय काल्हिसँ कोटो-कचहरी बन्न हएत जे अदहा जुलाईमे खूजत।

बीस बर्ख पुरान, अन्तिम केसक फैसला हएत। सेहो जँ फास्ट ट्रेक कोर्ट नै खुजैत तँ दस-बीस बर्ख आरो चलैत। ओना, केसक चिन्ता तँ सोभाविक छै, मुदा जहिना पैजामा सिऔनिहार निकासक जोगार बना लैत तहिना केसो लड़निहार तँ बनाइए लैत अछि, से छेलैहे। बना ई लैत अछि जे जखन निचला कोर्टमे बीस-पच्चीस बर्ख लगैत अछि तखन ऊपरकामे तइसँ बेसी लगबे करत, तहूमे तीन-तीनटा कोर्ट ऊपर अछि। तँए ईहो तँ कम खुशीक बात नहियेँ भेल जे सरकारी रेकर्डमे मृत्यु घोषित हएब। तइले जहलकेँ किए लग आबए देब।

चारि बजे भोरे साइकिलसँ मधुबनी विदा भेलौं। ओना, विदाहे होइकाल मन छह-पाँच करए लगल जे साइकिलसँ जाइ आ ओतए सजा भऽ जाए तखन साइकिल तँ लुटाइए जाएत। अपना संग लगल वेचारीकेँ किए जहल जाए देब, एकर कोन कसूर छै...। फेर हुअए जे जँ सजे भऽ जाएत, तैयो तँ जमानत हेबे करत, फेर घुमि कऽ एबे करब। हँ-निहस करैत साइकिलसँ विदा भेलौं। भोरूका समय, कनी-कनी पूर्वाक सिहकी रहबे करै, किरिण फुटैत-फुटैत मधुबनी पहुँच गेलौं। ओना, राँटीक पुबरिये घार लग फ्रेस भऽ गेल रही। राँटी चौकपर पहुँचते चाह-पान केलौं।

भरि दिनक उमसमे दू बजैत-बजैत वेदम भऽ गेलौं। एहेन वेदम भऽ गेल रही जे निर्णऐ नै कऽ पाबी जे जहल कष्टकर होइ छै आकि कोर्ट। अढ़ाइ बजे जजमेन्ट भेल। केस खारिज भेल। ओकील मुंशीकेँ भोज-भात करैत सूर्यास्त भऽ गेल। अन्हरिया पख गाम जाइमे दू घन्टा लगत, एक तँ अन्हार दोसर गर्मी-उमस, तैपर साइकिल चलाएब। मुदा कएले की जाएत। जमातक बीच रही, प्रजातंत्र शासन छिऐहे।

सूर्यास्तक पछाइत विदा भेलौं। भगवतीपुर तक एक्के झोंकमे आबि गेलौं, मुदा पसीनासँ बुझि पड़ए जे देहक वस्त्र मोटा कऽ भारी भऽ गेल अछि। चाह पीब विदा भेलौं आकि विजलोका लौकलै। टुकड़ी-टुकड़ी मेघ छिड़िया लगलै। पछबाक सिहकी चललै, कनीए पछाइत झीसी झहरए लगलै। तरेगन चोरा-नुक्की खेलए लगल। मेंहथ-छहर लग आबि साइकिल चलबसँ हिया हारि गेल। भिनसुरका देखल घारक कतवाहिक बालु आ खेतसँ निच्चाँ बनल रस्तामे महींसिक खुड़क खुड़ेटल। दिनोकेँ होशियार एते होशियारी करिते छैथ जे भरि कमला पेट साइकिल गुड़कबैत पएरे टपै छैथ।

रातिक नअ बजैत। दू घन्टाक रस्ता गामक। देहक गंजी-कुरता निकालि, ठेहुनसँ ऊपर धोती खोंसि पएरे विदा भेलौं। पछबाक लहकीक संग मेघक झकास, कमलाधार लग अबैत-अबैत सुधि-बुधि हेरा गेल। ठेहुनसँ निच्चाँ कमलाक पानि, बीच धारमे पैसि जिनगीकेँ हियाबए लगलौं, अन्तिम केसक मुकदमाक खुशी, साँप जकाँ छछाड़ी कटैत धारक धारा, बर्खाक बदला झकस, झाँट-विहारिक जगह हवाक लहकी पैरक पथिककेँ दू कोस आरो जाए पड़त। एगारह बजे पहुँचते पत्नी हलैस दौगल आबि, जेना जहलसँ पड़ा कऽ आएल होइ तहिना दरबज्जा-आँगनक बीच दुहारिपर मोथीक बिछान बिछबैत बजली-

“पहिने जिरा लिअ। तखन खाएब-पीब। अपना हाथक राति छी, सुतैएमे कनी देरीए हएत ने।”

अपन मस्तीमे मस्त रही। सटले उतारा देलिऐन-

“अहाँ अपन ओरियानमे जाउ, अखन झीसीक मजा उठबए दिअ।”



शब्द संख्या: 453, तिथि: 1 जनवरी 2014

मति-गति

रूपलालकेँ देखिते राधारमण बाजल-

“रूप भाय, गाममे नै छेलौं की, बहुत दिनक बाद नजैर पड़लौं हेन?”

राधारमणक प्रश्नक उत्तर रूपलालकेँ जेना ठोरेपर रहै, बाजल-

“गामेमे छी। केतए जाएब। हमरा ले तँ गामे सभ किछ छी, स्वर्ग-नर्कसँ लऽ कऽ हाट-कसबा धरि।”

रूपलाल आ राधारमण एक उमेरिया, संगे दुनू गोरे कौलेज तक पढ़ने। केते दिनपर दुनूकेँ भेँट भेल से तँ निसचित दिनक ठेकान नै छल मुदा मौसममे परिवर्तन जरूर आबि गेल छल। ई बात राधारमणकेँ बुझल जे रूपलालक छोट भाए मोतीलाल पनरह-बीस बर्खसँ एम.ए. करि कऽ महानगर कोलकातामे नोकरी करैए। आगू भऽ कऽ भैयारीक बात पुछब अनुचित बुझि राधारमण बाजल छल। ओना, पेटमे रहै जे जहिना अपनो गामक आ आनो गामक पढौल-लिखौल छोट भाए, केना पिता तुल्य जेठ भाइक संग बेवहार करै छैथ। मुदा आगू भऽ कऽ बाजब एहेन प्रश्न अनुचितो होइ छइ। जे भाए पिताक परिवार बिसैर जाइए तेकरा लेल तँ उचितो भऽ सकैए मुदा जे से नै मानि चलैए तैठाम तँ अनुचित हेबे करत।

अनुचित ई जे केकरो भैयारीक बीच केहेन बेवहारिक सम्बन्ध छै, परिवारक भीतर किछु एहनो काज होइ छै जे गोपनीय रखल जाइ छइ। ओहेन काज जे परिवारकेँ समाजसँ जोड़ैए ओ, आ जे परिवार जोड़ैक

काज छी, दुनूमे अन्तर होइ छइ। जँ सम्बन्धसँ हटि कऽ किछु प्रश्न धोखासँ एहेन उठि जाए, जइसँ बेवघात पैदा लइ तेहनो तँ भऽ सकैए। मुदा गपोक तँ कड़ी होइ छै, जइ कड़ीक बीच सभ बात जुड़ि सकैए, मुदा कड़ीक बीचक बातकेँ जँ पहिने रखल जाए तखन तँ एहेन बेवघातक स्थिति बनियेँ जाइए।

राधारमणक पेटक प्रश्न पेटेमे रहि गेल, मुदा बात तँ अँकुर गेल छल, कोनो-ने-कोनो गरे बाहर निकलबे करत। किए नै निकलतै, केकरो आँखि नै ने सीअल छै जे भैयारीक जिनगीमे आर्थिक विषमता एते दूरी बना देलक अछि जे एक भाँइक धिया-पुताकेँ उच्च कोटिक विद्यालय भेटै छै तँ दोसरकेँ ओहन भेटै छै जइमे ने नियमित पढ़ाइ छै आ ने पढ़ैक दोसर बेवस्था पुस्तकालय, वाचनालय, डिबेट इत्यादि छै, जइसँ ओकरा साधारणो स्तरक बोध होइ, यएह छी भैयारीक सम्बन्ध। पाशा बदलैत राधारमण बाजल-

"दुनू भाँइक परिवार आनन्दसँ छी किने?"

राधारमणक गोटी सुतरल। रूपलाल उत्तर देलक-

"हँ, बड़-बढ़ियाँ छी, मोतियोलाल गामेमे अछि, चलू कलकतिया विस्कुटो खाएब आ चाहो पीब।"

ओना, राधारमणकेँ केतेको काज सिरपर सवारी कसने रहै मुदा नवलोकसँ भेँट करब जरूरी बुझि सभ काजकेँ ठेलैत बाजल-

"ओना, एकटा काजे बौआइ छी मुदा चलू। पछाइत बुझल जेतै।"

दुनू गोरे संगे विदा भेल।

दरबज्जाक ओसारक चौकीपर बिछाएल मोथीक बिछानपर बैसल मोतीलाल अपनो तीनू बेटा-बेटी, बहिनक सेहो दुनू आ भाइक चारू बेटा-बेटीकेँ एकठाम बैसा, बीचमे बैसल। रूपलालक छोटका बेटाकेँ मोतीलाल पुछलक- "बौआ, की नाओं छियौ?"

मोतीलालक प्रश्न सुनि दजबाक मन बौआ गेलइ। मनमे उठि गेलै परिवारक सभ। बाप बौआ कहै तँ माए नूनू, दीदी धींगरा कहै तँ जेठ भाय घुसका। पित्ती टून कहै आ पितियाइन टूनटून। सबहक अपन-अपन नाओं रखैक पाछू अपन-अपन कारणो। पिता ऐ दुआरे कहैत जे हम बौआ कहबै तखन ने बौआसँ बाउ सीखत। तहिना माएकेँ लोभ जे नूनू कहबै तखने ने नानी सीखत, जे जड़िये पकैड़ लेत। मुदा दीदीक आधार जे बच्चेसँ बेसी खुएलहा-पीएलहा देह, डेढ़ बर्खक पछाइत उठि कऽ ठाढ़ भेल। तहिना जेठ भाय नअ महिनामे डेग नै बढ़बैत देखि घुसका नाओं रखि देलक। मोतीलाल घुघड़ूबला डोराडोरि छठियारेमे देने, तँए टून नाओं रखने। पितियाइनो तहिना हँैठा-हँैठीक मालामे छोटकी टुनटुना लगौल देने रहथिन तँए टून-टून नाओं रखने।

पित्तीक प्रश्न सुनि, जहिना खले-खल काजक हिसाबसँ रुपैआक खल लगा लोक रखैए आ काज अबिते निकालैए तहिना टून बाजल-

"टून।"

जेठ भायकेँ देखबैत मोतीलाल बाजल- "ई के हएत?"

"बड़का भैया।"

बहिनक छोटकी बेटीकेँ देखबैत पुछलक- "ई के हएत?"

"बहिन।"

"हम के हएब?"

"कलकतिया काका।"

मोतीलालक रग-रगमे गाम समाज समाएल मुदा जहिना कोनो बोनक फल अपन प्रेमी जीव-जन्तुक बासभूमि बनैत आ नै रहने ओकरा भगेबो करैत तहिना मोतीलालक जिनगीमे भेल छल। शिक्षक पिताक समझ रहैन जे शिक्षा तँ शिक्षा छी चरम लक्ष्य होइते हेतै, अपने एकरा बुझि केना पाएब, एक ढंगक शिक्षा पाबि शिक्षक बनलौं आ वएह

विषयक शिक्षक बनलौं, दोसरकेँ बुझि नै पेलिऐ। जखन बुझि नै पेलौं तखन दुसब अनुचित तँए शिक्षा शिक्षार्थीक विचारसँ हुअए। मुदा सेवा निवृत्ति भेला पछाइत महसूस केलैन जे किछु कमी जरूर भेल। सेहो तखन भेलैन जखन दुनू भाँइ रूपलाल-मोतीलालक जिनगी शुरू भेल। जेना रूपलाल अपना संग परिवार आ समाजकेँ जोड़ि मस्तीमे चलि रहल अछि तेना मोतीलालकेँ नै भऽ पाबि रहल छइ। पिताक विचारक लाभ मोतीलाल उठौने रहए। नीक विद्यार्थी रहने नीक-नीक विचार हाइये स्कूलसँ उठए लगलै। डॉक्टर बनब, इंजीनियर बनब, एम.बी.ए. करब इत्यादि। सुतरबो केलै। एम.बी.ए. केलक। डिग्री लेला पछाइत जखन उनैट पाछू तकलक तँ बुझि पड़लै जे गाम छुटि जाएत! हमरा-जोकर काज कहाँ छै!

गामक जे बात बुझए चाहै छेलौं से आब केना हएत!! किए लोक मातृभूमि-मातृभूमि अनेरे रट लगौने रहैए। मुदा दोसर उपैयो तँ नहियेँ अछि। तखन? तखन तँ यएह ने जे जइ भूमिक दर्शन चाहै छी ओ अन्तौ रहने कएल जा सकैए, मुदा नोकरीक किछु दिनक पछाइत ई बात बुझलक जे जेते दिन गाममे रहि गाम देखलौं ओहने चित्र ने मनमे अबो-अन्त रहत। जइ गाममे धार नै बोहै छल तइ गाममे धार आबि गामक भूगोल बदैल देलक, जइसँ उपजाबाड़ीसँ लऽ कऽ जिनगीक क्रिया-कलापकेँ तहस-नहस कऽ देलक तेकरा जँ बीस बर्ख पहिलुका चित्र आगूमे देबै तँ की नवका तूरक लोक आन्हर नै कहत! आन भूमि दर्शन तँ ओतुक्का अनकूल छइ। जँ जीविते अन्हरा जाएब तखन देखलौं की आ देखेलौं कथी!

अपनाकेँ बलि चढ़ैत देखि मोतीलाल जिनगी-काजमे किछु संशोधन केलक। संशोधन ई जे मास दिनक छुट्टीमे गाम आएब छोड़ि खुदरा-खुदरी छुट्टी बना मोसमे-मौसम आबए लगल। अपन सारोक डेरा लगेमे जइसँ सुविधो रहइ। पाँच दिनक छुट्टी दुर्गापूजामे सपरिवार गाम

आबए लगल बाँकी असगरे मोतीलाल तीन दिन-चारि दिन लेल आबए लगल। मुदा से ऐबेर नै भेल। बंगालक पिकनिक छोड़ि गामेमे सालक पहिल दिन सपरिवार मनाबैक विचारसँ आबि गेल। पाँच तारीखकेँ चलि जाएत। ओना, मनमे द्वन्द्व कोलकतेसँ उठि गेल रहै, मुदा गाम अबैत-अबैत आरो बढ़ि गेलइ। बढ़ि ई गेलै जे एक दिस लोक देशी-विदेशी संस्कृतिक ढोल पीटैए तँ दोसर दिस नगेड़ा बजा स्वागत करैत विदेशी आनियोँ रहल अछि, ई केना हएत! घाओक दबाइयो खेबै आ कदीमो खेबै तखन तँ खलीफाक भीड़ानमे किछु बेसी समय लगबे करत। विचित्र स्थितिमे मोतीलाल बच्चा सबहक बीच अपन माथक बोझ उतारि रहल छल। एकटा नमहर समैयक इतिहास रहल अछि केतौसँ मुड़ी आ केतौसँ नाँगैर जोड़ि नै हेतइ। कालखण्डक अनुरूप सामाजिक ढाँचा बनैत रहल अछि। जँ से नै तँ जनकक इतिहासकेँ केना आधुनिक बना देल गेल अछि।

रस्तेपर रूपलाल आ राधारमणकेँ अबैत देखि मोतीलाल उठि कऽ आगू बढ़ि बाजल- “प्रणाम, भाय साहैब?”

मोतीलालक प्रणामक उत्तर दैत राधारमण बाजल-

“मोतीलाल, तोरे नाओं सुनि कलकतिया बिस्कुट खाइले एलौं हेन।”

बाँहि पकैड़ मोतीलाल राधारमणकेँ बैसबैत भातीजकेँ कहलक-

“बौआ, जाबे चाह बनतह ताबे जलखै लाबह।”

बहरवैया भाए-भावोकेँ अबिते रूपलाल अपनो बहरवैया भऽ गेल। चुपचाप चौकीपर बैस देखए लगल। राधारमण बाजल-

“केते दिन गाममे रहबह?”

राधारमणक प्रश्न सुनिते मोतीलाल बाजल-

“तीन दिन भइये गेल परसू चलि जाएब। फेनो ऐगला महिना

फगुआमे आएब।”

फगुआ सुनि राधारमण ठमैक गेल। ठमैक ई गेल जे एक दिस अंगरेजिया नववर्ष, दोसर दिस अनेको अपन नववर्ष, केतौ चैती तँ केतौ बैशाखी, केतौ सौनी तँ केतौ दिवालीक। मुदा प्रश्न तँ उठबे करत जे सात समुद्र पारक मनबै छी, अपन देशी किए छुटि जाइए? प्रश्न तँ सामंजसक अछि जे एकरा केना सामंजस कएल जाए। अपन सनातनी संस्कृति प्रेममय परिवर्तनीय अछि। जेकर फल छिऐ कण-कणमे ब्रह्मस्वरूप दर्शनक रूप तैंतीस करोड़ देवी-देवता, तेकर कोन नजरिये समावेश हएत। विचारकेँ आगू बढ़बैत राधारमण बाजल-

“पढ़ाइ-लिखाइक काज केहेन चलै छह?”

मोतीलाल-

“गाम आ महानगरमे बहुत अन्तर भऽ गेल अछि। गाम जेते आगू घुसकल तइसँ पाछूओ कम नै घुसकल। तेकर कारण भेल अछि नैतिकताक ह्रास। साए-सैंकड़ा रुपैआक मोल मनुक्खक जिनगीक बनि गेल अछि। भाए-भैयारीक सम्बन्धमे चलैने बनि गेल अछि जे जखने जन्मल तखने भीन! यएह छी रामायणिक चारू भाँइक पारिवारिक सम्बन्ध। गाम-गाम रामायणसँ अकास गूँजि रहल अछि, दोसर दिस पारिवारिक सम्बन्ध नष्ट भऽ रहल अछि तैठाम समाज आ सामाजिक सरोकार केहेन हएत, से तँ सोझहे अछि।”

ओना, राधारमणक प्लेटक रसगुल्ला सठबो ने कएल छल मुदा मनमे एहेन सुआद जरूर आबि गेल छेलै जे जे प्रश्न मोतीलाल उठौलक ओ केकर प्रश्न भेल। हजार हाथ मंगनिहारकेँ एक हाथ केते दऽ सकैए। मुदा लाजिमी बात ईहो ऐछे जे मातृभमिक सेवामे अपन कथी योगदान अछि। देश-विदेशक बीच अनेको भाषा-भाषी क्षेत्रमे रहि एतबो नै कऽ

सकै छी जे ओइ भाषाक साहित्यकेँ मैथिलीमे आनि सकी। अपन पहिचान अपन राशन कार्डपर मैथिली भाषी दर्ज करा सकी। खाएर जे हौउ, कोउ काहू मगन, कोइ काहू मगन। मोतीलालक गंभीर प्रश्नक उत्तर राधारमण नै दऽ बाजल-

"छेनाक छी किने?"

जहिना पानिक डुमडुमी खेलमे हरदा बजा चोर बनौल जाइ छै तहिना मोतीलालक मनमे भेल। मुदा शब्दवाण कलेजाकेँ बेध देने छेलइ। बेधने ई छेलै जे किछु प्रश्नक विचार करब, मुदा पाहीपट्टी बुझि राधारमण भाय प्रश्नकेँ टारि देलैन। अपन मजबूरी देखबैत मोतीलाल बाजल-

"भाय साहैब, अपन बेथा जे नहियोँ कहब तँ बुझबै केना। किछु पढ़ै-लिखैक इच्छा मनमे ऐछे, मुदा जइ धरतीपर बास करै छी ओकर रूप रंग अपन गाम जकाँ नै अछि, जेहेन जरूरत छै तेहेन देखि नै पबै छी, एहेन इसथीतमे फँसि गेल छी। की करब से बाटे ने देखि पबै छी।"

मोतीलालक प्रश्न फेनो राधारमणकेँ घुरियाएल बुझि पड़ल। अपन इच्छा जे एक गामक परिवारकेँ शहरक परिवार संग केना सामंजस बनौल राखल गेल अछि। केकरो कहैसँ पहिने अपन बिसवास अपनापर रखए पड़ै छै, जँ से नै हएत तँ शब्दजालमे ओझरेबे करत। बाजल-

"परिवारक की सभ भार अहाँ ऊपर अछि आ की सभ भाय साहैबकेँ देने छिऐन?"

राधारमणक बात मोतीलालकेँ लागल नहि, एक विचारधाराक धार बहैत बुझि पड़ल। बाजल-

"नोकरीक दरमहे केते होइ छै तखन तँ गामक हिसाबे बेसी होइते छै, तइमे अदहा-अदही कऽ लइ छी। अपनो आगू मुहेँ ससरैक अछि आ परिवारोकेँ ससारैक अछि। भाय साहैब कहियो किछु ने मंगै छैथ, अपन

ढंग चलैक छैन, तइसँ परिवारक भारो ने बुझि पड़ै छैन मुदा तैयो बाल-बच्चाक पढ़ब, बर-बेमारी आ लत्ता-कपड़ाक भार उतारिये देने छिऐन।"

राधारमण- "एतबे किए उतारने छिऐन, कहुना तँ श्रेष्ठ भेला किने?"

राधारमणक बात सुनि मोतीलाल मुस्की दैत बाजल-

"भाय साहैबकेँ घुमै-फीड़ैले मोटर साइकिल लइले कहै छिऐन से मानिये ने रहला अछि। अहाँ संगतुरिया छिऐन कहियनु।"

चौकीपर बैसल रूपलाल दुनू गोरेक बात सुनि बाजल-

"अहाँ सबहक विचार अछि जे मोटर साइकिल कीनि ली। मुदा आब हम ओइ-जोकर रहलौं जे ड्राइवरी करब। जइ गाममे रहै छी तइमे सभ तरहक जरूरैत तँ गामेमे पूर्ति भऽ जाइए तखन अनेरे सवारी लऽ कऽ की करब।"

रूपलालक विचारकेँ राधारमण टारैत बाजल-

"गाड़ी-सवारी रहलासँ अपनो सुविधा हएत आ अनको बेर-बेगरतामे काज औत। अच्छा सवारीक बात छोड़ू, रहै-जोकर घर ऐछे, तखन तँ कोनो मलिनता भैयारीक बीच नहियेँ हएत।"

रूपलाल-

"मलिनता किए रहत। भैयारी होइ आकि दियादी आकि सामाजिक, सबहक बीच सीमा अछि अपन सीमाक बीच अपन जिनगी अछि तखन किए कोनो मलिनता औत। बेजान गाड़ियो-सवारी सड़कपर चलिते छै मुदा कहाँ केतौ बलउमकी ढाही लइए। केतौ जँ एक दोसरसँ टकराइतो अछि तँ ड्राइवरक गलतीसँ टकराइए।"

चौकीपर सँ उठैत राधारमण बाजल-

"बाउ मोती, बड़ बेर भऽ गेल। जाइ छी। जखन गाम अबै छह तखन एको-आध घन्टा लेल भेँट होइत रहिहऽ।"

मोतीलाल-

“मनमे तँ अपनो रहैए, मुदा जिनगी ने दूदिसिया बनि गेल अछि, किछु जे गपो-सप्प करब, से की करब। तखन तँ लोकक जिनगीए केतेटा होइ छइ। कहुना-ने-कहुना कटिये जाइ छइ।”

राधारमण-

“एना नै बाजह। सदिकाल मनमे रखि मनुक्ख-परिवार-समाज, देश-दुनियाँक बीच अपनाकेँ ठाढ़ करैक परियास करह।”

❑

शब्द संख्या: 1807, तिथि: 07 जनवरी 2014

अपन सन मुँह

रेलबे स्टेशनक प्रतीक्षालयक कुरसीपर बैसल विष्णुमोहनक मनसँ अनायास खसलै-

"जहिना अपन सन मुँह लऽ कऽ आएल छेलौं तहिना अपने सन नेने जाइ छी।"

मनसँ खसिते विचारक रस्ता बुधि पकड़लक। रस्ता पकैड़ते मुहसँ खसलै-

"कोन मुहें आएल छेलौं आ कोन मुहें जाइ छी। हे स्टेशनक विश्रामालय अन्तिम प्रणाम!"

परोपट्टामे बड़ी लाइनक गाड़ी आ बिहारकें महानगरसँ जुड़ैक बाटक चर्च सुनिते लोक, सुतल गाए जकाँ कान पटपटौलक। एन.एच.57क दूरबीनक काज शुरू होइते अन्नक संग कुअन्नो सौनक मेघ जकाँ सिसकए लगल। दूरबीनसँ देखिनहार इंजीनियर सभसँ गामक लोक सभकें भेंट भेलइ। जहिना साँपक मुँह साँप चटैए तहिना लोक पुछब शुरू केलक। गामक लोको तँ बुधिक बखारीए छी, मरूआक छी आकि तीसीक, धानक छी आकि चाउरक से बुझैक काजे कोन छइ। सरकारी छी सरकार बनबैए। कमीशनक कारोबार हेबे करतै। जहिना सीढ़ीनुमा ढाल अछि तहिना कमीशनो चढ़बे करत। मुदा से बिनु चाह-पान खुऔने थोड़े हएत। भाइ! मिथिला छिऐ, हमरा गाम अहाँ काज करए एलौं आ

कुशलो-छेम नै पुछी, चाहो-पान नै कराबी तखन हमरा सबहक सेखीए की रहत। बहरवैया इंजीनियर मिथिलाकेँ पवित्र भूमि बुझबे करैए। भाषा नइ बुझैए तँ नै बुझह मुदा पवित्र बुझि पावन तँ करबे करत। सोझ मतिये बजबो करैत-

"विदेशी पूजीक सहयोगसँ बनि रहल अछि, पाइक कमी नै छै, इलाका धुधुआ जाएत।"

नक्शा बनला पछाइत जखन जमीनक प्रश्न उठल तँ हजारो बर्खक मुइलहा जमीन सबहक मुँहमे स्वाति नक्षत्रक अमृत खसल। साए-सैंकड़ा रुपैआक कट्ठा जमीन हजार-लाखमे कूदल। गाम-गाम चाह-पानक दोकान चौकक निर्माण केलक। सड़कक बीच जे जमीन पड़ल ओकर हस्तान्तरण शुरू भेल। भेल दुनू, किछु गोरेक जमीन लूटा गेल तँ किछु गोरे लूटबो केलक। लूटलक ई जे ताल-मेल बैसा टटघरकेँ कोठा मकानक दाम लेलक। खाली जमीनक दामेक लाभ भेल से नहि, गाम-गामक रस्ता-बाटक सम्पर्को बनल। मुदा गाम-गामसँ पड़ाएल लोक दुआरे पाइक जेहेन मोल हेबा चाही से नै भेल। संगे जइ गतिये हेबा चाही सेहो नै भऽ रहल अछि।

पाँच कट्ठा घराड़ीक जमीनक अढ़ाइ कट्ठा इन्द्रमोहन आ विष्णुमोहनक सेहो पड़ल। ओना, सड़कक कातक जमीनक मोल तखने उचित होइत जखन सड़क बरोबरि आ किछु ऊपर उठा ओकरा कारोबारमे आनल जाए, नै तँ सिरकट भऽ ओहेन बनि जाइए जइमे सड़कक कूड़ा-कड़कटसँ लऽ कऽ बर्खाक पानि धरि बसए लगैए। इन्द्रमोहनोक जमीनक हाल सएह हएत। इन्द्रमोहन आ विष्णुमोहन सहोदर भाए। पिताक नाओं कृष्णमोहन।

कृष्णमोहन गामक बगले गामक लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षक छला। ओना, लोअर प्राइमरी स्कूलोक शिक्षकक एक सीमांकन भइये

गेल जे मैट्रिक पास शिक्षक हेता। मैट्रिकक सर्टिफिकेट तँ कृष्णमोहनकेँ नै रहैन मुदा निच्चाँसँ ऊपर श्रेणी धरि स्कूलक पढ़बैक लूरि तँ रहबे करैन। लूरिक दोसरो कारण रहैन। कारण ई रहैन जे ओना स्कूलक शिक्षा नै भेटल रहैन मुदा नाना अपना लग रखि पढ़ै-लिखैक एहेन लूरि बना देने रहैन जे धुड़झार सभ किलासमे पढ़बै छला। जइसँ विद्यार्थियो आ अभिभावकोमे मान-समान रहबे करैन, जेकर जीवंत प्रमाण छल जे सिरिफ पढ़ौले विद्यार्थी नै आनो-आन प्रणाम करिते छेलैन। सुबुधिये ने प्रणम्य होइत से तँ अपन काजक ओकाइत धरि रहबे करैन। नोकरीक शुरूमे सरकारी दरमाहा कृष्णमोहनकेँ नै रहैन हुनकेटा नै रहैन से बात नै आनो शिक्षककेँ नै रहैन। मुदा तँए पढ़ौनिहार बेइमान रहए से नहि। अरबा चाउर शनिचरा आ एकटा दूटा पाइ तँ अठबारे शैने-शनि दैते रहैन। ओना, किछु विद्यार्थीकेँ शनिचरो माफ रहए। तैठाम कृष्णमोहन सबुर करैथ जे जेहने दान तेहने ने पुन। माफक कारण आर्थिक स्थिति छेलइ। ओना, ओहन विद्यार्थीक संख्या कम रहए।

दस बीघा खेतबला कृष्णमोहन सोलहन्नी पठने-पाठनक बीचक जिनगी धारण कऽ लेलैन तइसँ खेतीक आमदनी सेहो कमि गेलैन। ओना, खेत बँटाइ लगौने रहैथ मुदा उपजा दूधक-डारही जकाँ रहैन। कारणो छल, एक तँ समयपर खेती नै भऽ पबै, दोसर खेतीक खोराक तँ पानि छिऐ से नै रहैन, तैसंग कोनो साल बीड़ारेमे बीहैन रौदी भेने जरि जाइत तँ कोनो साल बेसी बरखा-बाढ़ि एने गलि जाइ। जरन-गलन खेतीक प्रमुख बीमारी भइये गेल रहइ। ओना, कृष्णमोहनक किछु बँटेदार खेतीमे पूजी लगा उद्योग बनबए चाहै छल मुदा खेतीक पूजी दू-दिसिया होइत। एक दिस खेतकेँ चौरस करब, पानिक ओरियान करब, जीव-जन्तुक उपद्रवक बचाव करब, तँ दोसर दिस होइत नीक बीआ, खाद, दबाइ कीनि उपजा बढ़ाएब। मुदा तइमे कृष्णमोहन पाछू हटि जाइथ। हटैक कारण रहैन जे पानि लेल बोरिंग-दमकल जे कारखानाक समान छी, तइमे मनमाना दाम

रहने अधिक पूजीक जरूरैत पड़ैत, तहिना खेतो चौरस आकि छहरदेवालीसँ घेरब आकि कँटहा तारसँ बेरहब सेहो तहिना। आब ओ समय रहल नै जे टल्ला-छिट्टासँ लोक खेत सेरिऔत, गामक लोक भागि कऽ शहर-बजार पकैड़ लेलक तखन केना सेरिऔल जाएत। टेकटर सभ बढ़ियाँ काज करै छै मुदा ओकर तँ खर्चो बेसी छैहे। ओना, कृष्णमोहनकेँ एते जमीन छेलैन जे किछु जमीन बेच जँ पानिक प्रबन्ध करए चाहितैथ तँ कऽ सकै छला मुदा बाप-दादाक देल जमीन केना बेच सकै छला! प्रतिष्ठाक प्रश्न तँ रहबे करैन। भूमिए ने भूमा आ भूषण दुनू छी। बँटेदार अपन पूजी अहू दुआरे नै बेसीयबऽ चाहैत जे उपजाक बँटबारा उचित नै छइ। खेतीमे उपजाक अदहासँ बेसी बँटेदारकेँ लगते लगबए पड़ैए, तैठाम जँ अदहा बँटाइ भेटत तँ घाटा हेबे करत। आब कि कोनो सतयुग छी जे लोक अपन पूजी गमा दोसराक उपकार करत। आब तँ ओ जुग आबि गेल अछि जे लोक दानो-पुन अपने धिया-पुता धरि करैए। जँ से नै तँ महारथीक बेटे किए महारथी बनला, दोसर किए ने बनि सकला, जखन कि ओ सभ दानीए नै महादानी छला।

कृष्णमोहनक पहिल सन्तान इन्द्रमोहन। इन्द्रमोहनक जन्मक समय हुनकर मातो-पिता जीविते रहथिन। परिवारमे इन्द्रमोहनकेँ पैबते बाबा-दादी हृदय फाड़ि असीरवाद देने रहथिन जे कुलमन्त बनि जिनगी जीविहऽ।

समय बीतल हराइत-ढराइत कृष्णमोहनोकेँ स्कूल भेटलैन। शनिचराक आशा रहबे करैन तैपर पैंतालीस रुपैआ दरमहो भेटए लगलैन। मनक आशा पुरबै दुआरे इन्द्रमोहनकेँ इमानदारीक संग पढ़ौलैन। अपन कोठीक जे धान-चाउर रहैन ओ खोलि कऽ दऽ देलखिन। मुदा इन्द्रमोहनकेँ डिग्री-डिप्लोमा नै भेट सकलै। अछैते बुधिये इन्द्रमोहनकेँ अपना बरबरि काज नै देखि कृष्णमोहन चिन्तित रहबे करैथ मुदा उपैये की। सरकारमे जे अछि ओकर तँ अपने लगुआ-भगुआ सड़कपर बौआइ

छै, अनका कथी देखत। मुदा एते उपए तँ कृष्णमोहनकेँ कइए देलखिन जे खेत बँटाइए रहए दहक, अपनो दरमाहा भेटते अछि, पेन्शनोक गप-सप्प चलिये रहल अछि जाबे जीब ताबे तोरा तकलीफ नै हुअ देबह। जइसँ इन्द्रमोहनकेँ अपना सिरे काज किछु ने। मुदा शिक्षकक बेटा रहने परिवार तँ प्रतिष्ठित भइये गेल छेलैन। केना ने होइत, जँ सरस्वतीक बास भूमि स्वर्ग भूमि नै बनै तँ केकर बनइ। अपनो दरबज्जापर लोकक आवाजाही आ अनको ऐठाम आएब-जाएब इन्द्रमोहनक रहबे कएल। पढ़ल-लिखल रहने गामक लोक इन्द्रमोहनकेँ काजक भार दिअ लगलैन। खेती-पथारीक समय आ ओकरा करैक लूरि तँ लोक पुछए लगलैन। समाजमे झूठो केना बाजल जाए तखन तँ महिना-तीर्थ बुझैले किछु जरूरत पड़बे करत। तैसंग खेती करैक तरीका सेहो बुझए पड़त, जँ से नै बूझब तँ लोक अनेरे कहत जे मास्टरक बेटा तास्टर भऽ गेल। तइले जँ सोलहन्नी नै तँ चौअन्नियोँ सत् नै रहत तँ सोलहन्नी झूठो आँखिक सोझहामे केना देखल जाएत।

ओना, पोथियो-पत्रा प्रमाणिक अछि मुदा तेतबेसँ काज चलैबला नहियेँ अछि। जेना वायुमण्डलक रूप रेखा बदलने मौसमक रूप-रेखा बदैल जाइत तेना तँ पोथी-पत्राक तानी-भरनी नै बदलैत, तँए किछु आरो पढ़ैक जरूरैत अछि। इन्द्रमोहनकेँ मनमे उठिते बुधि बिचरलै, बिचैरते भूगोल-इतिहास दिस बढ़ल। मुदा प्रश्न फँसि गेलै दुनूक साल-मासक हिसाबमे मलमास। तीन सालपर होइए। जेकर कोनो मोजरे ने छै, जखन पूजा-पाठ, पाबैन-तिहार हेबे ने करत तखन खेती-पथारी केना कएल जाएत। मुदा विचारलो केकरासँ जाए। भूमि छेदन अधला भेल। मुदा भूमि तँ देहो होइए, मनो होइए। समाजक निरमौत समाज होइए। तइमे समाज तेहेन चालैन जकाँ भऽ गेल अछि जइसँ परदा बनब कठिन अछि। घोर-मट्ठा भेल मनमे इन्द्रमोहनकेँ उठल जे अनेरे दूध-दही फुटाएब आकि घोर-मट्ठा, तइसँ नीक जे दूधे उठा कऽ पीब जाइ। सबहक मट्ठी भऽ जेतै।

विचारमे मनो मानि निर्णय कऽ लेलकै जे जेते बुझल अछि ओ बुझलाहा भेल बाँकी बिनु बुझल भेल, दुनू बात लोककेँ कहबै। जे मन फुरतै से मानि करत। मुदा लगले मनमे दोसर धक्का लगलैन। ओ ई जे बुझबो तँ एक रंग नै होइए। कोनो दोसराक मुँहक सुनल होइए तँ कोनो किताबक पढ़ल तँ कोनो अपना हाथे कएल रहैए तखन तीनूमे केकरा की कहबै। हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' कहि राम-राम कऽ जिनगीकेँ रामरो बना सामाजिक लोक इन्द्रमोहन बनि गेल।

नोकरीक अन्तिम दस बर्खक बीच पिता-कृष्णमोहनक जिनगीमे उछाल एलैन। पाँच सन्तानक बीच परिवारमे तीनू बेटियो आ जेठ बेटा-इन्द्रमोहनकेँ बिआह-दुरागमन कऽ निचेन भऽ गेल छला। गामसँ थोड़े हटि दोसर गाममे हाइस्कूल बनने विष्णुमोहन मैट्रिक पास कऽ नेने छल। एका-एक पैंतालीस रुपैआक काजक मूल्यो हजारमे बदैल गेलैन। बेटाक मनमाना शिक्षा लेल हृदय खोलि देलखिन। एते जरूर केलैन कृष्णमोहन जे इन्द्रमोहनसँ सेहो पुछि लेलखिन। सोझमतिया इन्द्रमोहनकेँ प्रश्नक उत्तर दइमे मिनटो नै लगलै। मन कहलकै-

"अनकर दालि-चाउर अनकर घी हमरा परसैमे की। जेठ भाइक मान-मर्यादा तँ अपने बनबए पड़त। से तँ अनके सिरे भेट रहल अछि। एते हल्लुक माटि तँ बिलाइयो खुनि सकैए, मनुक्ख तँ सहजे मनुक्ख छी जे पाताल खुनि जौमैठ गाड़ि सीमांकन कऽ लइए।"

जहिना पिताक उल्लासक प्रेरणा आ सहयोग तहिना भाइक पाबि विष्णुमोहन एम.बी.ए. केलक। एम.बी.ए. केलाक पछाइत बैंकक मैनेजरक ग्रेजुएट कन्या संग बिआह भेल। आमजन जकाँ बन्हाएल जनक जिनगी नै होइत। चारित्रिक प्रमाणपत्रक रूपो-रेखा बदैल जाइ छै, जेना बैंक-कारखानाक बीच चरित्र निर्माण भेने परिवारमे नोकरीक आगमन भइये जाइत अछि। नोकरीक आश्वासनपर विष्णुमोहनक बिआह कृष्णमोहन करा देलखिन। बिआहक किछुए दिनक पछाइत

विष्णुमोहनकेँ भोपालक बैंकमे नोकरी भऽ गेल। नीक दरमाहा नीक सुविधा। मुदा सुविधो तँ सुविधा चाहैए।

जहियेसँ कृष्णमोहन सेवा निवृत भेला तहिये हराएल-भोथियाएल बीमारी सभ आबि दाबए लगल रहैन। जेते दरमाहा रहैन ओ टुटि कऽ अदहा भऽ गेल रहैन। इन्द्रमोहनक बेटो-बेटी पढ़ै-लिखै, बिआह-दान करै-जोकर भेले जाइत रहैन।

असगरे दरबज्जापर बैसल कृष्णमोहन पत्नीकेँ सोर पाड़लखिन। पतिक अबाज सुनि राधा लगमे आबि बजली-

"की कहलौं?"

जेना हारल-मारल-थाकल बटोही कोनो गाछ लग बैस जिनगीक दुनू छोर पकैड़ते रगड़ाए लगैए तहिना कृष्णमोहनक स्थिति छैन। परिवारक जे मान-प्रतिष्ठा एक लोटा पानिक अछि ओ केना उलटा कऽ उलटा देब। केहेन अतिथि दरबज्जापर औता, पतिपाल कठिन हएत। मुदा जँ नै बाजब तँ पुराएब केतए-सँ। अपने बीमारीसँ ग्रसित छी जेते अन-पानि नै खाइ छी तइसँ बेसी दबाइ खाइ छी। अखन धरि जे भार बेटा इन्द्रमोहनक कान्हपर नै आबए दिअ देलिऐ ओ केना सम्हारि पौत! मुदा लगले मनमे उठिते कृष्णमोहन बजला-

"दू साल विष्णुमोहनकेँ नोकरी भेना भऽ गेल, पहिल साल दू-तीन बेर गाम आएल मुदा दोसर सालसँ नै आएल। परिवारक नीक-अधला पुछलक। मुदा..?"

पतिक थकथकाएल गति देखि राधा बजली-

"जाधैर सामर्थ छल ताधैर अपना जकाँ परिवारक केलिऐ, मुदा आब ने ओ सामर्थ रहल आ ने शक्ति, तखन तँ जे अछि तेकरे कान्हपर ने दिअ पड़त। से जँ नै देबै तखन अन्हराएल माए-बापक तीर्थाटन केना हएत। तइले तँ श्रवणकुमारक परीक्षा लिअ पड़त किने?"

पत्नीक विचार कृष्णमोहनकेँ जँचलैन। दुनू बेकतीक बीचक बात तँए ने इन्द्रमोहन ने किछु बाजए चाहै छल आ ने पुतोहु। विष्णुमोहनकेँ पत्रक माध्यमसँ भेँट करए कहलखिन। एबासँ विष्णुमोहन नासकार केलक।

बेटाक असहयोग देखि कृष्णमोहनकेँ अपन केलहामे दोख भेटलैन। कहुना घीचि-तीड़ि साल भरिक अगाति आठ बर्खक बिच्चे दुनू बेकती मरि गेला।

अखन धरि दुनू भैयारी इन्द्रमोहन-विष्णुमोहनक बीच दू अलग-अलग समाज बनि गेल छल। ओना, गामक समाजसँ बाहरक समाजक डारि फुटल मुदा दूरी एते बनि गेल जे समकक्षपर आबि गेल। सासुरक सम्बन्धक संग विभागीय तेते हित-अपेछित विष्णुमोहनकेँ बनि गेल छै जे अपन सालक छुट्टीए हरा जाइ छइ।

ओना, विष्णुमोहनक बिआहमे कृष्णमोहन नगद-नारायण लऽ कऽ बैंकमे जमा नै केने रहैथ, मुदा तँए विष्णुमोहनक नामे बेटी-जमाइक नाओंपर जे सासुरक परिवारमे बजट बनि गेल छल ओकर हकदार तँ बनियेँ गेल छल। भोपालमे जइ दिन डेरामे विष्णुमोहन पहुँचल, तीनू कोठरी तँ भरिये गेल रहइ। केना नै भरितै, जइ परिवारक बिआहक बजट पचीस लाखमे चलि रहल अछि तइमे जिनगीक उपयोगी वस्तु केना छोड़ल जाएत। अखन धरि विष्णुमोहनकेँ तेना भऽ कऽ कोनो जिनगी नै समाएल छेलइ। नै समाएब भेल, जहिना किसान हुअए आकि वेपारी आकि नोकरिहारा, आर्थिक स्तरक हिसाबसँ जिनगी बना जीवन धारण करैए। अगुआएल-पछुआएल साल भरिसँ लऽ कऽ जिनगी भरिक किछु आवश्यक वस्तुक पूर्ति सासुरसँ भइये गेल रहइ। जहिना ग्रीन रूममे पात्र अपन, सात्विक हौउ आकि राजसी आकि तामसी, मेकअप केलाक पछाइत स्टेजक अधिकारी तँ भइये जाइत अछि। विष्णुमोहनकेँ सएह भेल। एक तँ ओहन परिवारक लड़की संग बिआह भेने जहिना परिवारसँ

हराएल विष्णुमोहन तहिना अनुभवी पत्नी। ओना, रेखा अखन धरि माने बिआहसँ पहिने धरि, कौलेजक छात्रा रहली मुदा परिवारक क्रिया-कलाप देखने अपन जिनगीक ऊपरक अनुभव तँ भइये गेल रहैन। ईहो कोनो हराएल बात थोड़े छी जे बिआहसँ पहिने, बेटा भलेँ पिताक छत्रछायामे रहि नै बुझि पाबए मुदा बेटी तँ सभ जनिते रहैत जे हमरा ऐ घरसँ जेनाइ अछि। आन घरकेँ अपन घर बनाएब अछि...।

तखन तँ घर बनबैक केहेन कारीगर अछि निर्भर करैए तैपर। जहिना सभ शक्तिकेँ हाथमे रखि करए चाहैए तहिना रेखो दुनू परिवारमे केलैन। समैयो अनुकूल। समय अनुकूल ई जे ऊपरक परिवारसँ आएल रहने ऊपर चढ़बैमे ढलान रहैत। ढलान ई जे जहिना सभ आगू बढ़बकेँ उचित उदेस बुझैए तहिना रेखो किए ने बुझती। जखन ऊपर श्रेणीक सुआगत मध्यसँ नै करब तँ सुआगत की भेल? भलेँ अपमान नै कहबै मुदा सुआगतो तँ नहियेँ भेल।

परिवारक डोरकेँ रेखा ऐ तरहेँ पतिकेँ खींच धकिया नेने जे विष्णुमोहन दिन-राति वौआए लगल। एक तँ बैंकक नोकरी समयपर आफिस पहुँचब अछि, नहाइ-खाइ, रस्ता-बाटक समय अपन। तैसंग काजक भार एते जे एको मिनट देरी भेने काजक सम्पादनमे कमी औत जे अतिरिक्त समयमे पुरबए पड़त। खाएर जे हौउ, विष्णुमोहनक साख तँ आफिसमे छैहे।

नोकरीक शुरूक सालमे विष्णुमोहन एक-आध बेर गाम एबो कएल मुदा रसे-रसे एक नव समाजक पकड़ आ दोसर गाम-समाजसँ बिछोह हुअ लगलै। भइये गेलइ। बिछोहक अनुकूल परिस्थिति बनि गेल रहइ। अनुकूल ई जे, सालमे मात्र पचीस दिनक छुट्टी भेटै, जेकरा छुट्टी नै मानल जाइ छेलइ। एक तँ गामक रस्ता, सवारीक असुविधासँ तीन दिनक, दोसर गाड़ी-सवारीक रस्ता भरिगरो आ उकड़ुओ होइते छइ। तइमे छोट-छोट बच्चाक चलब आरो भारी होइ छइ। दोसर जइ नव समाजमे

आगमन भेल छेलै ओइमे दू तरहक एहेन भूमि छेलै जे भरपुर उर्वर छेलइ। ओ भूमि छल सासुरक परिवारक सम्बन्धीक संग सम्बन्ध बढ़ब आ दोसर छल बैंकक संगीक संग। दुनूक बीच एहेन उत्सवी माहौल बनल रहै छल जे पचीस दिनक छुट्टीक पते नै पाबि पबै छल। किछु मेडीकल सेहो चलि जाइ छेलइ। जइ सभसँ गाम छुटि गेलइ।

ओना, अपन भार हटबै दुआरे इन्द्रमोहन पत्रक माध्यमसँ जानकारी दैते छल मुदा जहिना काजक अनिच्छाबलाकेँ रंग-बिरंगक बहाना फुरैत तहिना बहाना बना विष्णुमोहन खेप जाइ छल। ऐ तरहेँ पनरह बर्ख बीति गेलइ। ओना, पनरह बर्खक बीच विष्णुमोहनक डेरामे वस्त्र-जात, इलेक्ट्रोनिक वस्तु, बरतन-बासन इत्यादि तेते भऽ गेल छेलै जे अपन सातो कोठरीक मकान भरि जकाँ गेल छेलइ। अपन मकान, अपन गाड़ी भइये गेल छेलइ। लोकोक आएब-जाएब रहने, मकानक ऊपरमे पहिने समियाना तेकर पछाइत ऊपरो मकान बनाएब जरूरी भेलइ। कियो जमीनपर बैस जिनगीक रस-रहस्य बुझैत तँ कियो तीन तल्ला-पँच तल्लापर, दुनूक उदेस एक केना!

बीचमे एकटा आरो भेल। भेल ई जे गामो आ अगलो-बगलक मिडिल स्कूलक शिक्षक दस दिन घुमैक विचार मध्य प्रदेशक केलैन। भोपालसँ यात्राक आरम्भक विचार केलैन। गौंआँ विष्णुमोहन तँए असुविधा नहियेँ हेतैन। तैसंग ईहो विशेष जिज्ञासा जे तीन दिसम्बर 1984 इस्वीक महुराएल गैस घटनाक फल-कुफल देखब सेहो छेलैन।

दसो गोरेक बैच भोपाल स्टेशन उतैर विष्णुमोहनकेँ फोन केलैन-

“हम सभ घुमैक विचारसँ आएल छी।”

गौंआँक बात सुनि विष्णुमोहन जवाब देलकैन-

“अखन हम भोपालसँ अस्सी किलोमीटर हटि मित्रक ऐठाम छी। बैंकक डायरेक्टरसँ लऽ कऽ सभ छैथ। तँए नै किछु कऽ सकब।”

ओना दसो शिक्षक मिडिले स्कूलक रहैथ मुदा विचार दस रंगक रहैन। किनको विचारमे झंझ-मंझ भेनौं अपनामे एकमत सेहो भइये जाइत, मुदा एकाध घन्टा घमर्थनमे चलिये जाइ छेलैन। विष्णुमोहनक उत्तरक प्रतिक्रिया भेल? पहिल शिक्षकक विचार-

"अस्सी किलो मीटरपर रहए आकि साए किलोमीटरपर, मुदा अँटकैक जोगार तँ कऽ सकै छल, सेहो कहाँ केलक।"

दोसर गोरेक कहब-

"नोकरिहारा अनका हाथक भऽ जाइए तँए अपना जुतिये चलब कठिन भऽ जाइ छइ। अपना सभ अपना भरोसे ने आएल छी, बड़बढ़ियाँ विष्णुमोहन गौंआँ छी अपन समाचार कहलिऐ।"

अहिना दसो गोरेक विचार दस रंगक आएल। अन्तमे तँइ भेल जे अनेरे बक्-बातमे समय गमाएब उचित नहि। कियो अपना लेल करैए, सभकेँ अपन-अपन जिनगी छै, अपन-अपन काज छइ।

सहमति बनिते नहा-धो कऽ स्टेशनसँ निकैल होटलमे खेनाइ खा टेम्पू पकैड़ गैस कारखाना देखए विदा भऽ जाइ गेला। तीन दिसम्बर उन्नैस साए चौरासी इस्वीमे मिथाइल आइसो साइनेट गैसक रिसाव भेल जइमे दू लाख पचास हजार लोक मरल। जहिना 6 अगस्त 1945 इस्वीकेँ जापानक नागाशाकीमे आ हिरोसिमापर घटना भेल आ तीन पीढ़ी तक लुल्हा-नेंगराक जन्म होइत रहल तहिना ने भोपालोमे भेल। साँची-स्तूफ, अन्नपूर्णा देवीक मन्दिर, शिप्रा तट (पहाड़ी घाट) हॉडी खोह, जे तीन साए मीटर गहींर छै, भेड़ाघाटक चौंसैठ जोगिनी मन्दिर, दुर्गावतीक संग्राहालय, माइक बगिया जे नर्मदा आ सोनभद्रा नदीक उद्गम स्थल छी, खजुराहो घुमैत-घुमैत दसो दिनक छुट्टी बीति गेलैन। स्कूलो खुजैक समय भेने सभ कियो गाम चलि एला।

गाम एला पछाइत विष्णुमोहनक काज समाजक मंचपर आएल।

जेते मुँह तेते विचार। मुदा भेल ई जे जहिना राज मिठाइ जिलेबी आ मुरहीक प्रेमी कचड़ी घीउक आकि तेलक लोहियामे पएर रखते आँगन-अगनेय छुबि प्रणाम करिते शक्ति पाबि ऊपर आबि अपन रूप सजबैए तहिना विष्णुमोहनक बेवहारक प्रतिक्रिया भेल। एहेन नै भेल जे पुरी जकाँ लोहियाक मठौठे पकैड़ छलछला, खेनाइ पूर्ति करैत। एक स्वरसँ समाजक स्वर सुर-सुरा उठल। जे समाजक संग जेहेन बेवहार करत ओकरो संग समाज ओहने बेवहार करतै। जघन्य अपराध जँ समाजक बीच निंदित नै हएत तँ कागजक बीच लिखल कानून-कायदा कथी कऽ सकैए। भेल ई जे विष्णुमोहन समाजसँ अघोषित वहिष्कृत भऽ गेल।

जहिना जेठुआ बर्खा भेने माछक अवार चलै छै तहिना एन.एच 57क बनने गामो-घरमे अवार चलल। जइ सोभावक इन्द्रमोहन छैथ ओ लूटेबे करता। मुदा से नै भेल। पाँचो कट्ठाक घराड़ीमे अढ़ाइ कट्ठा पड़ने भैयारी केतौ बाधा नै भेलइ। कारबारी इमानदार भेटलैन। एक तँ घराड़ी तैपर घर। निच्चाँ पजेबा ऊपर चदरा घर, कोठा भावक संग घराड़ी भावमे बिकाएल। करीब दू करोड़क सौदामे सबा करोड़ इन्द्रमोहनकेँ हाथ लगलैन।

जमीनक सभ काज सम्पन्न भेला पछाइत विष्णुमोहनकेँ उड़न्ती जानकारी भेल। भैयारीक हिस्सा, तहूमे मरौसी जमीन। तैसंग इन्द्रमोहनक सबा करोड़ पाँच करोड़ बनि गेल छल। भूख तँ भूख छी, नै तँ बैंके किए दिवालिया भऽ जाइए। जइमे रुपैआक ढेरीए रहै छइ। तीन दिनक छुट्टी लऽ विष्णुमोहन ई ठेकना गाम विदा भेल जे पहुँचते भैयाकेँ कहबैन, बाँटि लेब। नै तँ समाजकेँ बैसा बँटबा लेब। एक तँ ओहिना बैंकक दरमाहा, तैपर कमीशनक संग उपहार पाबि विष्णुमोहनक चसकल मन! तैपर पाँच करोड़ सुनि मनसूबा आरो बढ़ौलकै। जहिना पत्नी विचारक तहिना समाजक लोक, उपकार छोड़ि अपकारक विचार किए देतैन। एतबे किए, बैंकक सहाएब गामक सहाएब नै? ओही गामक बेटा

ने भोपालमे बैंकक सहाएब बनल अछि, तोहूमे ओहेन राजक बासी छी जइमे बैमानी-शैतानी छइहे नहि।

ई बात विष्णुमोहन बुझि नै पौलक जे झगड़ा भेने गदहो मारि-मरौबैल करा दइए तँए कि गदहाक बीआ उपैट जाएत। जेते समाज तेते रंगक गदहा। जत्ता उठबैसँ ओटोमेटिक मशीन धरि दसटा गदहाकेँ मिला बना देल जाइ छै आ पहाड़ी क्षेत्रमे पाथर लादि घुमबैत रहै छइ। तेतबे नहि, समाजक नारी पकड़ैक थर्मामीटर बनाएब सेहो सीखनहि छल। गाम कि अखनो शहर-बजार भेल अछि जे फटका-फुटकीमे (जुआ) करोड़क सौदा भऽ जाइए। हजार-बजार बेसीसँ बेसी भेल अछि तइमे जँ किछु आगू बढ़ि वेपार बढ़ाएत तँ अनेरे मानो-प्रतिष्ठा बढ़ि जाएत आ कारोबार असानीए-सँ चलि जाएत। मनो गवाही दइये देलक।

विष्णुमोहन गाम आएल। गामक सीमानपर पएर दइते विष्णुमोहनकेँ अनभुआर जकाँ बुझि पड़लै। मनमे उठलै जइ समय पढ़लौं पिताक देल खर्चमे भैया-इन्द्रमोहन एकोबेर नकारि नै सकारि लेलैन। ओहूमे तँ हुनकर हिस्सा छेलैन्हे। मनमे उठिते जेना कम्प्यूटर हिसाब जोड़ैत तहिना जोड़ा गेलइ। फेर मनमे भेलै जे अनेरे मन बौआइए। ओइ दिन सझिया परिवार छल, अखन हिस्सेदार छिऐन। दुनियाँमे अपन हिस्सा के छोड़लक जे छोड़ब, पाँच करोड़ सुनलौं, चारियो करोड़ तँ सत् हेबे करत। बड़ करता आ सप्पत खा कऽ कहता तैयो तीन करोड़सँ निच्चाँ नहियेँ हएत। मने-मन हिसाबक गरो अँटबैत आ टेम्पूसँ रस्तो तँइ करैत।

दरबज्जापर विष्णुमोहनकेँ अबिते इन्द्रमोहनक नजैर पड़ल। ओना, विष्णुमोहन अपन अदा अदए करैत पएर छुबि इन्द्रमोहनकेँ प्रणाम केलक मुदा नजैर अँकड़ाएल रहइ। जहिना अँकड़ाएल चाउरक आँकड़ होशियारि भनसीआ अदहन लगबैसँ पहिने निकालि लैत तहिना इन्द्रमोहन नजैरसँ निकालि लेलक। मुदा कि ओ बिसैर गेल जे अपन हिस्सा पेट काटि जइ भाएकेँ पढ़ेलक, वएह भाए केते पेट काटि

परिवारकेँ देखलक। अपना पाछू बेहाल अछि। ओ बेहाल भेल अछि तइसँ हमरा? तखन तँ ओकरो घर-घराड़ी छिऐहे, परिवार अछिए।

खेला-पीला पछाइत विष्णुमोहन इन्द्रमोहनकेँ पुछलक-

"भैया, एन.एच.बला पाइ की भेल?"

पाइक नाओं सुनिते इन्द्रमोहनक मन ठमकल। ठमैकते बाजल-

"देखिते छहक जे घराड़ियो घुसैक गेल। पुरना घराड़ीक आगूए-सँ तेना कटि गेल जे घराड़ीक रूपे बिगाड़ि देलक। बान्ह सड़कक काजे एहेन होइए जे केकरो नाक कटैए तँ केकरो बनबैए। खाएर जे हौउ, जे पाइ भेटल तइमे दोसर घराड़ी कीनि घर बनबैत खर्च भेल।"

विष्णुमोहन-

"सभ खर्च कऽ देलिऐ, हमर हिस्सा?"

इन्द्रमोहन-

"तोहर हिस्सा तँ छेबे करह। पाँच कट्ठा घराड़ीमे अढ़ाइ कट्ठा पड़ल, ओते तँ हमरे भेल किने?"

"जेते पाइ अहाँकेँ भेल ओते पाइक चीज रहल।"

"चीजक उदए-प्रलए अहिना होइ छै, जँ से नै रहल तँ अढ़ाइ कट्ठासँ कम थोड़े भऽ गेल।"

विष्णुमोहनक मनसूबामे धक्का लगल। मुदा उत्तरो तँ हल्लुक नहियेँ अछि जे धड़फड़मे किछु भऽ जाएत। बाजल-

"भैया, ईहो तँ नीक नहियेँ भेल जे, नीक अहाँक भेल अधला हमर रहि गेल।"

बुझबैत इन्द्रमोहन बाजल-

"देखहक सरकारी काज छिऐ, सभ काज पछुआएले डेटमे चलै छइ। तैठाम जँ सतर्क भऽ काज नै करितौं आ बुड़ि जाइत तँ केकर

बुड़ैत।”

“हमरो तँ जानकारी दइतौं?”

“जहियासँ गाम छोड़लह तहियासँ बुझियो कऽ की केलह। ओहेन भारी भुमकम भेल जे घरक देबाल राँइ-बाँइ भऽ गेल, तैपर बाढ़ि आबि तेना-झमाड़लक जे सभ परानी मिलि ओसारक चौकीपर बैस यएह विचारि लेलौं जे सभ तूर संगे मरब। कियो जीबैत रहब तखन ने दुखक दुख हएत, जँ सभ संगे चलि जाएब तखन के केकरा ले कानत।”

पोखैरक माटि, जमीन नै पाबि विष्णुमोहनक क्रोध जगल। बाजल-

“अदहा हमर छी हम लइये कऽ रहब!”

छोट भाइक बात सुनि इन्द्रमोहन सकदम भऽ गेल। बकार बन्न भऽ गेलइ। मनक बेथाकेँ मनेमे मसोरि मोरिया देलक। बिनु किछु बजैत मुड़ी गोंति परिवारक भूत-भविस पढ़ए लगल। पढ़ए लगल ई जे गाम छोड़ि जे बाहर बसि गेल ओकरा की मानल जाए। मुदा मानैसँ पहिने सम्बन्ध तँ देखए पड़त। कियो गामक बेच बाहर कीनि घर बना अपनो रहैए आ भड़ो लगबैए। कियो गामक उत्पादित पूजी खड़का उत्पादित पूजी ठाढ़ कऽ लइए। कियो बैंकमे सूदिपर लगा दइए। मुदा विष्णुमोहन तँ से नै केलक। मन ठमकलै, ठमैकते ठमठमाएल। ठमाइते जेना कोनो पौध-गाछ जगह बदलब स्वीकाइर लइए तहिना इन्द्रमोहनक मनमे उठल, परिवारसँ समाज चलैए समाजक गति परिवारमे निहित छै तैठाम विष्णुमोहनक की छै, जँ से नै छै तखन तँ गाम-समाजसँ हराएल-भुतियाएल रहल। हराएल-भुतियाएलक की हेबा चाही। एक तँ ओहुना बारह बर्खक हराएलकेँ कुशपूत बना मटिया देल जाइए, विष्णुमोहनो तँ सहए भेल। अपन सहोदर भाए छी, जरूर छी, मुदा दुनूक जिनगीक सम्बन्ध कहाँ अछि। ने खाइ-पीबैक आ ने रहैक। ने बाल-बच्चाक पढ़ाइ-

लिखाइक आ ने बर-बेमारीक संग परिवारक काजक। हमरो बेटा अछि, सिदहा दऽ अस्तुरासँ जन्म केश कटा मुड़न करेलौं। ओकरो बेटा छै लाखसँ ऊपरे खर्च केलक। अपन बेटा पनरह बर्खक उमेरमे मैट्रिक पास केलक ओकर दसे बर्खमे कौलेज पहुँच गेल। जेते इन्द्रमोहन पाछू उनैट परिवार दिस तकैत तेते ओझरौठमेमे पड़ल जाइत।

अन्तमे यएह विचार उठलै जे पहिने परिवार अलग हएत तखन ने हिस्सा-बखड़ाक प्रश्न उठत। जाधैर से नै भेल ताधैर तँ परिवार चलल। बाजल-

"बौआ, आबेशमे नै आबह। छोट भाए छिअ, बुझा कऽ कहै छिअ। पहिने ई कहऽ जे परिवारकेँ फुट-फुट मानल जाए आकि समलित। जँ समलित मानबह तखन तँ परिवार चललह, जँ अलग मानबह तँ कहियासँ मानबह से पहिने परिछा लेबह तखन ने?"

इन्द्रमोहनक विचारक कोनो असैर विष्णुमोहनकेँ नै भेल। जहिना कियो आगूमे बैसल रहैए मुदा मन मेलामे घुमैत रहै छै, जोरोसँ बजला पछाइत नै सुनि पबैए तहिना विष्णुमोहनक मन करोड़क केलकुलेशन करैत। दर्जनो नवका गाड़ी कीनि रोडपर दौगा देबइ। भोपालक समाजमे भलेँ नै मुदा भोपालक परिवहन समाजमे तँ अपन उपस्थिति दर्ज कराइए लेब! वएह ने लतड़ैत-चतड़ैत भोपालक समाज बनत। अवसरक चुकल मनुक्खकेँ डारिक चुकल बानरक गति होइ छइ। पाछू हटब कायरता हएत। बाजल-

"भैया, जइ विचारसँ आएल छेलौं ओइमे अहाँ बाधा उपस्थित करै छी, कियो अपन जिनगीक मालिक होइए।"

विष्णुमोहनक विचारकेँ स्वीकारैत इन्द्रमोहन बाजल-

"हँ, होइए।"

विष्णुमोहन-

“तरवन?”

“बेकतीक सामुहिक रूप परिवार छी। बेकतीगत विचार सामुहिक रूपमे बदैल जाइ छै, जइमे सबहक जिनगी देखल जाइ छइ।”

एक दिशाक बाटमे आगू-पाछूक दिशा बोध असानीसँ होइए मुदा विपरीत दिशामे असंभव भऽ जाइत अछि। वैचारिक रूपमे दुनू विपरीत दिशामे। तँए सहमत हएब कठिन। विष्णुमोहन बाजल-

“भैया, सभ दिन आदर करैत एलौं, अखनो कहै छी जे ओहेन परिस्थिति ने बनि जाए जे थाना-पुलिस दरबज्जापर आबए!”

विष्णुमोहनक बात सुनि इन्द्रमोहनक मन मुस्कियाएल। बाजल किछु ने। मनमे उठलै नककट्टा दुसै नाकबलाकेँ। आदर करैए आकि समाजमे नाक कटा देलक जे समाजक प्रवुद्ध वर्ग घुमैले गेला आ चोर जकाँ गएब भऽ गेल! सएह आदरक बात करैए। छोट भाएकेँ परिवारक अंग बुझि अपन बाल-बच्चाक हिस्साकेँ जेकरा पाछू गमा देलौं सएह आदरक बात करैए। हराएलो-भुतियाएल जँ अनठियो दरबज्जापर आबि जाइ छैथ तँ एक लोटा पानिक आग्रह करिते छिऐन आ परिवारक अंग भेल ओ! मुदा हाथक आँगुरो तँ अपन महत रखते अछि। नीक हएत जे समाजकेँ मानि बेकतीकेँ समूह दिस बढ़ा दिऐ। बाजल-

“बौआ, थाना-पुलिस अबैत-जाइत रहत मुदा गामक खेत-पथार केतौ ने जाएत, जएह गाममे रहत ओकरे हिस्सामे रहतै। वृद्ध-वेवा जकाँ केतए जाएत। नीक हएत जे जहिना समाज हमर छी तहिना तोरो छिअ किने, समाज जे कहता से मानि लेब।”

इन्द्रमोहनक विचार विष्णुमोहनकेँ जँचल, जँचिते बाजल-

“तीन दिनक छुट्टीमे आएल छी, काल्हि समाजकेँ बैसा पाइ-पाइक हिस्सा बाँटि लेब।”

विष्णुमोहनक विचारकेँ इन्द्रमोहन चुपचाप सुनि लेलक। समाज दिस हियासि विष्णुमोहन सोचए लगल। केतेमे सौदा पटत। एहेन तँ नै हुअए जे घानीसँ बहतौनी भारी भऽ जाए। कोनो कि राज-पाटक झगड़ा छी जे दखला-दखली हएत। पूजीक विवाद छी पच्चीस प्रतिशत तक पूजी लगौल जा सकैए। कोट-कचहरीक भाँजमे जाएब बूड़िबकी हएत। अकासमे उड़ैत चिलहोरि जकाँ ऊपरेसँ लूझि लेत। सेहो नीक नहि। गाम कि कोनो शहर बजार छी जे घटनाक दाम-दिगर होइ छइ। गाम छी खुदरा-खुदरी कारोबारक। सम्हैर कऽ विष्णुमोहन गाम दिस विदा भेल।

हाइ स्कूलक संगी सूर्यमोहन छैथ। पुरान संगी। महाभारत केतबो पुरान हएत तैयो संग पुरबे करत। सूर्यमोहन विद्यालय जेबाक तैयारीमे जुटल रहैथ। नहाइले डोल-लोटा नेने कलपर पहुँचल छला। विष्णुमोहनकेँ देखिते मन भनभना गेलैन। की एहेन मनुक्खक मुँह देखब नीक हएत? मुदा मुहोँ घुमाएब तँ नीक नहियेँ। जँ कहीं अपने आदति जकाँ बुझि लिअए जे फल्लाँ मुँह चोरा लेलक। आँखि उठा बजला-

“विष्णुमोहन!”

विष्णुमोहन-

“हँ भाय, तोरेसँ काज अछि।”

काज सुनि सूर्यमोहन बजला किछु ने मुदा मने-मन विचारए लगला जे कोन काज छइ। ने एक गाम-समाजमे रहै छी, ने एक बेवसायसँ जुड़ल छी आ ने एक परिवारक छी, तखन कोन काज हेतइ। तँए पुछि लेब नीक हएत। मुदा जइ काजक तैयारीमे छी, बीचमे जँ दोसर काजक चर्च उठाएब तँ अनेरे अपन काज धकिया कऽ घटिया जाएत। नै बुझने मनमे खुट-खुटी बनि गेने सभ काजकेँ खुटखुटौत। अँटाबेश करैत बजला-

“अधखरूआ नहाएल छी, ताबे दरबज्जापर बैसह। दुनू गोरे खेबो

करब आ बीचमे गपो कऽ लेब।"

सूर्यमोहनक बात सुनि विष्णुमोहनक मनमे ओहेन आशा जगल जेहेन नोनक सेरियत लोक दइए। झूठ-फूस बजैले आ करैले दिन-राति तँ पड़ले रहैए, खाइकाल किए कियो करत। मुदा खाएब तँ गड़बड़ हएत। तैसंग ईहो भेल जे केकरो नहेबाकाल लगमे ठाढ़ रहब उचित नहि। जखन काजे आएल छी तखन काजेक महत ने मानए पड़त। जौं से नै काजक बेर जँ धड़फड़ा जाएब तखन तँ काजेमे विघनेस हएत।

दरबज्जाक ओसारपर रखल कुरसीपर बैस विष्णुमोहन अपन सतरंजक गोटी मने-मन पसारिते छल आकि सूर्यमोहन डोल-लोटा रखि, चारपर धोती पसारि डेढ़ियेपर सँ बजला-

"दू गोरे छी, तँए दूटा थारीमे परसने आउ।"

सूर्यमोहनक बात पत्नी सुनि कऽ खखैस देलखिन। सूर्यमोहन बुझि गेला जे समाद पहुँच गेल। मुदा बिच्चेमे विष्णुमोहन बाजल-

"हम नै खाएब, अखन खेबाक इच्छा नै अछि।"

विष्णुमोहनक नकार सुनि सूर्यमोहन दोहरबैत बजला-

"एकेटा थारी आनब।"

कहि विष्णुमोहनकेँ पुछलखिन-

"कोन काजे आएल छह से पहिने बाजह। जँ छोट-छीन हएत तँ बिच्चेमे कऽ लेब।"

जहिना कियो रचनाकार अपन रचनाक सविस्तर भूमिका लिखैत तँ कियो अपन रचित रचनाकेँ भूमिकाक प्रयोजने ने बुझैत तहिना विष्णुमोहन चौहद्दी बन्हैत बाजल-

"भाय, अपन सभ तँ एक्के हाइ स्कूल तक पढ़ने छी, हमर दिन घटल तँ आन राजमे कमाइ छी तोहर बढ़लह तँ गामेमे मौजसँ रहै छह।"

विष्णुमोहनक बातक अर्थ नीक जकाँ सूर्यमोहन नै बुझि सकला। नि:प्रयोजन बुझि बजला-

“अखन हमहूँ धड़फड़ाएल छी तँए समैयक हिसाबसँ बाजह?”

विष्णुमोहनक मन अँटैक गेल। तैबीच सूर्यमोहनक मनमे उठलैन, कहिया केतए हाइ स्कूलसँ निकललौं। तैबीच गंगा धारक केते पानि बहि समुद्रमे चलि गेल, ई कथी कहए चाहैए। माथक टेटर देखि नै रहल अछि। गाममे हमरो घर-परिवार अछि एकरो छै, मुदा जखन भोपाल घुमए गेलौं, ओइठाम तँ ओकरेटा घर छेलै, तैठामक बेवहार बिसैर गेल। तैबीच अदहासँ बेसी भोजन सेहो कऽ लेलैन। परीक्षाक वारनिंग घण्टी जकाँ बजला-

“झब दऽ जे कहबाक छह से कहऽ, नै तँ विद्यालयसँ आएब निचेन रहब तखन कहिहऽ।”

कहि लोटा उठा पानि पीब अधढ़कार करैत विष्णुमोहन नजैरपर नजैर देलैन। नजैर पड़िते विष्णुमोहन बाजल-

“भाय, भैयारीक पनचैती करेबाक अछि।”

पनचैती सुनि सूर्यमोहनक मन ठमकलैन। बात बुझैसँ पहिने बजला-

“हम कि कोनो गामक पंच छी। हाइ स्कूलक शिक्षक छी। किए लोक हमर बात सुनत। गामक झगड़ा दन पड़िछबै दुआरे सरपंच छै, ओकर कमिटीक पंच छइ।”

विष्णुमोहनकेँ बुझैमे देरी नै लगलै जे संगी भऽ कऽ टारि रहल अछि। मन ममोड़ैत बाजल-

“भाय, तीनियेँ दिनक छुट्टीमे आएल छी, तइमे दोसर दिन बीतिये रहल अछि, तँए चाहै छी जे जल्दवाजीमे काज निपटा समयपर घुमि जाइ।”

विष्णुमोहनक विचारकेँ ठेलैत सूर्यमोहन कहलखिन-

“परिवारक बीचक बात छी। एना धड़फड़ेने थोड़े हेतह। खैर हम संगी छिअ तँए एते गछै छिअ जे साँझूपहरक समय देबह। मुदा असगरे नहि, गाममे जे बुझनुक लोक छैथ हुनको सभकेँ संगोरि लिहऽ।”

सूर्यमोहनक विचारकेँ अपन समयसँ विष्णुमोहन मिलबए लगल। गाममे जेते बुझनुक लोक छैथ, सबहक संगोर तँ असान नहियेँ अछि। मुदा जँ अपने विचारे चलब तँ सूर्यमोहनो कहीं छिटैक जाएत तखन तँ आरो पहपैट हएत जइसँ बानरक करहर उखाड़ब भऽ जाएत। उखड़लहो भँसिया जाएत आ बिनु उखड़लोहो पानिक तरक माटिमे सीरबेधू भेल रहत। तैबीच सूर्यमोहन कपड़ा पहीर साइकिल निकालि ओसारक निच्चाँ भऽ बजला-

“जहिना तूँ बुझैत हेबह जे संगी भऽ कऽ नीक जकाँ कान-बात नै देलक तहिना तँ अपनो कानपर बात लधले अछि। जेकर काजक भार उठौने छिऐ, जँ उचित समयपर ओकरा नै पुड़ेबै, से केहेन हएत। तैयो एते कहै छिअ, सौंझुका समय देलियह।”

कहि साइकिलपर चढ़ि सूर्यमोहन विद्यालय विदा भेला। सूर्यमोहनक बेवहार विष्णुमोहनकेँ जेते नीक लगक चाही तेते नीक नै लागल। मुदा उपैयो तँ दोसर नहियेँ छइ। अपना काज बेरमे लोक गदहोपर चढ़ैले तैयार होइते अछि। फेर मनमे उठलै जखन एते दिनक पुरान संगीक एहेन बेवहार भेल जे संग नै रहल तखन अनकर केहेन हएत। नीको भऽ सकैए, अधलो भऽ सकैए। ओह! दुनू भाँइक बीच कोनो कि झगड़ा झंझट अछि जे अनेरे समुद्र उपछब, आपसी बुझारैत छी। एको गोरेसँ काज चलि सकैए।

साइकिलपर चढ़िते सूर्यमोहन धड़फड़ा गेला। खुशीसँ मन चढ़ि गेल रहैन। दिलक धड़कन सेहो तेज भऽ गेल रहैन। एहेन लोककेँ एहने

बेवहार उचित छी। गामक पूजी उठा-उठा लोक शहर-बजार गढ़ि रहल अछि! गाम जेतै-क-तेतै पड़ल रहि गेल अछि। आब कोन गाम एहेन अछि जेकर बाहरी आमदनी करोड़क नै छइ। एक तँ दैवी प्रकोप दोसर मनुक्खक प्रकोपसँ उजैड़ रहल अछि। तरोटा जाँत जकाँ माटिपर कीलमे गाड़ल अछि, मुदा सभ हितैषीक सोहर गामेक गाबि रहल अछि।

गाम दिस विष्णुमोहनकेँ बढ़ैत देखि इन्द्रमोहन सेहो चिलहोरि जकाँ टोह लगबए लगल। पहिल समदिया कहलकैन जे ओ सूर्यमोहन मास्टर साहैब ऐठाम गप-सप्प करै छैथ। ओना, समदियाक बातपर इन्द्रमोहनकेँ सोलहन्नी बिसवास भेल, मुदा अपन आरो मजगूती दुआरे ओही रस्ते पार सेहो कऽ लेलक, दूरेसँ सूर्यमोहनोक नजैर इन्द्रमोहनोपर पड़ल आ इन्द्रमोहनोक सूर्यमोहनपर, मुदा विष्णुमोहन उतरल नजैर नै पौलक। सूर्यमोहनक सोझहासँ हटिते इन्द्रमोहनक अबाज कानमे मोबाइलिक घण्टी जकाँ टनटनए लगल।

टनटनए ई लगल जे भोपालसँ घुमला पछाइत भरि ढाकी विष्णुमोहनक उपराग सूर्यमोहन सुना चुकल रहैन। जँ दुनू भाँइ दू छेलौं तखन अनकर उपराग हम किए सुनी। मुदा जँ अपन समाजक परिवार बुझि कहलैन तँ उचित-उपकार दुनू केलैन। परिवारक बीच अधला वृत्तिक प्रवेश जँ अपने नै बुझि पाबी आ दोसर जँ बुझहा दैथ तँ ओकरा की कहबै। कहुना तँ पितेतुल्य छी किने। जँ ओहेन जघन्य वृत्ति भऽ जाए जे माफी मंगैक जरूरत भऽ जाए तँ किए ने मांगि ली। भीख मांगब थोड़े छी जे कलंक लागत। भिक्षाटन छी, समैयक दोख भेल। सबहक मति सदिकाल एक रंग थोड़ै रहै छै, तहूमे नवकवड़ियाकेँ तँ आरो बेसी होइ छइ।

सूर्यमोहन ओइठामसँ घुमैकाल विष्णुमोहनक मनमे उठल। भैया संग ने गप-सप्प भेल, मुदा भौजी थोड़े बुझलैन जँ भैया-भौजी लग बाजल हेता, सेहो भाँज लगि जाएत जँ से नै बाजल हेता तँ अपन विचारक

अनुकूल बना किए ने दुनू बेकतीमे ओझरी लगा दिऐन। तेतबे किए, जँ पक्षमे बाजि जेती तँ हुनके पंच बना लेब। एक तँ परिवारक बात परिवारेमे रहि जाएत दोसर तीनमे जँ दू एक दिस भऽ जाएब तखन आगूओक दुआरमे धक्का मारि सकै छी। घरपर अबिते भैजी लग बाजल-

"भौजी, मनसँ चाह बनाउ, दुनू गोरे एकठाम बैस चाह पीब।"

हँ, हूँ बिनु किछु बजने श्याम सुनरि चाह बनबए लगली। दुनू भैयारीक बात मनमे उठलैन। अपनो पतिक चेहरा, धिया-पुताक पढ़ाइ-लिखाइक संग जिनगी, ओना घर-दुआर आ परिवारक रहन-सहन नै देखने तँए तइ दिस नजैर नै गेलैन। मुदा अंगरेजिया देह तँ सेझहामे रहबे करैन। मुदा ई सभ तँ कर्मक खेल छी। जेहेन जगह रहै छै तेहने ने कर्मो खेलै छइ। चाह बनि गेल। दिअरक आग्रह श्याम-सुनरि कटलैन नहि। किए कटती। एकठाम बैस खाएब-पीब अधले कथी भेल। ई तँ भनसियाक इमानक परीक्षा भेल जे जँ जहरे-माहुर मिला देने हेबै तँ अपनो मरब किने। तेतबे किए, केतेको दिअर भौजाइक दूध पीब मातृवत जिनगी सेहो ठाढ़ केने अछि।

दोसर चिस्की चाहक लैत विष्णुमोहन बाजल-

"भैया, बिगड़ल छैथ।"

"किए बिगड़ता?"

"से अहाँ नै सुनलिऐ?"

"भैयारीक बात किए सुनब?"

ओना, सूर्यमोहन स्कूलसँ आबि साँझ पड़िते इन्द्रमोहन ऐठाम जाइले तैयार भेला मुदा पहिल साँझ अकलबेर होइए तँए दोसर साँझ अबिते पहुँचला। दुनू भाँइ दरबज्जेपर, मुदा बाजा-भुकी किछु ने। जेना मने-मन दुनू गुर-चाउर मुँहमे रखने हुअए। दरबज्जापर पहुँचते सूर्यमोहन बजला- "हमरा होइ छल जे पछुआ गेलौं, मुदा अगुआएले छी। आरो के

सभ औता विष्णुमोहन?”

विष्णुमोहन- “दोसर कियो ने औता। अहाँ जखन आबिये गेलौं तखन अनेरे अनकर कोन काज अछि।”

विष्णुमोहनक बात सुनि सूर्यमोहनक मन ठमकलैन। ठमकलैन ई जे भैयारीक विवाद अदहा गाम होइए। अनेरे एते भारी मोटा अपना माथपर लेब उचित नहि। बजला-

“देखू, गौंआँ छी, तहूमे शिक्षक छी। गामक कोनो जवाबदेह लोक नै छी, तँए भार नै उठाएब मुदा अपन विचार देब। बाजू की कहैक अछि?”

विष्णुमोहन-

“अहाँकेँ तँ बुझले हएत जे एन.एच.मे घर-घराड़ी पड़ल जेकर मुआबजा भेटल, तइमे भैया हिस्सा नै देलैन।”

विष्णुमोहनक बात सुनि सूर्यमोहन बजला-

“ई तँ अहाँक बात भेल। इन्द्रमोहन अहाँ बुझा दिअनु।”

इन्द्रमोहन- “पहिने तँ परिवार बुझए पड़त। अखन धरिक जे परिवार रहल ओकर संचालन तँ हमहीं करैत एलिऐ। जहियासँ विष्णुमोहन गाम छोड़लक तहियासँ एक्को पाइक सहयोग नै केलक। बाढ़ि-रौदी, भुमकमक झमार हमरा लगल। खेतमे मोनि फोड़ि देलक तेकरा खेत बनेलौं, भुमकममे घर चिड़ीचोंत भऽ गेल, तेकरा बन्हलौं, कुटुम-परिवारकेँ जिआ कऽ रखने छी तखन हिस्सा कथीक आ हिस्सेदारी कथीक?”

जलाएल प्रश्न देखि सूर्यमोहन बजला- “हम समाज छी कखनो नै चाहब जे समाजकेँ नोकसान होइ।”

सूर्यमोहनक विचार सुनि इन्द्रमोहन बाजल- “एक तँ सबा करोड़ रुपैआ भेटल तइमे घराड़ी कीनि घर बनेलौं। घरो देखिते छी जे केतबो

परिवार बढ़त तैयो पचास बर्ख अभाव नै हएत। एते करैमे सभ रुपैआ सठि गेल।"

बमैक कऽ विष्णुमोहन बाजल-

"अहाँ झूठ बजै छी? पाँच करोड़ रुपैआ भेटल?"

सूर्यमोहन-

"केना बुझै छी?"

"जानकारी भेल।"

विष्णुमोहनक बेवहार सूर्यमोहनकेँ नीक नै लगलैन। बजला-

"जखन गाम छोड़ि अनतए चलि गेलह, तखन गामक सम्पैत अनतए जाइ! ई हम कखनो नै कहबह। एक तँ ओहिना रंग-बिरंगक जालक माध्यमसँ गामक सम्पैत जाइए रहल अछि, तैपर सोझहा-सोझही भैयारीक जाए, ई कखनो उचित नै भेल। तहूमे जखन भैयारीक विभाजन नै भेल अछि तखन लेनी-देनी कथीक। परिवार ठाढ़ भऽ चलैत रहत तखन ने समाज ठाढ़ हएत।"

आशा तोड़ि विष्णुमोहन बाजल-

"तखन हम गामसँ चलि जाइ?"

सूर्यमोहन-

"से किए कहबह। तूँ तँ अपने छोड़ि कऽ चलि गेलह।"

तेसर दिन विष्णुमोहन भोपाल विदा भेल।

❑

शब्द संख्या: 5696, तिथि: 25 जनवरी 2014

माघक घूर

नरक निवारण पाबैन अन्हरिया चतुरदसीक दिन, सतैहिया शीतलहरी अपन कड़कड़ाएल मस्त जुआनी पाबि पछिया हवाक संग विहुँसैत गतिये गुनगुनाइत बहि रहल छल। ओना, दुनू मीलि दिन-राति बहैत मुदा भोरहरबामे आबि आरो विकराल रूप पकैड़ लइत। विकरालक पाछू तेज हवा बहब नै मौसमक अपन सकल-सरूप अछि। दिनमे कनी-मनी तँ सुरूजक असैर पाबि कमबो करैत मुदा रातिक चारिम पहर अबैत-अबैत ऊहो असैर हारि-थाकि, जहिना धारक किनछरिक मरियाएल पानि कतवाहि पकैड़ चलैत तहिना कतवाहि पकैड़ नेने अछि। पाँच थान मालबला रघवा कक्काक सिरसिराएल मन सीरको तरमे सिरैस कऽ तरैस रहल छैन। कनारथपर असुआएल बैसल नजैर नोर सिरैज रहल छैन। सिरैज रहल छैन अपन जिनगीक बेथा-कथा। तेहेन बीखाह समय भऽ गेल अछि जे जहिना माटिक पँखाएल दिवारकेँ कुदि-कुदि बेंग मुहसँ पकैड़ सुगबुगाइयो ने दैत तहिना अन्हार इजोत बीछि-बीछि बिछौन केने जा रहल अछि।

देह परहक सीरक उतारि रघवा काका जिनगीक समर भूमि लेल मन बनबए लगला। जँ लड़ि मरब तैयो दुखेक निवारण जँ जीवित रहब तैयो सएह। आखिर पाँचो थानक पोसिनिहारो तँ छीहे। ओकरा मुँहमे कोनो बोल छै जे अपन बेथाक कथा कहत। ओना, कहियोकाल खेबा-पीबा लेल आकि अनठिया जीव-जन्तु देखि आकि दुहै-गाड़ैकाल मुँह खोलैए मुदा मनुक्ख जकाँ तँ नै कहि सकैए। नहियों कहत तैयो तँ एते

बुझबे करै छी जे अखन जे दुरकाल समय अछि तइमे की सभ शक्तिशाली अछि। जाधैर हथियार नै पकड़ाइ छै ताधैर शक्तिहीनो शक्तिशाली होइते अछि। सुकाल पाबि भलेँ वएह शक्तिहीन शक्तिशाली किए ने बनि जाए मुदा कुकाल तँ कुकाल छिऐ जेकरा मुँहमे आवाज भलेँ हौउ, मुदा जेकरा बोल नै छै ओ अपन बेथाक कथा कहिये केकरा सकैए। देह लगा मारब छोड़ि उपैये दोसर की छइ। मुदा जानसँ जाए आकि सोग-रोगसँ पकड़ाए, अपन जिनगीक संग हमरो जिनगी तँ तोड़बे करत।

टुटैत जिनगी देखि मन थकथकेलैन। थकथकाएल मन बुदबुदेलैन। जिनगी टुटि कऽ फेर ओहिना खसि पड़त जहिना दस बर्ख पहिने छल। जे दस बर्खक बीच ज्ञान-कर्मक संग कठिन श्रम केलाक पछाइत भेटल, ओ छीना रहल अछि, छीना जाएत। मुदा बँचाइयो तँ नहियेँ सकै छी। टुटैत मनकेँ हुथैत विचार कहलकैन-

“की यएह सोचि एते समैयो आ श्रमो गमेलौं जे छनेमे छनाक भऽ जाए? जखन जिनगीए टुटि कऽ खसि पड़त तखन कोन जिनगी लऽ कऽ ठाढ़ रहब!”

अनायास उत्साह जगलैन। जहिना सुतल लोककेँ साँस भलेँ चलैत रहौ मुदा रहै तँ निष्प्राणे अछि। तँए कि ओकरा मरलो तँ नहियेँ मानल जाएत। अहुना तँ लोकक नीन टुटबो करैए, तोड़लो जाइ छै आ तोड़ाएलो जाइ छइ। उठल उत्साह धकललकैन। देह परहक सीरक ओछाइनपर उनटा दुनू कानकेँ तौनीक मुरेठा बान्हि चद्दैर ओढ़लैन। दुनू डेनो आ दुनू पएरो बैसले-बैसल झाड़ि कऽ सोझ केलैन। सोझ होइते हल्लुकपर पहुँचते उत्साह सकसकेलैन। विचार जगलैन, जगिते विचार मन फुरफुरेलैन। बारहो मासक बारहो रूप अछि जे अरूप-सरूप दुनू अछि। ओहिक बीच ने जिनगियो अछि। ओही जिनगीक जनक ने मनुक्ख छी। तखन लगले हारि मानि लेब पीठ देखाएब भेल। नै पीठ देखाएब तँ जिनगीक हारि भेल। केना लगले सेहो मानि लेब। जँ लगले मानि लेब तँ केकरा लेल

मानि लेब, रहबे के करत जे तेकरा लेल मानि लेब। उठि कऽ रघवा काका ओछानइनपर ठाढ़ भेला।

केबाड़ खोलि रघवा काका बाहर तकलैन तँ अन्हार छोड़ि किछु ने देखैथ। घर अन्हार, बाहर अन्हार तखन केना डेग आगू बढ़त। चोरबत्तीक स्वीच दबलैन तँ पसरल अन्हारमे छुहिया इजोत किछु दूर धरि भेलैन। देखिते बिसवास जगलैन जे चोरबत्तीक इजोतक बले आगू बढ़ल जा सकैए। जहिना बाट-बटोही आकि राह-राही गाम घर छोड़ि कोनो गामक रस्ता–बाट पकैड़ आकि कोनो धार-गाछी-बिरछी बाध-बोनसँ हटि अपन पेटे चलि गंगामे मिलैए तहिना एक-दोसर गामक सीमान टपि राही-बटोही अपन गण्तव्य दिस बढ़ैए ओहिना रघवा काका माथ-कानमे मुरेठा बान्हि, चद्दैर ओढ़ि दहिना हाथमे चोरबत्ती नेने ओसारसँ निच्चाँ होइत नजैर खिरौलैन।

जहिना अल्हुआ-सुथनीसँ लऽ कऽ साग-पात, भात-रोटी होइत, खीर-पुरी धरि भोज्य होइत तहिना तँ घूरोक अछि। बैशाख जेठक घूर थोड़े छी जे बिनु बीखक माछी-मच्छर भगबैले हएत। ओ तँ घासो-पातसँ लगौल जा सकैए। लगौले किए जा सकैए ओइसँ बेसी जरूरते की छइ। जहिना तपाएल समय रहै छै तहिना अगियाएल हवो चलै छै, तेहनामे वएह ने नीक भेल जे जँ आगि हवामे उड़बो कएल तँ उड़िते-उड़िते हवेमे मिझाइयो जाएत। तखन? तखन तँ बरसातो नहियेँ छी जे खढ़ो-पात आ जरनो-काठी बरसातक भीजान भीजल रहने धुकुर-धुकुर धुआँ होइत रहत आ ने कखनो घूरक आगि लहसत आ नहियेँ मिझाएत। ओना, माछी-मच्छरक बंशो बढ़ि गेल रहै छै आ सौनक नाग-पंचमी पाबि बीखाहो भऽ गेल रहै छइ। ओकरा भगबैले तँ कड़ुआएले धुआँ उपयुक्तो होइ छै आ अनुकूलो छइ। फेर रघवा कक्काक मन पाछूसँ ससरैत लगमे पहुँचलैन। पहुँचते देखलैन जे ई तँ माघ छी। तहूमे अधडरेरक छी। जहिना राति कड़ुआएल अछि तहिना शीतक रूप बदैल पल्ला पकैड़ नेने

अछि। एहेन पल्ला पकैड़ नेने अछि जे भीतरसँ बाहर धरिक जारैन सिमैस गेल अछि। बरसातक जरना तँ अधसुखू रहैए। हल्लुक-फल्लुक भलें सामान किए ने भीज गेल होइ मुदा एहनो तँ रहिते अछि जे ऊपरसँ भलें भीजल हुअए मुदा भीतरसँ सुखल रहबे करैए। भीतर-बाहरक जोड़ बीचलाकेँ धकिएबे करै छइ। मुदा माघक तँ ओहेन होइए जे हवेमे धोरा भीतर-बाहर एकबट्ट कऽ दइए। भीतर-बाहर तँ ओकरा एकबट्ट करैए जे झाँपल घरसँ बाहर रहैए, जे घरमे झाँपल रहैए ओ किए सिमसत।

मनक उत्साह कलशलैन। गठूलाक गोरहा-चिपड़ी तँ सुखल हेबे करत तहूमे ओ कि कोनो गाछक चेरा छी जे पल्लाक डरे तरे-तर सिमैस जाएत। बरद-गाएक गोबरक गोइठा-गोरहा छी जे ओस-पल्लाक के कहए जे पानिक झीसियो-झकासकेँ थोड़े गुदानैए। ओकरो अपन रस छइ। मोन पड़लैन बैशाख-जेठमे गोरहा-गोइठा कएल घर। बाँसक मचान बना सैंति-सैंति रखने रही, तीन मास बरसातमे सठल तेसर मास जारक गुजैर रहल अछि। तेसरोक अदहा बीतिये गेल, हो-ने-हो कहीं ऊहो ने सठि गेल हुअए। तीन मास बरसात रहितो अदहासँ कमे खरचा भेल हएत, मुदा जारक तँ तीनू मासमे बेसी होइते अछि। मन ठमकलैन। मुदा लगले मन कमला गेलैन। ऐगले सपता तँ वसन्तक आगमन भऽ रहल अछि। जँ लगिचाइयो गेल हएत तैयो पाँच-दस दिन बेसी थोड़े भेल। तहूमे जे शीतलहरी लधने अछि ओकरो कि सीमा-नाँगैर छइ। आगू बढ़ि गठूला दिस विदा भेला। डेग उठिते मनमे उठलैन, उठिते मन कहलकैन-

“पत्नीक जोगौल घर छी, पुछि लेब नीक हएत। ओ थोड़े कहती जे हमर छी हम नै छुबए देब। जखन ओही गाए-बच्चाक जीबैक ओरियान कऽ रहल छी, तखन किए रोकती तहूमे कि ओ नै बुझै छैथ जे ओही लक्ष्मीक देलहासँ घर भरि सुख करै छी।”

मनमे अबिते रघवा काका पत्नीकेँ पुछब खगता नै बुझि गठूला पहुँचला। घरक मुँहथैरपर धन-उसनियाँ टीन राखल। चोरबत्तीक इजोतमे

तेना टीन चमकल जे रघवा कक्काक आँखि चोन्हिआ गेलैन। पैरक ठेंस टीनमे लगि गेलैन। तेते जोरक आवाज भेल जे सुगिया काकीक नीन टुटि गेलैन। नीन टुटिते ओछाइनसँ उठि सुगिया काकी गठूला दिस बढ़ली। केना ने बढ़ितैथ, बैशाख-जेठमे भलेँ कम्मल-चद्दैर बैसकी बनि जाए, गोरहा-गोइठा बाध-बोनमे छिड़ियाएल रहए मुदा माघक तँ गिरथानि वएह ने छी। ओसारसँ निच्चाँ उतैरते चोरबत्तीक इजोतसँ गठूलामे देखलैन। बुझि गेली जे कियो जारैन लइले आएल अछि। भरिसक जाड़ बरदाश नै भेलै तँए घूर करत। मुदा चुपचाप आगू बढ़ब उचित नै बुझि बजली-

"गठूलामे के छी?"

पत्नीक आवाज सुनि रघवा काका ओहिना सहैम गेला जहिना कियो पति पत्नीक पौती-सखारीमे हाथ दैत सहमैत अछि।

ओना, सुगिया काकीक बोलमे चोरक ध्वनि नै छेलैन मुदा मनमे जरूर रहैन जे एते राति कऽ घरमे किए औत। मुदा लगले मन गवाही देलकैन जे एक तँ एते राति दोसर एहेन दुरकाल तहूमे गठूला घर, अन-पानिक असबावक घर नहि, बिनु बुझने-परखने केकरो चोर कहब उचित नहि। तँए सोझे बजली जे के छी। एहनो तँ भऽ सकैए जे केकरो जाड़ नै बरदाश भेल होइ, आगिक दुआरे जारैन लइले आएल हुअए। मुदा लगले मनमे आबि गेलैन जे अनका घरमे बिना पुछने कियो किए औत। बड़ जाड़ भेलै तँ मांगि लइत। फेर मनमे उठि गेलैन जे एहनो तँ भऽ सकैए जे कियो दुनियाँकेँ झूठ बुझि नीक-अधलाक विचारे ने करैत हुअए।

पत्नीक आवाज सुनि रघवा काका बजला-

"हम छी।"

रघवा काका तेते दाबि कऽ बजला जे नीक जकाँ सुगिया काकी सुनबो ने केलैन। तँए कि ओ सोलहन्नी नै सुनलैन, सेहो बात नहि। शब्द आ शब्दक भाव नै बुझलैन मुदा आवाज तँ कानमे पड़िये गेलैन। जहिना

गंभीर शास्त्रीय संगीतक भाव कियो बुझैत वा नै बुझैत मुदा आवाजक कम्पन्न तँ कम्पित कइये दइ छइ। जँ से नै तँ ओहन ध्वनिपर जंगलसँ मोर आबि आकि बोनसँ हरिण आबि नाचए किए लगैए।

मने-मन सुगिया काकी विचारबो करैथ आ गठूला दिस बढ़लो जाइथ। मिरमिरा कऽ रघवा काकाकेँ बजैक कारण रहैन, पत्नीक झगड़ाउ प्रवृत्ति। नान्हि-नान्हिटा काजक बात लेल सुगिया काकी ऐ रूपेँ रक्का-टोकी करए लगै छथिन जइसँ नोकसाने-नोकसान होइ छैन। ओना, जहिना निआसमे आशाक जन्म, अन्हारमे इजोतक जन्म होइत तहिना रक्का-टोकीसँ छोट-छोट गलती सहैट कऽ सहीट बनि जिनगीकेँ चिक्कन बना दैत मुदा से रघवा काकाकेँ नै रहैन। माल-जालक जराएल मन तेना कऽ मनकेँ जरबैत रहैन जे क्षण-क्षण छनकैत रहैन।

दोहरा कऽ सुगिया काकी बजली-

“गठूला घर छी, साँप-कीड़ा रहैए तखन एती राति कऽ किए एलौं। के छी?”

सुगिया काकीक बोलक मिठास रघवा कक्काक आत्माकेँ हौंड़ि देलकैन। देखल देह चिन्हल चेहराक चुनचुनाएल स्वर, बजला-

“अपने छी।”

“एती राति कऽ एहेन जगहपर किए एलौं, एक तँ जाड़सँ ठिठुरल बोन-झाड़, बिलक कीड़ी-फतिंगी आबि कऽ राति विश्राम करैत हएत तैपर ओकरा देहपर हाथ कि पएर पड़त तँ ओ थोड़े अहाँक दुख बूझत आकि लपैक कऽ अपन बीखसँ बिखा देत।”

“हँ, से तँ अपनो बुझै छी, तहीले ने हाथमे इजोत रखने छी। हाथ-पैरमे इजोत रहनै ने लोक पएरे-पएरे दुनियाँ टहैल लइए आ हाथसँ करबो करैए।”

बजैत-बजैत रघवा काका बाजि तँ गेला मुदा लगले मनमे उठि

गेलैन जे अनेरे काज विलमबै छी। जँ गपे करक हएत तँ माले-घरक घूर पजारि बैस गप-सप्प करब। मालो-जालक आत्मा बुझतै जे जहिना जाड़ हमरा होइए तहिना तँ पोसिनिहारोकेँ होइ छइ। एहेन पोसिनिहारक प्रेमसँ जीवि। बजला-

“बड़ दुरकाल भऽ गेल अछि, थोड़े गोरहा-चिपड़ी लऽ लिअ आ मालक घरमे घूर कऽ दियौ।”

पतिक बात सुनि सुगिया काकी किछु ने बजली। मन मानि गेलैन जे किछु छैथ तँ छैथ मुदा गृहस्वामी तँ यएह छैथ। हिनके ऊपर ने खेत-पथारसँ लऽ कऽ माल-जाल आ मनुक्ख धरिक रक्षाक भार कन्हापर छैन। लग आबि बजली-

“उसरै बेर तेहेन ई शीतलहरी लाधि देलक जे जेहो जरना-काठीक ओरियान कऽ रखने छेलौं सेहो निङ्घेठ गेल, तैपर तेहेन लधान लाधि देलक जे कोनो ठेकान अछि जे केते दिन लधने रहत?”

सुगिया काकीक जनगर बात सुनि रघवा काका गुम भऽ गेला, मुदा लगले मनमे फुरलैन-

“कौल्हुका चिन्ता आइ किए करै छी, काल्हिले काल्हि छइ। कोनो ठेकान अछि जे एहने समय कौल्हुको हएत।”

दूटा गोरहा आ चारि-पाँचटा चिपड़ी उठा, मटिया तेलक डिबिया आ सलाइ आनि आगू-आगू सुगिया काकी आ पाछू-पाछू रघवा काका आबि मालक घरमे घूर केलैन। सुखल गोइठा, तइमे ढाड़ल मटिया तेल सलाइक लपकी पकैड़ते लपैक लेलक। घूर धधकि गेल।



शब्द संख्या: 1683, तिथि: 06 फरवरी 2014

खर्च

ओना, समैया काका भोरेसँ ठोह फाड़ि-फाड़ि कनै छला मुदा हम बुझलौं नअ बजेमे। सेहो ओना नै बुझलौं, रबि रहने गामक अपनो टोलवैया आ आनो-आनो टोलवैया सभकेँ, जेरक-जेर काकाकेँ देखए जाइत-अबैत देखि जखन पुछलिऐ तखन भाँज लागल। पहिने भेल जे माघक तेसर मकड़ छी लोक हरड़ी मेला जाइत हएत मुदा लगले घुमि किए रहल अछि। भाँज लगिते मनमे उठल जे काम-धाम तँ जिनगी भरि चलिते रहत मुदा जँ कहीं बिच्चेमे कक्काक परान छुटि जेतैन तखन तँ भेँटो ने हेता। मात्र चेतनशून्य देहसँ भेँट हएत। ओना, देहोक महत तँ ऐछे, जँ से नै अछि तँ जिनगी भरि एकरे पाछू किए लगल रहै छी।

टोहियबैत-बीहियबैत विदा भेलौं। रस्तामे जेते लोकसँ पुछिऐ तेते रंगक बात सुनिऐ। पहिल गोरेसँ पुछलिऐ तँ बाजल-

“अपने करमे ने कियो हँसैत मरैए तँ कियो बपहारि काटि मरैए।”

एक तँ ओहिना रंग-बिरंगक मनक विचारमे ओझराएल रही तैपर कर्मक फल हँसब भेल आकि कानब, भाँजे ने बुझलौं। मन भेल जे फेर पुछिऐ मुदा फेर भेल जे जँ कहीं कहि दिअए जे समैयक फल पाबि कयो हँसैए तँ कियो कनैए। तखन तँ एकहरी घुरछी दोहरा जाएत। जखने दोहराएत तखने आरो सक्कत हएत तइसँ नीक जे दोसर-तेसरकेँ पुछबे ने करिऐ। जखन भेँट करए जाइए रहल छी तखन पहुँचला पछाइत जे पुछैक आकि बुझैक हएत से मुखौत्रीए भऽ जाएत। जहिना छिड़ियाएल-

बीतियाएल पानि आकि गनहाएल-मनहाएल वायु मुखात्र होइते अपन गति पकैड़ लइए तहिना ने भवैत भव मुखात्र होइत भवसागरमे समा समाधि लैत अछि।

नजैर पड़िते देखलयैन जे समैया काका घौना पसारि कऽ कानियोँ रहला अछि आ घुन-घुना कऽ अपन जिनगीक गीतो गाबि रहला अछि। एक तँ ओहिना ओझराएल मन तैपर आरो ओझरी लगि गेल। चलचलौ देखि दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम करैत पुछलयैन-

"काका, मन केहेन लगैए?"

ले बलैया! जिज्ञासा करए जिज्ञासु बनि गेल छेलौं मुदा ओ तँ जेना विहाड़िमे उधिया गेल होथि तहिना बजला-

"जेते धएल-धड़ल छल सभ सठि गेल, मुदा मनक ताप नै मेटाएल, जे घड़ी जे पहर छी, छी। भने भेँट-घाँट भऽ गेल।"

समैया काका जेना कालचक्रक पूजापर बैसल होथि तहिना बाजए लगला। भुजंगप्रयात जकाँ सुनैत रहलौं, सुनैत रहलौं।



शब्द संख्या: 330, तिथि: 07 फरवरी 2014

अखरा-दोखरा

देवघरसँ अबैत रही, जसीडीहक मुसाफिर खानामे एक गोरे भेटला। भेटला कि सिमटीक जे कुरसी बनल छल ओइपर पहिनेसँ असगरे बैसल रही, ऊहो आबि कऽ बैसला। कनीकाल तँ ऊहो चुपे रहला आ हमहूँ चुपे रहलौं मुदा जखन चुनौटी निकालि तमाकुल चुनबैक सुर-सार केलौं आकि बजला-

"एक जुम बढ़ा देबइ।"

पहिल दिनक भेँट, केना कऽ पुछितिऐन जे छोट जुम खाइ छी आकि नमहर। अपने अनुमान करए लगलौं जे मुँहक एकोटा दाँत नै टुटल देखै छिऐन तइसँ भरिसक छोटे जुम खाइत हेता। सएह करैक मन भेल, मुदा खुएला पछाइत जँ अजश भेल तखन खुएलहा फले की हएत!

तँए अहगरसँ तँ नै मुदा मझोलका घानी लगा देलिऐ। तरहत्थीपर औंठा चलए लगल। धिया-पुताक खेल जहानि एतए-सँ चलिहेँ बुढ़िया, धोकड़ी समैइहेँ बुढ़िया...। बाँहिपर ओंगरी चलए लगल।

घन्टा भरि गाड़ी पछुआएल। भरिपोख दुनू गोरेक बीच गपो-सप्प भेल आ दूबेर चाहो-पान चलल। गाड़ीक एके कोठलीमे बैस कऽ भरि रस्ता गप-सप्प करैत एलौं। दरभंगा अबैक रहए। हायाघाटमे जखन ओ उतरए लगला तँ कहलैन-

"फेर कहिया भेँट-घाँट हएब आकि नै हएब।"

हमहूँ टोकारा देलिऐन- "ऐ देहक कोनो ठेकान अछि, अखने

डिब्बासँ खसि पड़ब, परान तियागि देब।”

हठ करि कऽ अपना संग उतारि लेलैन। दू दिन पहुनाइ चलल। दू दिनक पछाइत जखन गाम एलौं तँ बेटा पुछलक-

“दू दिन केतए हराएल छेलौं?”

जेना-जेना भेल, सभ बात सुना देलिऐ। सुनि कऽ बाजल-

“एना जे अखरा-दोखरा-तेखरा दोस्ती हुअ लगल तँ दुनियेँ अछन भऽ जाएत।”

जहिना गबैया, खिस्सकर शुरू कम स्वरमे करैए तहिना बेटो मुँह दाबि कऽ बाजल छल। दोखरा-तेखरा तँ नीक जकाँ सुनलौं मुदा अखरा कहलक आकि सखरा से नीक जकाँ सुनबे ने केलौं।

मनमे उठल दोखरा बालु तँ पाइनो बनबैए आ हवो मुदा तेखरा तँ पाथरेटा बनबैए। ओ चाहे कोइला कहबए आकि पाथर मुदा दुनूक (बालु-सिमटी) प्रेम केते प्रगाढ़ होइए जे जुग-जुगान्तर के कहए जे जन्म-जन्मान्तर धरि ओहिना ठाढ़ रहैए जहिना शुरूमे ठाढ़ होइए।

ओना, बेसी थकान नै रहए हायेघाटसँ आएल रही, मुदा पाछू पुछड़ी जोड़ि बजलौं-

“बौआ, थाकैनसँ देह भरियाएल अछि, पहिने नहा-खा कऽ किछु समय आराम करब तखन मन खनहन हएत। पछाइत सविस्तर बात करबह।”

थकान सुनि बेटा अपन जवाबदेही बुझि गुमे रहि गेल।



शब्द संख्या: 342, तिथि: 10 फरवरी 2014

पेटगनाह

कौल्हुका भोजक अजशसँ सौंसे गामेक लोककेँ चोट लगल मुदा सभसँ बेसी लगलैन कुसुमी काकीकेँ। बेसी चोट लगैक कारण भेल जे भोजक अगुआ नेतेजी काका छेलखिन।

घरवैया तँ अपन माइयक सराध लेल खर्चक जे मन बनौने छल ओ पाइ-चुक्ती केलक। किए ओकर मन कहतै जे दुआरपर सँ पंच अकची-दोकची बजैत गेला। मन तँ यएह ने कहतै जे समाज जेतेक खर्च मंगलैन से तँ दइए देलिऐन तखन काजक भार समाजक ऊपर गेल। जँ कियो नै बुझत बलधकेल अगुऔत तँ अगुआबऽ, अपन मुँह दुइर करता। देखै छी जे केतौ वारीक समाने चोरा कऽ अपना ऐठाम साहि दइए तँ केतौ देखै छी भनसीए अपन कनारि चुका तीमन-तरकारीमे नोनेक गड़बड़ी कऽ दइए। केतौ देखै छी बजारसँ सड़ल-पाकल समान कीनि दुइर करैए। तइसँ घरवैयाकेँ की? जानए जौ आ जानए जत्ता। सातु सने घून किए पिसाएत? बलजोरी जँ कियो पीसिनिहारि बिना उलौने-फटकने घुनाएल अन्न पीसत तँ दोख केकर हेतइ। बलधकेलकेँ कोनो जवाब होइ छै, जेकरा जे फुरै छै से बजबो करैए आ करबो करैए। कियो जँ अजशक दोख घरवैयाक माथपर देत से थोड़े मानत, अपनो मन ने गवाही दइते हेतइ।

काकीक मन ठमकलैन, ठमकलैन कि मानि गेलैन जे भोजैत निर्दोख अछि। जहिना कोनो न्यायालयक न्यायाधीश दूध-पानि बेड़ा अपन पदक संग अपन गरिमा बढ़ा आत्म–परमात्ममे जोड़ि लैत अछि

तहिना कुसुमी काकी भोजैतकेँ घिनमा-घीन भेला पछाइतो पैनपत बना कमल फूल जकाँ फुला देलैन। मुदा मन असथिर नै रहलैन, आगू बढ़ि गेलैन।

कुसुमी काकीक नजैर समाज दिस गेलैन। समाजक एहेन दुरगति भेल जे अनगौंआँ पंच सभ जे यत्र-कुत्र बाजल से तँ बजबे कएल मुदा ई जे बाजल जे एहेन रही तँ पूजापर बैसबे ने करी। गामक रखलक की! कोनो कि जइ गामक पंच रहए तही गामक लोकटा बाजत आकि साँझ-भोरक तरेगन जकाँ एकटा नढ़िया टाँहि देत आकि गामसँ आन गाम धरिक नढ़िया हुआँ-हुआँ करए लगत। आनो-आन गामक लोक बाजत। लोको तँ लोके छी किने, मान न मान हम तोहर मेहमान।

जहिना बजै छी तहिना लील समाज अपन समाजक फरिच्छ रूप सोझमे देखब से नीक? आकि बजै छी काग जकाँ आ करै छी कौआ जकाँ से नीक। दुनूकेँ नाँगैर जोड़ि काग-भुसुंडी मानब, अपन-अपन मन मानब भेल। समाजे गाम भेल आ गामे ने समाज, मुदा गाम तँ ब्रह्म स्वरूप निरविकार नीरब अछि ओकर कोन दोख। मनुक्खे ने समाज बना सूनसँ शून्य धरि फड़ैत-फुलाइत अछि। मुदा समाजो टुकड़ी-टुकड़ीमे तेना कटि-खोंटि गेल अछि जे नीक-अधलाक विचार जटिलसँ जटिलतर बनि गेल अछि। कुसुमी काकीक मन ठमैक गेलैन। मुदा सुदर्शन चक्र जकाँ मन तेना नचैत रहैन जे कोनो दिशा नीक जकाँ बुझिये ने पबै छेली। तखने नेताजी काका आँगन पहुँचला। जेना साँढ़-पारा अपन कनारि असुलैत तहिना कुसुमी काकी बघुआइत बजली-

“केते दिन मनाही केलौं जे एहेन काजमे नै पड़ू, आब ने ओ राजा भोज छैथ आ ने हुनकर दरबार छैन।”

जहिना टुटल घरमे अकासक बून सोझे लगैत तहिना कुसुमी काकीक बोल नेताजी कक्काक हृदयकेँ बेध देलकैन। छटपटाइत मन

अवाक भऽ गेलैन। नजैर काकीक आँखिमे नाचए लगलैन। बजला किछु ने। दोहरबैत कुसुमी काकी बजली-

“जखन अहाँ देखि नेने छी जे अही समाजमे केते भोज-काज भेल अछि जइमे केतेकोकेँ जशो भेलैन आ अजशो। मुदा जश-अजशक भागी के?”

‘जश अजश’ सुनि नेताजी काका गोबर संुघौल मुसरी जकाँ मुँह खोललैन। बजला-

“अपनो नै अखन धरि बुझि पेलौं अछि जे हिसाबमे गलती केतए भेल, जे एना भेल!”

‘हिसाब’ सुनि कुसुमी काकी बजली-

“कागत परहक हिसाब काजमे नै काज करै छै, केतौ वारीक समाने अपना घर साहि दइए तँ केतौ भनसीए अपन कनारि असुलि नोनगरे-अनोन बना दइए, तँ केतौ खेनिहारे कोनो वस्तुक नाँगैर पकैड़ चपैत-चपैत चापि दइए।”

पत्नीक विचार सुनि नेताजी कक्काक मन मानि गेलैन जे भरिसक सएह भेल हएत। बजला-

“ठीके कहै छी।”

“ठीके की कहब। अहाँ अपने पेटगनाह छी, तेकरे फल भेल।”

❑

शब्द संख्या: 593, तिथि: 14 फरवरी 2014

बड़की माता

"अनसोहाँत भऽ गेल! एहेन कहियो ने देखने छेलिऐ!"

-ओछाइनपर पड़ल, अपन कुहरब छोड़ि अठासी बर्खक मंगली दादी बजली।

जहिना बाट चलैत बटोही हारि-मारि थकान पीड़ासँ पीड़ाएल बजैत तहिना मंगली दादी सेहो बजली। दोसराइत लगमे नै तँए कियो नै सुनि पौलक। जहिना अकासमे मेघक टुकड़ी उड़ि-उड़ि सुर्जक प्रभाकेँ झँपैत तहिना सोगाएल सोग दादीक बोलतीकेँ झाँपि देलकैन। जइसँ बोलती तँ बन्न भेलैन मुदा विचार भीतरे-भीतर सुरकुनियाँ मारि बिचड़ए लगलैन। जुग बदैल गेल वृन्दावनक गोपी एक सेकेण्डक सतरह सौमा भागकेँ जुग मानि कृष्णसँ अलग नै हुअ चाहैत, मुदा से थोड़े अछि। अनेरे कियो बजैए जे कलयुग अखन ढेरबे भेल अछि, समरथाइयो पछुआएले छै आ औरुदो बहुत बाँकी छइ। केता हजार बर्ख आरो रहत।

मनमे बिचैरते रहैन आकि दुबटिया लग पहुँच गेली। पहुँचते विचार उचड़लैन, ऐ बीच तँ मनुक्खक केता पीढ़ी गुजैर जाएत! मनुक्खक जिनगीए केतेटा होइ छै! तहूमे चारि टुकड़ी अछि। जँ साए बर्खक मानब तँ पचीस-पचीस बर्खक टुकड़ी भेल, नै जँ अस्सी मानब तँ बीस बर्खक भेल आ जँ सरकारी मानब तँ साठि बर्खक पनरह बर्ख भेल। तइ हिसाबसँ कलयुगक किए ने बेसी औरुदा पछुआएले छइ। तैबीच पोता मनोज आबि अँगनामे बाजल- "दछिनबरिया टोलमे बड़की माता

एलखिन, तँए ओइ टोल दिस नै जाएब।”

आँगनमे दोसराइत नहि, ओछाइनपर पड़ल मंगली दादी जोरसँ पोताकेँ सोर पाड़ि पुछलखिन-

“बौआ की भेल दछिनवारि टोलमे?”

दादीक प्रश्न मनोजक मनकेँ जेना धक्का मारलक। धक्का मारलक ई जे दादी पुछलैन। लगमे आबि मनोज बाजल-

“दादी, दछिनवारि टोलमे बड़की माता एलखिन, लोक सभ बजैए जे ओइ टोल नै जइहें।”

एक तँ झूनाएल पाकल टूर खसैत दादीक स्मरण शक्ति, तैपर ‘बड़की माता’ सुनि असल अर्थ नै बुझि सकली। बुझबो केना करितैथ माएसँ दादी ने बनि गेल छेली। पोताक बातकेँ सुनि मनमे रखि लेली जे बेटा औत आकि पुतोहु तँ पुछि लेब। बालवोध क्याँने गेल जे बड़की माता केकरा कहै छइ। देवियो होइए आ दानवियो होइए। जीवनदानियो होइए आ लेनिहारनियोँ होइए। भेल ई जे रोदियाएल सौन भऽ गेल। खाली सौने नहि, रौदियाएल अखाढ़ो ने बरिसल। फागुन-चैतक मधुआएल रौद बढ़ैत-बढ़ैत अग्नि स्वरूपा बनि पृथ्वीकेँ गरैस लेलक। अग्नि स्वरूपा बनबो केना ने करैत? पानिक छुतिये ने समापत भऽ गेल।

अपन सहयोगीक भरपूर सहयोग भेटबे केलै। रस्ता–बाटक बैसल माटि गर्दा-धुरा बनि धुरिया पकैड़ अकासक रसकेँ चुसि लेलक, गाछ-बिरीछ अपन हरितमा तियागि पीड़ासँ पीड़ा धरतीपर झड़ि गेल। पोखैर-इनार, धार-धूर माटिक खाधि बनि गेल। सुरूजक प्रखर प्रभाकेँ धरती-अकास बीचक सेना नै रोकि हारि मानि कतबाहि धऽ लेलक, एहेन स्थितिमे कालचक्रक पूजा केहेन हएत? गामे-गाम रंग-बिरंगक तपाएल तप रोग-वियाधिक संग छोटकी मातासँ सैझली, मैझली बड़की माता पसैर गेल! एक तँ ओहिना समैयक गरुआएल गरमी तैपर देहक तपित

तापसँ तपीआ जिनगीक कठिन परीक्षामे गामक-गाम लोक फँसि गेल।

शुरूमे जखन दछिनवारि टोलमे चेचकक आगमन भेल आकि एके-दुइए मुहेँ-काने सौंसे गाम समाचार पहुँच गेल। मैयाक आगमन होइते ओझहा-धामिक संग झालि-मिरदंग उठि कऽ ठाढ़ भेल। रंग-रंगक प्रहार टोलपर हुअ लगल। ओ सभ तीन सालसँ गह्वर खसा अनठौने अछि। तेकरे फल भेट रहल छइ। तेतबे नहि, आनो गामक आ आन टोलोक आएब-जाएब घटैत-घटैत घटिया गेल। एक्कैसो घरक टोलकेँ जेना गामो आ आनो गाम जरै-मरैले छोड़ि देलक।

छोटकी माता अपन रूप बढ़बैत गेल। जहिना शरीरमे बढ़ल तहिना मौसमो बढ़ैत संग-संग चलए लगल। एक्कैसो परिवार रोगसँ आक्रान्त भऽ गेल। ओना, दछिनवरिये टोलटा नै गामक आनो टोल आ आनो-आनो गाममे वियाधि पसैर गेल।

ओछाइनपर पड़ल मंगली दादीक मन फड़फड़ेलैन। मैयाक आगमन तँ चैत-बैशाख आकि आसीन-कातिकमे होइ छेलै, जखन रीत-बेवहार बदलै छइ। अखन तँ सौन छी तखन किए भेल? अखन तँ बाध-बोन हरिआएल रहैत, पोखैर-झाँखैरसँ लऽ कऽ चर-चाँचड़ जलजलाएल रहैत, से किए ने अछि? मासक ठेकान तँ दादीकेँ मोन पड़लैन मुदा मौसमक ठेकाने ने रहलैन। ठेकानो केना रहितैन, घरहटिया घरहटक समैयक लछन-करम ठेकना नक्षत्र मन रखैए, किसान किसानी आ बेपारी बेपारक, से तँ आब दादीमे नै रहलैन। तँए मन नै बुझि पेलकैन। मुदा सुनाएल मन सपनए लगलैन। सपनाइते खापड़िक मकैक लाबा जकाँ चनैक धरतीपर खसलैन। खसिते चनचनेली-

“कहाँ दन साते-आठेटा मखानक फोंका जकाँ देवसुनराकेँ तेहेन निकैल गेल अछि जे तनो-भगन-वेनग्र भऽ गेल अछि। बापो-माए डरे लगमे नै जाइ छइ। जेबो केना करतै। जखन एक्के घरक सातटा स्त्रीगण

सात सीढ़ीमे तेना बँटा जाइए जे मनुक्खक शक्ले-सुरैत बदैल जाइ छै, तहिना ने बरो-बेमारीक अछि। साधारण पेटझड़ीबला जँ रद-दसबला टोल जाएत तँ जानियेँ कऽ ने ढोढ़ीया बीखकेँ गहुमनेक बनौत...।”

एक्कैसो घरक टोलमे ने एकोटा परिवार नागा रहल आ ने एक्कोटा मनुक्ख। जहिना दुनियाँक सभ पुरुखकेँ नारीक संग कऽ देल जाइ छै, तहिना। टोलक सभ चेचक वियाधिसँ व्यग्र भऽ गेल। के केकरा देखत। सबहक मन कहै, जान रहत तखने ने जहान। जँ जाबे से नै रहत तँ जहाने की। सभ दिन सभ काल दुनियाँक उदए-परलए तँ होइते छै, तँए कि सभले एक्के होइ छइ। दुनूक फेँट-फाँटमे जे जेहेन बीछिनिहार रहल ओ ओहेन कऽ बीछि लइए। अनायास स्मृति जगलैन। जगिते मोन पड़लैन अपना देहमे भेल चालीस बर्ख पहिनुका चेचक। मझिली मैया मोन पड़िते देह ओहिना सिहरि गेलैन जेना बर्खाक बून पड़िते अकासमे उड़ैत चिड़ैकेँ होइत। एक तँ उमेरक जर्जर अंग तैपर चालीस बर्खक स्मृति तेना कऽ मंगली दादीकेँ गरैस लेलकैन जे गराँसक चोटसँ जहिना अंग भऽ जाइत तहिना भऽ गेली। बेथाएल तन-मन तेना अकैड़ दबलकैन जे मुँह भरभरेलैन-

“हे भगवान! अनेरे कोन नरकमे रखने छी, कहिया धरि राखब।”

मुदा लगले मन बदैल गेलैन। बदैल ई गेलैन जे जाबे आँखि तकै छी ताबे अहिना ने होइतो रहत आ देखबो-भोगबो करैत रहब। तइसँ नीक जे लऽ चलू जिनगीक ओइपार जैठाम ई सभ नै देखब।

ओसारक दछिनवारि भागमे मंगली दादीक ओछाइन, तहीबीच बेटा बुधियार आँगन पहुँचल। माइक सभ बात तँ बुधियार नै सुनि सकल मुदा अन्तिम बात, ‘लऽ चलू...।’ सुनलक। सुनिते बुधियारक मनमे उठल, माए की बाजि रहल अछि! झब-दे लऽ चलू केतए लऽ चलू? मन मुड़ियाएल। मुड़ियाइते भेल जे भरिसक रोग-पीड़ासँ रोगाएल-पीड़ाएल

मन तड़ैप रहल छइ। फेर भेलै जे अनेरे मनकेँ औनाबै छी। माइयो कियो आन थोड़े छी जे पुछैमे संकोच हएत। बाजल-

"माए, की भेलौ, एना किए बजै छेँ?"

बुधियारक बोल सुनि मंगली दादीक हूबा जगलैन हूबगर होइत बजली-

"सुनै छी जे गाममे मैयाक आगमन भेल अछि?"

माइक बात सुनि बुधियार तारतम करए लगल जे माए लग झूठ केना बाजब? तहूमे जखन कहियो ने बजलौं, मुदा प्रश्नक जवाबो केना देब। जहिना दछिनवारि टोलक रस्ता छोड़ि देलौं, तहिना तँ उतरवारियो टोलक। फेर तखन केना हँ कि नै कहबै। जहिना चिड़ै लोलसँ बोल मिलबैत तहिना बुधियार माइयक बोलसँ बोल मिलबैत बाजल-

"हँ, माए ठीके भेल अछि।"

बेटाक बोल सुनि मंगली दादीकेँ सुआस पड़लैन। दोहरबैत बजली-

"आनो-गाममे भेल अछि आकि अपने गामटा मे?"

दादीक मन बढ़ैत देखि मनमे भेल जे अखन धरि सुनलेहे बजलौं, आन गामक जँ बाजब आ अढ़ा दिअए जे अपनो कुटुम-परिवार तँ ओइ गाममे अइछे, कनी जिगेसा कऽ आबह तखन तँ भारी पहपैट हएत। रस्ता–पेरा केतए फँसि जाएब तेकर ठीक अछि। बाजल-

"माए, कनी नीक जकाँ भँजियबै छी तखन नीक जकाँ कहबौ। सुनै छी जे कहाँदन ओझहा-धाइम भाउ खेलाएल तँ कहलकै, गामक सीमान बान्हि देलियह, तखन तँ जानक बदला जान दिअ पड़तह।"

मंगली दादी पुछलखिन- "वैद की कहलकै?"

ओझहा-वैदक नाओं सुनि बुधियारक मन मानि गेल जे बिना झूठ बजने काज नै चलत। मुदा जहिना बाल-वोध तहिना थाकल-ठेहियाएल

बुढ़-बुढ़ानुसकेँ बौसब बड़ भारी नहियेँ अछि। बाजल-

“अनेरे कोन फेड़मे पड़ै छैँ। राम-राम कर सभ नीक भऽ जेतै।”

‘राम-राम’ सुनि मंगली दादी तारतम करए लगली जे ‘राम-राम’ की कहलक। मरैकाल राम-रामकेँ सत् लोक मानैए। अधला काज केलाक पछाइत राम-राम कहि दुतकाइर दइ छइ। शुभ काजक बेर जँ राम-नाम सत् छी बाजब तँ कपर फोड़ौबैल करा लेब, तखन बुधियार की बाजल। माइयो रगड़ी बजली-

“बौआ, ओझहो-गुणी नै देखलक-सुनलक हेन?”

माइक रगड़गड़ बात सुनि बुधियार रगड़ाइत बाजल-

“नेति-नेति कहि कातेसँ छुअब छोड़ि सतदिना रोग कहि जीबै-मरैले छोड़ि देलक।”



शब्द संख्या: 1224, तिथि: 18 फरवरी 2014

धरती-अकास

सुधीराक बिआहक गप-सप्प उठल। तीन दिन पहिने बी.ए.क रिजल्ट निकलल छेलइ। राजनीतिशास्त्र आनर्स पाबि सुधीराक मन मानि गेल छल जे राज-काज बुझै-चलबैक लूरिक प्रमाणपत्र युनिवर्सिटी दऽ देलक।

सुधीराक पिता प्रोफेसर साहैब संगी-बीच बैस चाहो-पान करैत रहैथ आ ठहाका-पर-ठहाका सेहो दैत रहथिन। ठहाकाक कारण भेल जे अपन टारगेटक भीतरे बेटीक बिआहक गर लगि गेलैन। बरो राजनीतिशास्त्रेक प्रोफेसर छथिन। साल भरि पहिने नोकरी भेलैन। बर-कन्या जँ एक विषयक जानकार हुअए तँ ओ जिनगीक लेल सोनाक सुगंधे भेल।

संगी सभकेँ बजबैक कारण प्रोफेसर साहैब सबहक बीच सुधीराक बिआहक चर्च उठा, बेटीक विचार जानए चाहलैन।

गद-गदाएल मने प्रोफेसर साहैब सुधीरा दिस देखैत संगीक बीच बजला-

“बेटीक बिआह पसिनगर घरमे हएत।”

संगी सभ जेना बाँसक एकटा चोंगरामे अनेको गोरे पकैड़ सह दइए तहिना मने-मन सभ देलकैन। मुदा सुधीरा राजनीतिशास्त्रक छात्रा छी, अपना लगसँ लऽ कऽ दुनियाँ धरिक राज-काजक प्रक्रिया जनैए।

बाजल- “बाबूजी, केहेन परिवारमे पठबए चाहै छी?”

पिता चुपे रहला। दोसर जे संगी रहथिन ओ बजला-

“बाउ, संयुक्त परिवार, खानदानी परिवार, तहूमे सातो भाँइक भैयारीमे सभसँ छोट भाइक संग।”

सुधीरा-

“जहिना सात तल अकास ऊपर अछि तहिना सात तल पतालो। भैयारीक सातम तलकेँ ऊपर-निच्चाँ तजबीज केलिऐ?”



शब्द संख्या: 184, तिथि: 19 फरवरी 2014

बकठाँइ

ओछाइन छोड़िते दुनू परानी लाल भायकेँ बकठाँइ शुरू भऽ गेलैन। बरहमसिया बकठाँइ तँए शुभ-अशुभक मद्दी नहि। मद्दी तँ ओतए होइए जेतए नियमित किरिया-कलाप चलैत। ओना, दोसरो कारण छेलैन, से छेलैन पति-पत्नीक बीच जिनगीक सम्बन्ध। तँए कहियो एहनो भइये जाइ छैन जे सुतलियो रातिमे आ कहियो अकलबेरोमे तेहेन परोड़क मुड़ी जकाँ सरेड़ निकलै छैन जे अड़ोसियो-पड़ोसियो आ दियादोवाद गामसँ फाजिल कहि अपन मुँह बरैज लइ छैथ। ओना से ओहिना नै कियो बरजलैन, किछु दिन पहिने जोतखी भायसँ निसभेर रातिमे तेहेन बजरान बजरलैन जे सौंसे गामक लोक जमा भऽ गेलैन।

गौंआँकेँ चाबस्सी दी जे जोतखीए भायकेँ दोखी बना मुँह बन्न करैले कहि, छोड़ि देलकैन। बात कोनो कि किछु रहै, एतबे रहै जे किछु एहनो काज होइए जेकर बरजित अकलबेरामे कएल जाए। तँए छुट्टा साँढ़ जकाँ दुनू परानी लाल भायकेँ गौंआँ बुझि, एक घर डाइनो बरजै छै कहि बिनु नीनक पकड़ल ओछाइनपर कर घुमि-घुमि कछमछ करितो, कानमे झड़ पड़बितो अड़ोसिया-पड़ोसिया ने लगमे पहुँचैक साहस करैत आ ने सुतले-सुतल कियो मनाही करैबला। तेकर कारण ई नै रहै जे लाल भायसँ आन कम तागैतबला छैथ आकि दउगर-पेंचगर कम छैथ।

मुदा कारण जहिना धानक झड़ केतौ धाने झड़ भऽ जाइए आ केतौ झड़ाह बनि झड़ बनैए। माने ई जे एक धानक खेतीक बीच जँ दोसर

धान आबि गेल तँ ओ धानो भेल आ झड़ो भेल। धान भेल जे जँ एकरंगाह दोसरमे चलि गेलौं, मुदा फुटै-पकैक, नमती-मोटाइ आ गुद्दाक रंग जँ एक हौउ, तँ किए ने धान भेल। मुदा तुलसीफुल आकि कनकजीर धानक खेतमे जँ उलाँक धान मिझड़ा जाए तखन की कहबै? एकटा धान दोसरसँ दस बड़ नमहरो आ दस बड़ मोटो होइए। खाइकाल तँ पारखी ओकरा पकैड़ घरनीकेँ दसटा सोहर सुनबैक अधिकारी तँ बनियेँ जेता किने। बनबाको चाहिए। जैठाम एक-एक दाना पकड़ैक बात अछि तैठाम जँ पँचमुखी रूद्राक्षमे गो-मुखी नुकबए चाहबै तँ की छोड़बो उचित? खाएर जे हौउ...।

बरहमसिया बकठाँइ तँए दुनू परानी ओहेन अभ्यस्त जे घण्टो भरि एके आसन एके टाँगे धेने रहै छैथ। ओना, लाल भाय आ लाल भौजीक विचारक दूरी नमहर छैन मुदा बिना दूरी पार केने सीमोपर नहियेँ पहुँचल जा सकैए। तहूमे मनुक्ख सामाजिक प्राणी छी, जँ दूटा मनुक्खकेँ एकठाम रहैक सूत्र नै बनल रहत तँ सदिकाल भैंसा-भैंसी होइते रहत। विवाह सूत्र तँ दुनू परानी लाल भायकेँ बान्हिए देने छैन।

दुनू परानी लाल भाइक औझुका बकठाँइ छेलैन लाल भाइक ओ विचार जेकरा ओ सिद्धान्तसँ जोड़ि रखने छैथ। तैबीच भौजीक सुमति जगलैन आ बेड-टी केर ओरियानमे लगि गेली मुदा लाल भाय ओछाइनेपर पड़ल रहला। जेना अस्सी मन पानि विचारपर पड़ि गेल होइन तहिना। जहिना बच्चाक शुरूक शिक्षा जिनगीक संग अधिक दूर तक संग पुड़ैए तहिना लाल भाइक विचार सेहो संगे चलि रहल छैन। सिद्धान्तक बीच फँसल रहैन लाल भाइक विचार! चाह पीबैसँ पहिने लाल भाइक मन तुरैछ गेलैन। तुरुछैक कारण छेलैन जे अखन धरिक जे जिनगी रहलैन ओ ई रहलैन जे जँ घर-बाहर एकरंगाह काज हुअए तँ पहिने बाहरक कऽ ली, पछाइत घरक। तहिना दोसर विचार रहैन जे जँ अपनो काज रहए ओहने काजक भार जँ दोसराइतोक होइ तँ पहिने दोसराइतक

करब नीक। मुदा..।

तइ विचारमे फँसल। मनमे रंग-रंगक बात गाड़ीक पहिया जकाँ चलैत रहैन। पैनपत जहिना बीज रूपमे एक दिस पाँकमे गड़ल रहैए तँ दोसर दिस कमल सदृश आँखि सेहो बनौने रहैए तहिना लाल भाइक विचार ऊपर-निच्चाँ होइत रहैन। बच्चेमे एक गुरु नै अनेक गुरु माए-बापसँ लऽ कऽ साहित्य धरिक गुरुक उपदेश कानमे पड़ैत रहल छेलैन जे 'सत् बाजी, केकरो अनुचित नै करिऐ', सत्-धर्मक पालन करी! मुदा देखि की रहल छी।

मन बमैछ गेलैन, बुदबुदेला- "कियो अपन कर्ता-धर्ता छी, सिद्धान्तक संग कोनो समझौता नहि।"

शिवलिंग जकाँ विचारक बीच खुट्टा गाड़ि देलैन।

ओछाइनपर पड़ल लाल भाय जिनगीक परीक्षाक बीच फँसल छला। चाहमे कनी चीनी बढ़बैत लाल भौजी गद्-गद् जे दुनियाँक के एहेन पुरुख अछि जे अपन स्वेच्छासँ जिनगी बना लेत? तैठाम तँ अजमौल पुरुख छैथे। लगले पाछू घुसकिये जेता। धुआइत चाहक कप दहिना हाथसँ उठबैत लाल भौजी बजली-

"किए, महींसिक मोड़ जकाँ ओछाइन पकड़ने छी, उठब चाह पीब आकि पड़ले रहब।"

लाल भौजीक बात लाल भायकेँ जँचलैन। फुरफुरा कऽ उठि जेबीक पाइ सेरियबए लगला। चाह लाल भौजीक हाथेमे। पाइ सेरियबैत देखि भौजी टीपली- "भोरे लोक राम-नाम करैए, अहाँ पाइए सेरियबै छी।"

लाल भौजीक मनोवृति भैया नीक जकाँ परेखने। परेखने ई छैथ जे अनकर काजक किछु हौउ, अपन कुरथी बलुआ जाए। तैपर दूधबलाक काजक समयपर सेहो नजैर रहैन। दूधबला बेटी बिआहक सरंजाम कीनए भोरे बजार जाएत। लाल भाइक हाथमे पाइ नै रहैन, तँए घुमबैत कहने

रहथिन- “नअ-दस बजे राति तक पाइ औत, काजक घरमे अनेरे नै बैसह, बजार जाइसँ पहिने तोरा पाइ पहुँचा देबह।”

छअ बजेक समय देने रहथिन। अँखिमुना बिसवासू दूधबला, तँए पाइक चिन्ता मनसँ हटा नेने रहए। जहिना भक्तक मन भगवानपर सँ हटि भगवान बनि जाइए, तहिना। चाह पीब लाल भाय सोझे दूधबला ओइठाम विदा भेला। विदा होइते लाल भौजी टोकि देलखिन- “केतए जाइ छी?”

“दूधबलाकेँ पाइ दइले।”

“भोरे-भोर अहूँकेँ किछु फुरल नै जे अनेरे विदा भेलौं?”

“की अनेरे?”

“जेकरा खगता रहै छै, ओ अनेरे दौगल अबैए।”

“हमहूँ खगता बुझलिऐ तँए ने दौगल जाइ छी।”

पतिक सकताएल विचार सुनि लाल भौजी ठमैक गेली। बजली किछु ने। मुदा नजैरक लाली कतियाए लगलैन। जहिना बाघक आगू पड़ने दुनूकेँ ज्वर लगि जाइ छै तहिना दुनू गोरेकेँ हुअ लगलैन।

मुदा दुनूक ज्वरक दू कारण छेलैन। केकरो रौद-बसातसँ एला पछाइत नहेलासँ अबैत तँ केकरो नहेला पछाइत रौद-बसातमे गेला पछाइत अबैत। लाल भाय अपन विचारक पाछू अपन मानक संग परिवारक सम्मानक रक्षाक बातमे डुमि कलियाएल जाइत रहैथ तँ लाल भौजी अपन मान-सम्मानमे।



शब्द संख्या: 883, तिथि: 24 फरवरी 2014

चैन-बेचैन

नव हवाक वेगमे गौंआँ सभकेँ मन फुरफुरेलैन। फुरफुरेबोक चाही। फुरफुरेलैन ई जे वृन्दावनमे गीताक जानकार ज्ञानी दास छैथ, हुनकासँ पनरह दिन प्रवचन करौल जाए। गामक धर्मक काज तँ गौंए-क भेल तँए सबहक भागीदारी होइ। अद्रा नक्षत्रक मेघ जकाँ समाजमे हुमरल। ओना, ज्ञानी दास भागवतो आ गीतो-रामायण कहिते छैथ तँए हुनके आनल जाए। चन्दाक गुम-गुमी चलिते छल आकि एक गोरे बाजि गेला- “सोलहन्नी खर्च देब, अहाँ बेवस्था करैक भार लिअ।”

मुदा प्रस्तावपर सहमत नै बनल ‘जेकर चून तेकर पून’ भऽ जाएत। तरवन ई हुअए जे ‘चन्दा सौंसे गामसँ हुअए आ जे घटतै ओ देथुन।’

मुदा बिच्चेमे दोसर प्रश्न उठि गेल जे घटतै तरवन ने ओ देथुन मुदा जँ बढ़ि जाए। घमरथन शुरू भेल, होइत-हबाइत फेर सहमत बनल जे धर्मोक काजक कि कमी छै, फेर दोबरा कऽ भऽ जाएत।

ज्ञानी दासक आगमन भेलैन। प्रवचन शुरू करैसँ पहिने सामुहिक रूपेँ सभकेँ पुछि लेलैन जे भागवत सुनैसँ पहिने गीता सुनि लेब नीक हएत। ज्ञानी दासक प्रश्नपर घौचालि शुरू भेल। घौचालि ई जे नीक-अधला तँ वएह ने बुझि सकैए जे दुनूकेँ जनैत होइ। जइ गाममे कहियो भेबे ने कएल, तइ गाममे नीक-अधला कथी हएत। नीक हएत जे हुनकेपर माने ज्ञानीए दासपर छोड़ि दियनु, जड़िसँ कहथिन।

कौलेजमे पढ़ैत रमेशकेँ इन्टरनेशनल वेपारी जकाँ बेसी लाभ बुझि पड़ल। बेसी बुझैक कारण जे गीताक कर्म-ज्ञान जोगक बात घरे बैसल बुझि लेब, सेहो समाजक बीचमे, तहूसँ नीक जँ परिवेशक अनुकूल

प्रवचन होइ तँ सभसँ नीक। स्कूल-कौलेजक विद्यार्थी जकाँ रमेश प्रवचन शुरू होइसँ दस मिनट पहिने पहुँच गेल। पहिलुके प्रवचन सुनि रमेशक मन जिनगी जीबैले तेना उताहुल भऽ गेलै जे नअ बजे रातिमे जखन घरपर घुमती अबै छल तइ बिच्चेमे तीन बेर सप्पत खेलक। पहिल सप्पत सुनितेकाल खेने छल जे 'आइसँ जीवन-पद्धति बदैल लेब।'

घरपर आबि रमेश मने-मन संकल्पो अजमाबै आ खैयोले गेल। गुम-सुम। जहिना संकल्पी खेबाकाल नै बजै छैथ तहिना तीत-मीठक बात रमेश किछु ने बजैत।

जहिना कोयला-पानि इंजनमे पड़ला पछाइत शक्तिक संचार हुअ लगैत तहिना रमेशोक मनमे हुअ लगल। बिनु लछनक अनेको विचार बर्खाक बुलबुला जकाँ उठै आ फुटै। दुनियाँ दिससँ सूत ससारि, जलिवाहक जाल जकाँ, पत्नीपर एकाग्र केलक..।

..साल भरि पहिने दुरागमन भेल। जेतेकाल पीढ़ीपर बैस भोजन करै छी जँ तेतबोकाल दुनू परानी बैस विचारी जे भोजनक कि प्रयोजन जिनगीमे अछि, केना जुटा पाएब? मुदा से कहाँ होइए। बुझलो बात, परिवारक हिसाबसँ सिदहा लगै, जँ खेला-पीला पछाइत समगम भऽ जाए तँ नीक-बेजाए पुछैक प्रयोजने की? अधला जँ बनल रहैत तँ खेनिहारेक काजसँ ने पता चलि जाइत। एक तँ अहुना चाहक दोकान जकाँ उलझल अछि जहिना एक केतलीमे बनल चाह एक रंग हएत, मुदा पीनिहार रंग-रंगक, तैबीच नीक-अधला बनबे करत। कियो मीठगर पीबैए, तँ कियो गाढ़ लीकर। तहिना परिवारोमे ऐछे, कियो मीठ नोन खेनिहार तँ कियो नोनगर। विचारक विरामो नै भेल छेलै आकि दोसर विचार रमेशक मनमे उठि गेलइ। उठि गेलै जे पुरुख सबल होइ छैथ आ नारी अबल। एहेन स्थितिमे अबलकेँ केना सबल बनौल जाए? मुदा अबल सबल बनै-बनबैसँ पहिने सबल अबलक बाट देखए पड़त। केना अबल आ केना सबल मानल जाए। रंग-रंगक अवलो होइए आ रंग-रंगक सवलो होइए। ज्ञान,

धन, जन, मन सेवा तँ बीचमे अछिए। पानि-मक्खन मिलल दूध घोड़ाएल घोड़ जकाँ रमेशक मन घोर-घोर भऽ गेल। बाजल किछु ने चुपचाप खा कऽ ओछाइन दिस बढ़ल।

ओछाइनपर अबिते रमेशक मन रमेशकेँ पुछलक- "जीवन पद्धति की?"

जहिना रोगक घरमे, अगिलगुआ घरक, पेटजरूआक नीन पड़ा जाइ छै तहिना रमेशक नीन पड़ा गेल। पानिक बुलबुलामे इन्द्रधनुषी रंग देखैत मुदा लगले फुटि गेने छिड़िया जाइ। कछ-मछ करैत ओछाइनपर लगले-लगले कर फेड़ैत। नीन अबैक केतौ दरस नहि। फेर ज्ञानी दासक प्रवचनपर पहुँचल। आइसँ जीवन बदलत? मुदा जँ नीने अबैबेर नीन नै औत, आ जगै बेर नीन चलि औत तखन जागब केना..?

..दस बजेक समय भऽ गेल, बारह बजे रातिक पछाइत दिनक आगमन भऽ जाइ छइ। करियाएल-कजड़ाएल अन्हारमे सुरूजक रोशनीक प्रवेश हुअ लगै छइ। जिनगी बदलैक पाछू समय तँ पकड़ए पड़त। जँ से नै पकड़ाएत तँ जिनगी केना पकड़ाएत। रातिक बारह बाजल। देवालमे टाँगल घड़ीकेँ देखिते रमेश उठि कऽ बैस गेल। घड़ीक सुइया नाचि रहल छइ। बारहक अन्त भऽ गेल मुदा रमेशकेँ अन्हारमे किछु देखे ने पड़ैत जे की करत?

अन्हार-अनहेरसँ भरल दुनियाँ। कोठरीक बीच लालटेनक टिमटिमाइत इजोतमे रमेशकेँ किछु सुझिये ने रहल अछि जे डेग केमहर उठौत। समैयक संग घड़ीक सुइया नाचि रहल अछि। घन्टा-डेढ़ घन्टा बीति गेल मुदा रमेशकेँ किछु फुराएल नहि! घरसँ बाहर किछु करैक अनुकूल नै अछि घरक भीतर काज नै अछि तखन? अतस-बितस करैत विचारलक, जे इजोत अछि तेहीमे ने किछु करैक जगहो अछि।

ठमैकते मनमे उठलै- लीढ़ वा समाढ़सँ भरल पोखैरमे केना स्नान कएल जाए?

सोचैत-विचारैत तँइ केलक जे जेते पानिक जरूरत अछि तेते दूरक घाटक लीढ़-केचली-समाढ़ हटा देने तँ नहाइक काज भइये सकैए। मनमे आशा जगलै, आशा जगिते विचारल, जाबे सुरूज धरतीपर देखाइ नै देत ताबे तक लालटेनेक इजोतमे पढ़बो करब आ पढ़लाहाक रस निचोड़ि लिखबो करब। काजक नक्शा बनिते रमेशक मन प्रसन्न भेल। पोथी खोलि रमेश पढ़ब शुरू केलक। एक तँ जगरनाक आँखि-मन तैपर विषयक गंभीरता, चाह पीबैक मन भेलइ। बढ़ैत-बढ़ैत मन छुछुआ लगलै जे कखन चाह भेटत जे पीब।

जहिना बाढ़िक पानि निच्चाँ दिस एकमुहरी बहए लगैए तहिना चाहक भूख एकमुहरी भऽ गेलइ। मुदा एते रातिमे चाह औत केतए-सँ। जँ पत्नीकेँ उठा चाह बनबए कहिऐन तँ ओ रपैट कऽ कहबे करती जे चाह कोन नीक पेय छी जे एती रातिमे पराण छुटैए। पराण तँ नै छुटैए मुदा काजो तँ आगू नहियेँ कऽ पाइब सकै छी।

असोथकित भऽ रमेश निर्णय करैत बाजल- “काजक दौरमे जइ-जइ वस्तुक जरूरत होइए ओकर ओरियान शुरू करैसँ पहिने जँ कऽ नेने रहब तखने ओइ काजकेँ बिसवासू बना सकै छी। नै तँ अभावगक आगि मनकेँ थीरे ने हुअ देत।”

दोसर दिन जानियेँ कऽ प्रवचन सुनए रमेश नै गेल। अपने मन धिक्कारैत रहै जे जेतबो सुनि बुझि करैले डेग बढ़ेलौं, से तँ समहरिये ने रहल अछि आ तैपर सँ आरो सुनि माथकेँ भरियाएब नीक नहि।

❑

शब्द संख्या: 936, तिथि: 09 मार्च 2014

अलपुरिया बरी

फागुनक लहकी लगनक धुमसाही, बटोहीसँ बाट बोनाएल रहैए। फगुआ मनबए दिनेश भाय काल्हि साँझू पहर गाम पहुँचला। लगनक धुमसाही देखि अपने फुरने बजला-

"अखन तकक जिनगीमे दुइयेटा घरदेखिया भोज पइर लगल अछि।"

अकछाइत पुछलयैन-

"एना किए सुमारक होइए, दिनेश भाय?"

'सुमारक' सुनि सुमरला-

"पहिल पइर लगल पचही आ दोसर पइर लगल अलपुरा।"

बजैक फुरफुरी देखि टोनि देलिऐन-

"मने-मन गुर-चाउर फँकै छी आ...।"

एतबे सुनैत बजला-

"घरदेखिया भोज कहै छेलौं, घरदेखीमे अपनैत चलै छै जइमे लोक जमाए-वर्गसँ ममियौत तक पुरा लइए। मुदा तेतबे से थोड़े अछि।"

टोकारा देलिऐन-

"से की?"

बजला-

"जाति-जाति बीच समाज बनि टुकड़ी-टुकड़ी टुटि रहल अछि, मुदा गुण अछि जे केकरोसँ दोस्तीए ने अछि।"

दिनेश भाइक खुशी देखि पुछलयैन- "पचहीक बरी बिसैर गेलिऐ?"

बजला- “बिसरलिऐ कहाँ, एकटा बात कहि दइ छी, ओना अपनो खोंटाह छी। खोंटाह ई छी जे सभकेँ गाममे पेट भरै छै अपने बंगलोर धेने छी।”

बिस-बिसाइन मन होइत देखि कहलयैन- “छोड़ू, ऐ सभकेँ।”

जेना प्राश्चित भऽ गेल होइन तहिना बजला-

“दस बर्ख पहिने सुतरल पचहीक बरी। एँह भोजक नाक। नाको केना ने बनत, जे दालि तेल-फोरन छौंकसँ उड़ि जाइए, तेकरा जँ नहा-धुआ, मेहीसँ महिया बरी बनौल जाइए ओ केना ने नाक भेल। नाक तक ठेका कऽ खेलौं। थारीपर सँ उठिये ने हुअए, कहुना कऽ उठि घरवारीकेँ पीठ ठोकि जश देलिऐन। एहेन जश जिनगीमे केकरो देनौं ने छेलिऐ।”

दिनेश भायकेँ भँसैत देखि पुछलयैन- “दोसर?”

मकै-लाबा जकाँ हँसैत भरभरेला-

“दोसर खेप अलपुरिया बरीसँ भेँट भेल। गोलगर-गोलगर, फुलल-फुलल। पैछला भोज धक-दे मोन पड़ि गेल। बरीक संग बर। भरिसक तहिना फुलल-फुलाएल अछि। मुदा ले बलैया अँठियाएल रसगुल्ला जकाँ तरमे आँठी बुझि पड़ल। भोजपुरिया लिट्टी जकाँ, मुदा सेहो कहाँ भेल, ओ सुखल जिनगी जीबैए। बड़ हएत तँ ओ जलखै हएत मुदा ई कल्लौ भेल।”

❑

शब्द संख्या: 287, तिथि: 12 मार्च 2014

❑❑❑

❑❑

❑